दैनिक

अमन लेखनी

लखनऊ से प्रकाशित एवं उ.प्र., बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली में प्रसारित

RNI-UPHIN/2014/58471

इंडस्ट्री के सबसे महंगे सिंगर थे किशोर दा

वह रात...

वर्ष : 09 | अंक : 264 | लखनऊ, 28 अगस्त, सोमवार 2023 | पृष्ठ : 08 | मूल्य : 2.00 रुपए

प्रधानमंत्री आज 51,000 युवाओं को सौंपेंगे नियुक्ति पत्र

एजेंसी ■ नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 10 लाख कर्मियों की भर्ती के लिए अभियान रोजगार मेला के तहत सोमवार को 51,000 से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित करेंगे। इस अवसर पर प्रधानमंत्री इन युवाओं को संबोधित भी करेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने रविवार को एक बयान में यह जानकारी दी।पीएमओ के मुताबिक, सोमवार को रोजगार मेला देश भर में 45 स्थानों पर आयोजित किया जाएगा। इस रोजगार मेले में केंद्रीय गृह मंत्रालय केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ), सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ), सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी), असम राइफल्स, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ), भारत तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) और नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) के साथ-साथ दिल्ली पुलिस में कर्मियों की भर्ती कर रहा है।

देशभर से चुने गए नए कर्मी केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत विभिन्न संगठनों में कांस्टेबल (जनरल ड्यूटी), सब-इंस्पेक्टर (जनरल ड्यूटी) और नॉन-जनरल ड्यूटी कैडर पदों जैसे विभिन्न पदों पर शामिल होंगे।सीएपीएफ के साथ-साथ दिल्ली पुलिस को मजबूत करने से इन बलों को आंतरिक सुरक्षा, आतंकवाद का मुकाबला करने, उग्रवाद, वामपंथी उग्रवाद का मुकाबला करने और राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा करने में सहायता करने जैसी अपनी बहुआयामी भूमिका को अधिक प्रभावी ढंग से निभाने में मदद मिलेगी।

खास ख़बर

विश्व सुंदरी कैरोलिना एक दिवसीय यात्रा पर कश्मीर आएंगी

■ नई दिल्ली/श्रीनगर। मौजूदा विश्व सुंदरी कैरोलिना बिलावस्का एक कार्यक्रम के लिए सोमवार को कश्मीर की एक दिवसीय यात्रा पर आएंगी। महिला सशक्तिकरण के लिए काम करने वाली मुंबई की एक संस्था की अध्यक्ष रुबल नेगी के अनुसार, बिलावस्का, मिस वर्ल्ड इंडिया सिनी शेट्टी और मिस वर्ल्ड कैरेबियन एमी पेना सहित अन्य विजेताओं के साथ यहां आएंगी। नेगी ने कहा, अगर धरती पर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यह यहीं है...। और यह कैसे संभव है कि मिस वर्ल्ड यहां आने चूक जाएं। नेगी, रुबल नेगी आर्ट फाउंडेशन एंड स्टूडियो सक्षम की प्रमुख हैं।

कृष्ण जन्मभूमि के पास अवैध निर्माण को गिराने की याचिका पर आज सुनवाई

■ नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में कृष्ण जन्मभूमि के पास कथित रूप से बने अवैध निर्माण को हटाने के लिए इसे ध्वस्त करने के अभियान से संबंधित याचिका पर सोमवार को सुनवाई करेगा। शीर्ष अदालत की वेबसाइट पर अपलोड की गई सोमवार की वाद सूची के अनुसार याचिका पर न्यायमूर्ति अनिरुद्ध बोस, न्यायमूर्ति संजय कुमार और न्यायमूर्ति एसवीएन भट्टी की पीठ सुनवाई करेगी। यह मामला कृष्ण जन्मभूमि के पास की बस्तियां गिराए जाने से संबंधित है।

उच्चतम न्यायालय ने इस मामले में 16 अगस्त को सुनवाई के दौरान रेलवे अधिकारियों के ध्वस्तीकरण अभियान पर 10 दिन के लिए रोक लगा थी। यह अभियान कथित रूप से अवैध निर्माण को हटाने के लिए चलाया गया था।

राजस्थान: कांग्रेस नेता रामेश्वर डूडी को ब्रेन हेमरेज

■ जयपुर। वरिष्ठ कांग्रेस नेता रामेश्वर डूडी को मस्तिष्क में रक्तस्राव (ब्रेन हेमरेज) की समस्या से पीड़ित होने पर रविवार को यहां स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

जरा हट के... बग्गा

एमएसएमई को बचाने के लिए जीएसटी की समान दर लागू करने एवं औद्योगिक केंद्र बनाने की जरूरत : राहुल गांधी

एजेंसी ■ नई दिल्ली

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने ऊटी में चॉकलेट बनाने वाली एक फैक्टरी के हालिया दौरे का वीडियो साझा करते हुए रविवार को कहा कि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को बचाने के लिए वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की समान दर लागू करने और औद्योगिक केंद्र बनाने की जरूरत है। राहुल ने इस महीने की शुरुआत में अपनी लोकसभा सदस्यता बहाल होने के बाद अपने संसदीय क्षेत्र वायनाड जाते समय ऊटी के सबसे प्रसिद्ध ब्रांड में से एक -मोडीज चॉकलेट्स-की फैक्टरी का दौरा किया था।कांग्रेस की ओर से जारी बयान में राहुल के हवाले से कहा गया है, हाल ही में वायनाड जाते समय मुझे ऊटी के सबसे प्रसिद्ध ब्रांड में से एक-मोडीज चॉकलेट्स की फैक्टरी का

दौरा करने का आनंददायक अनुभव मिला। इस छोटे से व्यवसाय के पीछे मुरलीधर राव और उनकी पत्नी स्वाति की उद्यमशीलता की कहानी प्रेरणादायक है। कांग्रेस नेता ने कहा कि दंपति के साथ काम करने वाली महिलाओं की टीम भी उतनी ही शानदार है और 70 महिलाओं की समर्पित टीम द्वारा तैयार की जाने वाली सबसे उत्तम चॉकलेट जैसा स्वाद मैंने कभी नहीं चखा।

उन्होंने कहा, हालांकि, पूरे भारत में अनगिनत अन्य छोटे और मध्यम उद्यमों की तरह मोडीज भी गब्बर सिंह टैक्स का बोझ झेल रही है।

पशु कल्याण बोर्ड का नाम अमृता देवी के नाम पर रखा जाएगा : गहलोत

एजेंसी ■ जयपुर

राजस्थान में पशु कल्याण बोर्ड का नाम बिश्नोई समुदाय की अमृता देवी के नाम पर रखा जाएगा, जिन्होंने 1730 में जोधपुर में खेजड़ी के पेड़ों की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहूति दे दी थी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने शनिवार रात राज्य वन्यजीव बोर्ड की 14वीं बैठक में यह घोषणा की। गहलोत ने कहा कि अमृता देवी का बलिदान हर किसी को पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रेरित करता है। खेजड़ी राजस्थान का राज्य वृक्ष है।

बैठक में गहलोत ने यह भी कहा कि राज्य सरकार केंद्र को पत्र लिखकर आग्रह करेगी कि राज्य में और शेर भेजे जाएं। उन्होंने जोर देकर कहा कि राज्य सरकार की नीतियों के कारण राजस्थान में बाघों की संख्या 100 से अधिक हो गई है।

गहलोत ने कहा कि उनकी सरकार के प्रयासों के कारण 2022 में राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण द्वारा जारी समीक्षा रिपोर्ट में रणथंभौर और सरिस्का बाघ अभयारण्य की रेटिंग में सुधार हुआ है। उन्होंने कहा कि राज्य में मौजूद कुल 29 वन्यजीव संरक्षण अभयारण्यों में से 16 वर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान बनाए गए हैं।

विक्रम लैंडर ने चंद्रमा की सतह पर तापमान में भिन्नता देखी

सतह का तापमान 70 डिग्री सेंटीग्रेड दर्ज

एजेंसी ■ बेंगलुरु

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने चंद्रमा की सतह पर तापमान भिन्नता का एक ग्राफ रविवार को जारी किया और अंतरिक्ष एजेंसी के एक वरिष्ठ वैज्ञानिक ने चंद्रमा पर दर्ज किए गए उच्च तापमान को लेकर आश्चर्य व्यक्त किया। राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी के अनुसार, चंद्र सर्फेस थर्मो फिजिकल एक्सपेरिमेंट (चेस्ट) ने चंद्रमा की सतह के तापीय व्यवहार को समझने के लिए, दक्षिणी ध्रुव के आसपास चंद्रमा की ऊपरी मिट्टी का तापमान प्रालेख मापा।

इसरो ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट में कहा, यहां विक्रम लैंडर पर चेस्ट पेलोड के पहले अवलोकन हैं। चंद्रमा की सतह के तापीय व्यवहार को समझने के लिए, चेस्ट ने ध्रुव के चारों ओर चंद्रमा की ऊपरी मिट्टी के तापमान प्रालेख को मापा। ग्राफिक चित्रण के बारे में इसरो वैज्ञानिक बी. एच. एम. दारुकेशा ने पीटीआई-भाषा से कहा, हम सभी मानते थे कि सतह पर तापमान 20 डिग्री सेंटीग्रेड से 30 डिग्री सेंटीग्रेड

के आसपास हो सकता है, लेकिन यह 70 डिग्री सेंटीग्रेड है। यह आश्चर्यजनक रूप से हमारी अपेक्षा से अधिक है। अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा कि पेलोड में तापमान को मापने का एक यंत्र लगा है जो सतह के नीचे 10 सेंटीमीटर की गहराई तक पहुंचने में सक्षम है। इसरो ने एक बयान में कहा, इसमें 10 तापमान सेंसर लगे हैं। प्रस्तुत ग्राफ विभिन्न गहराइयों पर चंद्र सतहाकरीबी-सतह की तापमान भिन्नता को दर्शाता है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के लिए ए पहले ऐसे प्रालेख हैं। विस्तृत अवलोकन जारी है। वैज्ञानिक दारुकेशा ने कहा, जब हम पृथ्वी के अंदर दो से तीन सेंटीमीटर जाते हैं, तो हमें मुश्किल से दो से तीन डिग्री सेंटीग्रेड भिन्नता दिखाई देती है, जबकि वहां (चंद्रमा) यह लगभग 50 डिग्री सेंटीग्रेड भिन्नता है। यह दिलचस्प बात है। वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कहा कि चंद्रमा की सतह से नीचे तापमान शून्य से 10 डिग्री सेल्सियस नीचे तक गिर जाता है। उन्होंने कहा कि भिन्नता 70 डिग्री सेल्सियस से शून्य से 10 डिग्री सेल्सियस नीचे तक है।

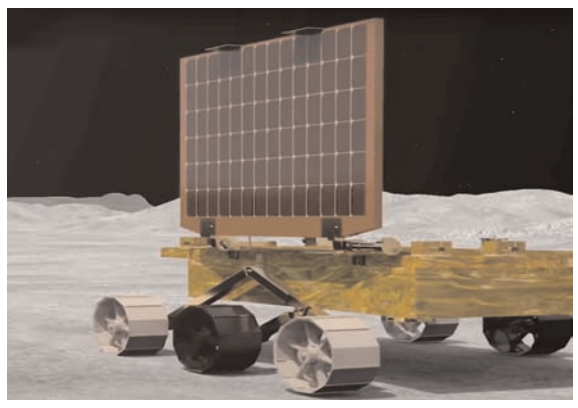

शोभा यात्रा का आह्वान: हरियाणा के नूंह एवं अन्य इलाकों में की गई कड़ी सुरक्षा

नूंह। सर्व जातीय हिंदू महापंचायत की ओर से सोमवार को शोभा यात्रा निकालने का आह्वान किए जाने के मद्देनजर हरियाणा के नूंह और अन्य इलाकों में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। प्राधिकारियों द्वारा अनुमति नहीं दिए जाने के बावजूद यात्रा का आह्वान किया गया है। अधिकारियों ने बताया कि कड़ी निगरानी रखने के लिए अर्धसैनिक बलों सहित सुरक्षाकर्मियों को तैनात किया गया है और अंतरराज्यीय तथा अंतर जिला सीमाओं पर भी सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। नूंह जिला प्रशासन ने एहतियाती कदम उठाते हुए सोमवार को शैक्षणिक संस्थानों और बैंकों को बंद रखने का आदेश दिया है।प्रशासन ने मोबाइल इंटरनेट और बल्क (एक साथ काफी संख्या में संदेश भेजने) एसएमएस सेवाओं को निलंबित कर दिया है। इसने सीआरपीसी की धारा 144 के तहत निषेधाज्ञा भी लगा दी है, जिसके तहत सोमवार तक एक क्षेत्र में चार या अधिक लोगों के इकट्ठा होने पर रोक लगा दी गई है।

विपक्षी गठबंधन की मुंबई बैठक पर सभी की निगाहें, लोगो का अनावरण

एजेंसी ■ नई दिल्ली

अगले साल होने वाले आम चुनाव की सरगर्मी तेज होने के साथ ही सभी की निगाहें विपक्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस (इंडिया) की मुंबई में प्रस्तावित बैठक पर टिकी हैं, जहां गठबंधन का लोगो जारी किए जाने तथा सीट बंटवारे सहित रणनीतिक मामलों पर विचार विमर्श किए जाने की संभावना है। इंडिया की पहली बैठक जून में पटना में हुई थी, जबकि दूसरी बैठक जुलाई मध्य में बेंगलुरु में आयोजित की गई थी। बेंगलुरु में आयोजित सम्मेलन में गठबंधन को इंडिया का नाम दिया गया था।

मुंबई में 31 अगस्त से शुरू होने जा रही दो दिवसीय बैठक से पहले बिहार के मुख्यमंत्री एवं जनता दल (यू) नेता नीतीश कुमार ने रविवार को कहा कि आगामी बैठक के दौरान इंडिया में कुछ और दलों के शामिल होने की संभावना है।

हालांकि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के खिलाफ विभिन्न विपक्षी दलों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कुमार ने इस बात का खुलासा नहीं किया कि कौन से राजनीतिक दल अब इंडिया का हिस्सा बनेंगे। उन्होंने कहा कि इस बैठक में सीट बंटवारे एवं अन्य चुनावी रणनीतियों पर विचार विमर्श किया जाएगा।

कुमार ने पटना में संवाददाताओं से बातचीत में कहा, विपक्षी गठबंधन इंडिया की मुंबई में प्रस्तावित बैठक के दौरान अगले साल होने वाले आम चुनाव के लिए गठबंधन की रणनीति पर विचार विमर्श किया जाएगा। सीट बंटवारे जैसे मुद्दों के अलावा अन्य एजेंडे को भी अंतिम रूप दिया जाएगा। कुछ अन्य राजनीतिक दल गठबंधन में शामिल भी होंगे।

शिवसेना (यूबीटी), राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) और कांग्रेस के गठबंधन महाविकास आघाडी ने इंडिया की बैठक के विभिन्न पहलुओं की योजना के लिए विभिन्न समितियां गठित की हैं। विभिन्न समितियों में तीनों दलों से दो-दो नेता शामिल किए गए हैं औ ए समितियां मीडिया, सोशल मीडिया, ठहरने की व्यवस्था, परिवहन आदि चीजों का ध्यान रखेंगी।

कांग्रेस जहां मीडिया एवं प्रचार का कार्य देखेगी, वहीं राकांपा परिवहन व्यवस्था संभालेगी। शिवसेना को ठहरने की व्यवस्था का जिम्मा दिया गया है। सूत्रों ने बताया कि ग्रैंड हयात होटल में 200 से अधिक कमरे बुक किए गए हैं।

अमित शाह पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद की बैठक की अध्यक्षता करेंगे

यौन उत्पीड़न और बलात्कार के मामलों समेत कई मुद्दों पर होगी चचा

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह सोमवार को गाँधीनगर में पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद की 26वीं बैठक की अध्यक्षता करेंगे, जिसमें यौन उत्पीड़न और बलात्कार के मामलों की त्वरित जांच तथा बुनियादी ढांचा और पर्यावरण से जुड़े मुद्दों सहित कई विषयों पर चर्चा होने की संभावना है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद में गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, तथा दादरा और नगर हवेली, दमन एवं दीव संघ शासित प्रदेश शामिल हैं। अधिकारियों ने बताया कि सदस्य राज्यों के मुख्यमंत्री और संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासक, मंत्री, मुख्य सचिव, सलाहकार और अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा केन्द्रीय गृह सचिव सहित केन्द्र के अन्य वरिष्ठ अधिकारी बैठक में भाग लेंगे। बैठक में, बच्चों व महिलाओं के यौन उत्पीड़न और दुष्कर्म जैसे मामलों की शीघ्र जांच, बलात्कार और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम के मामलों के शीघ्र निपटारे के लिए त्वरित विशेष अदालतों के क्रियान्वयन पर चर्चा होने की संभावना है। बैठक में प्रत्येक गांव में पांच किलोमीटर के दायरे में बैंकों/भारतीय डाक भुगतान बैंक की शाखाएं खोलने, पोषण अभियान के माध्यम से बच्चों में कुपोषण दूर करना, स्कूल की पढ़ाई बीच में ही छोड़ने वाले बच्चों की संख्या में कमी लाना, आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना में सरकारी अस्पतालों की भागीदारी और राष्ट्रीय स्तर के सामान्य हित के मुद्दों पर भी चर्चा होगी।

उन्होंने बताया कि क्षेत्रीय परिषद की बैठक में बुनियादी ढांचे, सड़क परिवहन, बिजली, उद्योग और परस्पर हित के अन्य मुद्दों पर भी चर्चा होगी। स्थापित प्रक्रिया और परिपाटी के अनुसार, बैठक से पहले परिषद की एक स्थायी समिति में परिषद के समक्ष रखे जाने वाले एजेंडा की जांच की जाती है और उनकी प्राथमिकता तय की जाती है। क्षेत्रीय परिषदें एक या अधिक राज्यों को प्रभावित करने वाले मुद्दों या केन्द्र और राज्यों के बीच के मुद्दों पर तय रूपरेखा के तहत चर्चा के लिए एक मंच प्रदान करती हैं। अधिकारियों ने कहा कि पिछले नौ साल में क्षेत्रीय परिषदों और इसकी स्थायी समितियों की बैठकों की संख्या में तीन गुना वृद्धि हुई है।

ग्लोबल साउथ लोकतांत्रिक, विविध पुनः वैश्वीकरण चाहता है : जयशंकर

नयी दिल्ली। ग्लोबल साउथ के मुद्दों को उठाने की बात आती है तो भारत ने हमेशा इसके लिए आगे बढ़कर मुद्दा उठाया है और इसे लेकर आवाज बुलंद की है। ये बात विदेश मंत्री एस जयशंकर ने दी है। रविवार को भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) द्वारा आयोजित बी20 शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने ये बात कही है। उन्होंने पहले से अधिक विविध और अधिक लोकतांत्रिक पुनः वैश्वीकरण की जोरदार वकालत की है। उन्होंने कहा कि ग्लोबल साउथ अब कुछ आपूर्तिकताओं की दया पर निर्भर नहीं रह सकता है। इस संबंध में एस जयशंकर ने कहा कि आज दुनिया देश के प्रयोगों, विस्तार, तैनाती, इनोवेशन और सफलता को एक साथ देख रही है। उन्होंने कहा कि ग्लोबल साउथ उत्पादक बनने के बजाय काफी हद तक केवल उपभोक्ता बनकर रह गया है और वह आर्थिक बदलाव का पूरा लाभ नहीं उठा सका।

दलित युवक की पीट-पीटकर हत्या, आठ लोग गिरफ्तार, गरमाई राजनीति

सागर। मध्य प्रदेश के सागर जिले में पुरानी रंजिश के चलते एक दलित युवक की कुछ लोगों ने कथित तौर पर पीट-पीटकर हत्या कर दी। इस मामले में पुलिस ने अब तक आठ लोगों को गिरफ्तार किया है। एक पुलिस अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी। विपक्षी दल कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने बृहस्पतिवार को खुरई थाना क्षेत्र में हुई इस घटना को लेकर राज्य की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार पर निशाना साधा। हालांकि, भाजपा ने कहा कि मामले में तुरंत कार्रवाई की गई। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एएसपी) संजय उइके ने बताया, खुरई थाना क्षेत्र में एक युवक का पुरानी दुश्मनी को लेकर कुछ लोगों से विवाद हो गया। दूसरे पक्ष द्वारा उसके साथ मारपीट की गई। फिर जब उसे अस्पताल ले जाया गया, तो चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।ह्व वहीं, खुरई ग्रामीण थाने के प्रभारी नितिन पाल ने कहा, मरने वाले युवक की पहचान सागर जिले के बरोदिया नैनागिर गांव निवासी नितिन अहिरवार (18) के रूप में हुई है। इस मामले में कुल 13 आरोपी हैं, जिनमें से नौ नामजद में से आठ को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उनके खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 302 (हत्या) एवं अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है।

घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, मध्य प्रदेश के सागर जिले में एक दलित युवक की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। गुंडों ने उसकी मां को भी नहीं बख्शा। सागर में संत रविदास मंदिर बनवाने का ढोंग रचने वाले प्रधानमंत्री (नरेन्द्र मोदी) जी मध्य प्रदेश में दलितों और आदिवासियों के लगातार होते उत्पीड़न एवं अन्याय पर चुप्पी बनाए रखते हैं। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री (शिवराज सिंह चौहान) केवल कैमरे के सामने वंचितों के पैर धोकर अपना गुनाह छिपाने की कोशिश करते हैं। उन्होंने कहा, भाजपा ने मध्य प्रदेश को दलित अत्याचार की प्रयोगशाला बना रखा है। भाजपा शासित मध्य प्रदेश में दलितों के खिलाफ अपराध की दर सबसे ज्यादा है, यह राष्ट्रीय औसत से भी तीन गुना है। खरगे ने कहा, मोदी जी, इस बार मध्य प्रदेश की जनता भाजपा के झांसे में नहीं आने वाली है। समाज के वंचित व शोषित वर्ग को तड़पाने-तरसाने का जवाब आपको कुछ महीने बाद (मध्य प्रदेश में इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव में) मिल जाएगा। भाजपा की विदाई निश्चित है।

घटना स्कूल प्रशासन को घटना के सिलसिले में कारण बताओ नोटिस जारी

छात्र को थप्पड़ लगवाने का मामला, बदलेगा पीड़ित का स्कूल

एजेंसी ■ लखनऊ

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर के एक निजी स्कूल में शिक्षिका द्वारा सहपाठियों से थप्पड़ लगवाए जाने की घटना के पीड़ित कक्षा दो के छात्र का गांव के ही सरकारी प्राथमिक स्कूल में सोमवार को दाखिला कराए जाने की संभावना है। बेसिक शिक्षा अधिकारी (बीएसए) शुभम शुक्ला ने रविवार को पीटीआई-भाषा को बताया,"पीड़ति छात्र के पिता नहीं चाहते कि उनका बेटा नेहा पब्लिक स्कूल में अपनी पढ़ाई जारी रखे। खंड

शिक्षा अधिकारी ने छात्र से बात की थी जिसमें उसने गांव के ही सरकारी प्राइमरी स्कूल में पढ़ने की इच्छा जाहिर की थी लिहाजा सोमवार को प्राइमरी स्कूल में उसका दाखिला कराया जाएगा, बशर्ते उसका परिवार ऐसा करने को तैयार हो। शुक्ला ने यह भी कहा कि खंड शिक्षा अधिकारी सोमवार को खब्बूपुर गांव के नेहा पब्लिक स्कूल जाएंगे और जो बच्चे नेहा पब्लिक स्कूल में पढ़ाई के लिए आना चाहते हैं उनके लिए व्यवस्था की जाएगी क्योंकि वे पहले से ही शुल्क का भुगतान कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि स्कूल प्रशासन को घटना के सिलसिले में कारण बताओ नोटिस जारी कर सोमवार तक के लिए मोहलत दी गई है। उत्तर नहीं देने पर स्कूल की मान्यता खत्म करने की चेतावनी दी गई है। गौरतलब है कि गत शुक्रवार को मुजफ्फरनगर के खब्बूपुर गांव में स्थित नेहा पब्लिक स्कूल का वीडियो वायरल हुआ था जिसमें कथित रूप से होमवर्क नहीं करने पर शिक्षिका तृप्ता त्यागी को दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले एक छात्र को उसके सहपाठियों से बुला-बुलाकर थप्पड़ लगवाते देखा गया था। वीडियो वायरल होने के बाद राजनीतिक हलकों समेत तमाम वर्गों ने इसकी कड़ी निंदा की थी।

डॉ. राजेश्वर सिंह ने तेलंगाना के नरसापुर में किया विजय का शंखनाद, भव्य रैली में उमड़ा जनसैलाब

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। तेलंगाना की मेडक जिले के नरसापुर में रविवार को अनोखा नजारा देखने को मिला। यूपी की राजधानी लखनऊ के सरोजनीनगर से भाजपा विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह के नेतृत्व में नरसापुर विधानसभा क्षेत्र में ऐतिहासिक रैली का आयोजन किया गया। नरसापुर के साईं कृष्णा फंक्शन हॉल से आरंभ हुई इस भव्य रैली में जनसैलाब उमड़ पड़ा। बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं क्षेत्रीय जनता उपस्थित रही। इस रैली के माध्यम से डॉ. राजेश्वर सिंह ने भाजपा की विजय का शंखनाद किया।

22 किमी से अधिक लंबी रैली की भव्यता देखते ही बन रही थी। कड़ी धूप और भीषण गर्मी में भी ऊर्जामयी कार्यकताओं का जोश बिल्कुल भी कम नहीं हुआ। क्या बच्चे, क्या बूढ़े, क्या जवान, इस रैली में शामिल हर किसी का उत्साह चरम पर था। भाजपा और पीएम मोदी के जिंदाबाद के नारे लगाती हुई यह रैली जहां जहां से गुजरी, अपनी छाप छोड़ती रही।

भव्य रैली का समापन मंडल हतनूरा के ग्राम पंचायत मधुरा स्थित दत्तात्रेय मंदिर में भगवान दत्तात्रेय के दर्शन-पूजन कर किया गया। यहां डॉ. राजेश्वर सिंह ने मंदिर में सुविधाओं के प्रसार हेतु अंशदान अर्पित किया। उन्होंने कहा कि कार्यकताओं का उत्साह अप्रतिम है, जनता का अभूतपूर्व समर्थन इस बात का साक्षी है कि इस बार तेलंगाना में कमल खिलना तय है।

एमएलए प्रवास पर तेलंगाना पहुंचे डॉ. राजेश्वर सिंह राज्य के मेडक जिले की नरसापुर विधानसभा क्षेत्र में लगातार कार्यकताओं में उत्साह का संचार कर रहे हैं, साथ ही जनता के बीच जाकर केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं व नीतियों को भी पहुंचा रहे हैं।

प्रेस कांफ्रेंस कर केसीआर को घेरा–

रैली से पहले डॉ. राजेश्वर सिंह ने प्रेस वार्ता भी की। इस दौरान उन्होंने केसीआर और कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा साथ ही केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं का बखान भी किया। उन्होंने कहा कि बीआरएस सरकार की परिवारवाद व तुष्टिकरण की राजनीति और भ्रष्टाचार ने तेलंगाना के विकास को रिवर्स गियर में डाल दिया है। उनका जनता या राज्य की प्रगति से कोई सरोकार नहीं है।

केसीआर ने नौजवानों के विश्वास से छल किया, राज्य लोकसेवा आयोग के पर्चे लीक हुए, मेडिकल सीट आवंटन में घोटाला हुआ। हर खेत तक पानी पहुचांने के नाम पर अन्नदाताओं के साथ धोखा हुआ, धान की खरीद में घोटाला हुआ, किसानों को केंद्र सरकार की फसल बीमा से भी वंचित रखा गया। बीआरएस सरकार में कानून व्यवस्था ध्वस्त है, हैदराबाद साइबर सिटी है लेकिन देश का 1/5ईं साइबर क्राइम यहीं हो रहे हैं। भारत में 52 हजार साइबर क्राइम होते है, इसमें से 12 हजार तेलंगाना में ही हो रहे हैं। महिलाओं-बच्चों-वृद्धों के विरुद्ध अपराध निरंतर बढ़ रहे हैं। महिलाओं के विरुद्ध अपराध 17 हजार से बढ़कर 20 हजार तो बच्चों के विरुद्ध प्रतिदिन 17 क्राइम हो रहे हैं।

केसीआर सरकार और कांग्रेस पार्टी को एक ही सिक्के के दो पहलु बताते हुए डॉ. राजेश्वर सिंह ने कहा कि दोनों की पार्टियां जो परिवारवाद, तुष्टिकरण और भ्रष्टाचार से लिप्त हैं, तेलंगाना की जनता ने इनकी असली नीयत को भाप लिया है, इससे इतर भाजपा की विकास और सुशासन की नीतियों को पहचान लिया है और अबकी बार तेलंगाना में भाजपा सरकार चुनने का मन बना लिया है। पीमए मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का उल्लेख करते हुए डॉ. राजेश्वर सिंह ने कहा कि केंद्र सरकार ने तेलंगाना में 2500 किमी राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण करवाया, 1.95 करोड़ लोगों को निःशुल्क राशन का लाभ दिया, 40 लाख किसान भाइयों को सम्मान निधि प्रदान की। इस दौरान नगर अध्यक्ष मुरली यादव, विधानसभा संयोजक वी. मल्लेश गौड़, ओबीसी मोर्चा के जिला अध्यक्ष रमेश गौड़, मंडल अध्यक्ष रवि गौड़, रघुवीर रेड्डी सहित मंडल के सभी नेता, मंडल प्रभारी, शक्ति केंद्र के प्रभारी, भाजपा के विभिन्न मोर्चा के प्रभारी, बूथ अध्यक्ष सहित पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी, कार्यकर्ता के साथ बड़ी संख्या में जनता भी उपस्थित रही।

श्रीराम क्षत्रिय सेना के जयंत सिंह रैकवार व वीरेंद्र सिंह सिकरवार के निधन पर दो मिनट का मौन रखकर शोक व्यक्त किया

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। श्रीराम क्षत्रिय सेना की बैठक लोयोला इंटरनेशनल स्कूल, बादशाह नगर, अयोध्या रोड, लखनऊ में आयोजित की गयी। बैठक के मुख्य अतिथि संगठन के संस्थापक /राष्ट्रीय अध्यक्ष जमुना बक्स सिंह रैकवार ₹निर्भयर₹ जी ने प्रत्येक जनपद में संगठन की इकाई बनाने व प्रत्येक महीने संगठन की बैठक आयोजित करने को कहा। बैठक में राष्ट्रीय प्रवक्ता अध्यात्म सिंह एडवोकेट ,राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष योगेंद्र बहादुर सिंह चौहान, प्रदेश उपाध्यक्ष रोहित सिंह तोमर एडवोकेट ,प्रदेश महामंत्री संदीप सिंह रैकवार, प्रदेश मंत्री मुसाफिर सिंह, प्रदेश मंत्री विनय सिंह चौहान, प्रदेश संगठन मंत्री गौरव सिंह रैकवार, प्रदेश प्रवक्ता राकेश प्रताप सिंह एडवोकेट, जिला संरक्षक लखनऊ अनिल सिंह गहरवार, जिला अध्यक्ष उन्नाव संजय सिंह चौहान ,जिला अध्यक्ष बाराबंकी राज किशोर सिंह तोमर ₹गुड्डू₹, जिला अध्यक्ष लखनऊ विजय सिंह धाकरे, जिला महामंत्री लखनऊ शैलेन्द्र सिंह चौहान, जिला प्रवक्ता हेमेंद्र प्रताप सिंह चौहान ,जिला मंत्री सम्राट सिंह, जिला महामंत्री राजेश सिंह श्रीनेत, जिला मंत्री राजेश सिंह सोलंकी, जिला संगठन मंत्री गुलाब सिंह सोमवंशी, जिला उपाध्यक्ष बाराबंकी धीरेन्द्र सिंह जनवार , जिला संगठन मन्त्री सीतापुर बलराम सिंह ,अशोक सिंह विशेन ,दया शंकर सिंह आदि उपस्थित हुए। बैठक की अध्यक्षता कॉलेज के प्रबंधक एम पी सिंह परिहार जी ने की। विगत दिनों प्रदेश मंत्री ,उत्तर प्रदेश श्रीराम क्षत्रिय सेना जयंत सिंह रैकवार व जिला संरक्षक मुरैना वीरेंद्र सिंह सिकरवार का स्वर्गवास हो जाने के कारण दो मिनट का मौन रखकर सभी ने शोक व्यक्त किया।

रेलवे स्टेशन पर ट्रेन की टूरिस्ट कोच पर आग की घटना के मामले में घायलों के साथ मृतको के शवों को लाया गया

अमन लेखनी समाचार

सरोजनीनगर-लखनऊ। लखनऊ से चेन्नई जा रही साप्ताहिक ट्रेन के टूरिस्ट कोच में शनिवार की सुबह तमिलनाडु के मदुरै रेलवे स्टेशन पर आग लग गई। इस हादसे में नौ यात्रियों की मौत हो गई और 20 से अधिक घायल हो गए। इस हदासे के घायलों के साथ ही मृतको के शवों को विमान से राजधानी के अमौसी एयरपोर्ट लाया गया। इस दौरान उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक व जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगावार तथा सीतापुर के दो विधायक भी मौजूद रहे। राज्य सरकार द्वारा घायलों व मृतको के शवों को उनके घर तक पहुंचाने की व्यवस्था की थी। टूरिस्ट स्पेशल कोच को 17 अगस्त को लखनऊ से रवाना किया गया था। कोच में 72 में से 61 लोगों के लिए सीतापुर की भसीन टूर एंड ट्रैवेल्स ने टिकट बुक कराए थे। बाकी यात्री लखनऊ और आसपास के स्टेशनों से सवार हुए थे। ये सभी रामेश्वरम की यात्रा पर गए थे। रेलवे के अधिकारियों के अनुसार, इस कोच को नागरक्वायल जंक्शन पर 25 अगस्त को ट्रेन संख्या 16730 (मदुरै-पुनालुर एक्सप्रेस) में जोड़ा गया था। शनिवार तड़के 0347 बजे ट्रेन के मदुरै स्टेशन पहुंचने पर कोच को अलग कर दूसरी लाइन पर खड़ा कर दिया गया। इस दौरान कुछ लोग ट्रेन में अवैध रूप से ले जाए गए एलपीजी गैस सिलेंडर और चूल्हे से चाय-नाश्ता बनाने लगे तभी सिलेंडर फट जाने से कोच में आग लग गई। इस कोच को ट्रेन संख्या 16824 से रविवार को चेन्नई जाना था और 28 अगस्त को लखनऊ वापस आना था।

इनसेट– इन मृतको के शव लखनऊ पहुंचे

इस हादसे मे अपनी जान गवाने वाले नौ यात्रियों के शवों के साथ ही कोच हादसे में जिंदा बचे 14 यात्री भी राजधानी के चौधरी चरण सिंह अन्तराष्ट्रीय एयरपोर्ट लाया गया। मृतको में मृतकों में हरदोई के परमेश्वर कुमार गुप्ता (55), सीतापुर के शत्रु दमन सिंह (65), अंकुल कश्यप (36), दीपक कश्यप (20), हरीश कुमार भसीन (60), मिथिलेश कुमारी (62), लखीमपुर-खीरी की शांति देवी वर्मा (57) और लखनऊ की हिमानी बंसल (22) व मनोरमा अग्रवाल (82) शामिल हैं।

इनसेट–पीड़ितों को हर संभव मदद कर रही सरकार

इस मौके पर उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि इस कठिन घड़ी में प्रदेश सरकार इस हादसे के पीड़ितों के साथ खड़ी है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा घायलों को उनके घर तक पहुंचाने के लिए गाड़ियों के साथ ही शवों को एम्बूलेंस के माध्यम से पहुंचाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि रेलवे ने मृतक आश्रितों के लिए 10-10 लाख और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दो-दो लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने का ऐलान किया है। वहीं तमिलनाडु के सीएम स्टालिन ने मृतक आश्रितों को तीन-तीन लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है। रेलवे ने घटना की जांच के आदेश दे दिए हैं।

सीएम का सभी जिलों के डीएम को सख्त आदेश, अब यूपी की सड़कों पर नजर नहीं आने चाहिए निराश्रित गोवंश

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ ब्यूरो। उत्तर प्रदेश की सड़कों पर अब निराश्रित गोवंश भटकते नजर नहीं आने चाहिए। मुख्यमंत्री योगी ने गोवंशों की सुरक्षा और देखभाल के लिए कड़ा कदम उठाया है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के सभी जिलों के जिलाधिकारियों को ऐसा सख्त आदेश देते हुए निराश्रित गोवंश को पहले से संचालित गो सरंक्षण केंद्रों तक पहुंचवाने, उनके लिए हरे चारे की व्यवस्था सुनिश्चित कराने और समय-समय पर स्वास्थ्य प्रशिक्षण के लिए कड़े आदेश दिए हैं। उन्होंने सूबे के सभी जिलाधिकारियों को इसे अपनी प्राथमिकता सूची में शामिल करते हुए आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के लिए भी कहा है।

अतिरिक्त गो आश्रय स्थल बढ़ाया जाए

मुख्यमंत्री योगी ने उच्च स्तरीय बैठक में अधिकारियों को निराश्रित गोवंश की सुरक्षा और देखभाल का उचित प्रबंधन सुनिश्चित करने के निर्देश दिये हैं। इसके लिए उन्होंने अधिकारियों को प्रदेश में गो आश्रय स्थल बढ़ाने को कहा है।

वर्तमान में प्रदेश भर में निराश्रित गोवंश के संरक्षण के लिए 6889 आश्रय स्थल संचालित हैं। जिसमें 6346 ग्रामीण और 543 शहरी क्षेत्रों में हैं। इन आश्रय स्थलों में वर्तमान में 1182949 निराश्रित गोवंश की देखभाल की जा रही है। सीएम योगी ने विभाग को प्रदेश में गो आश्रय स्थल बढ़ाने के लिए कार्ययोजना तैयार कर प्रस्तुत करने का आदेश दिया है ताकि इसे कैबिनेट में शामिल कर बजट जारी किया जा सके। इसके साथ ही उन्होंने गोवंश आश्रय स्थलों के वित्तीय एवं प्रशासनिक प्रबंधन मजबूत करने को भी कहा है, जिससे आश्रय स्थल की स्थिति में सुधार आ सके। सीएम योगी ने हरे चारे की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए गोचर भूमि की जियो टैगिंग एवं कब्जा मुक्त करा कर नेपियर घास लगवाने को कहा है।

पोर्टल पर अपडेट होगी आश्रय स्थल की हर जानकारी

अपर मुख्य सचिव पशुधन डॉ. रजनीश दुबे ने बताया कि अधिक से अधिक निराश्रित गोवंश की गो आश्रय स्थलों पर रहने की उचित व्यवस्था की जा रही है। इसके तहत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के टूटे हुए कैटल शेड की मरम्मत कराने के साथ खडंजा इंटरलॉकिंग की व्यवस्था की जा रही है। वहीं यहां काम करने वाले मजदूरों के मानदेय बढ़ाने पर भी विचार किया जा रहा है। साथ ही आश्रय स्थल से संबंधित सभी जानकारियों को पोर्टल पर अपडेट करने पर जोर दिया जा रहा है ताकि यह पता चल सके कि किस गो आश्रय स्थल पर कितने निराश्रित गोवंश को संरक्षित किया गया है और वहां पर और कितने गो वंश को संरक्षित किया जा सकता है। इतना ही नहीं जिलाधिकारी द्वारा समय-समय पर आश्रय स्थल का निरीक्षण कर वास्तविक स्थिति की जांच की जाएगी। वहीं अधिकारियों द्वारा ऐसे हॉट स्पॉट का भी चिन्हांकन होगा जो निराश्रित गोवंश के लिए अत्यंत जोखिम वाले हैं। इनमें नगरीय मंडी और नदी तट आदि शामिल हैं।

मुख्यमंत्री के जनता दर्शन में आए 100 से अधिक फरियादी

जन शिकायतों का तत्काल निस्तारण करें अधिकारी योगी

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ, ब्यूरो। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जनसमस्याओं का निस्तारण हमारी प्राथमिकता है। रविवार को सीएम के सरकारी आवास पर जनता दर्शन में मुख्यमंत्री ने प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए लगभग 100 से अधिक फरियादियों से मिल कर उनकी शिकायतें सुनी। उन्होंने हर किसी को आश्वस्त किया कि सबकी समस्या का निस्तारण कराना उनकी प्रतिबद्धता है। प्रार्थना पत्रों को संबंधित अधिकारियों को संदर्भित करते हुए त्वरित और संतुष्टिपरक निस्तारण का निर्देश देने के साथ मुख्यमंत्री ने आमजन को भरोसा दिलाया कि सरकार हर पीड़ित की समस्या का समाधान कराने के लिए दृढ़ संकल्पित है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि हर पीड़ित के साथ संवेदनशील व्यवहार अपनाते हुए उसकी मदद की जाए। किसी की जमीन पर कब्जा करने वाले, कमजोरों को परेशान करने वाले किसी भी सूरत में बख्शे न जाएं। मुख्यमंत्री के समक्ष जनता दर्शन में कई लोग इलाज के लिए आर्थिक सहायता की गुहार लेकर भी पहुंचे थे। मुख्यमंत्री ने उन्हें भी भरोसा दिलाया कि सरकार इलाज के लिए भरपूर मदद करेगी।

बच्चों में वैज्ञानिक मनोवृत्ति का विकास करेगी योगी सरकार

साढ़े सत्रह करोड़ खर्च कर यूपी में राष्ट्रीय अविष्कार अभियान को बढ़ावा, उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों पर फोकस

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ ब्यूरो। उच्च प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों में जिज्ञासा आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने, वैज्ञानिक मनोवृत्ति का विकास करने, प्रयोग के अवसर उपलब्ध कराने तथा विज्ञान, गणित और प्रौद्योगिकी विषय को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से योगी सरकार राष्ट्रीय अविष्कार अभियान के तहत उत्तर प्रदेश में ज्ञान विज्ञान की विभिन्न गतिविधियों को शुरू करने का निर्णय लिया है। इसके तहत सरकार की ओर से जनपद और विकास खंड स्तर पर विज्ञान से संबंधित गतिविधियों के संचालन के निर्देश दिए गए हैं। इन गतिविधियों में ब्लॉक स्तर पर साइंस क्विज प्रतियोगिता, जिला स्तर पर विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन, उत्तर प्रदेश के अंदर और प्रदेश के बाहर बच्चों की एक्सपोजर विजिट जैसी गतिविधियों को सुनिश्चित किया जाना है। इन कार्यक्रमों के संचालन के लिए सरकार ने वार्षिक कार्ययोजना एवं बजट 2023-24 में 17.46 करोड़ की धनराशि स्वीकृत की है, जिसे जनपदों को जारी किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि 'राष्ट्रीय आविष्कार अभियान' भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित किया जा रहा है। योगी सरकार इसी कार्यक्रम को उत्तर प्रदेश में आगे बढ़ा रही है।

ब्लॉक स्तर पर होगा क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

राज्य परियोजना निदेशक विजय किरण आनंद द्वारा सभी जनपदों के बेसिक शिक्षा अधिकारियों को गतिविधियों के संचालन से संबंधित कार्ययोजना और निर्देश जारी किए हैं। इसके अनुसार प्रधानाध्यापक एवं विज्ञान व गणित विषय के शिक्षकों द्वारा परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए विज्ञान विषय से संबंधित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन कराया जाएगा। प्रत्येक उच्च प्राथमिक विद्यालयों के उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कक्षा-6 से 1, कक्षा 7 से 2 एवं कक्षा-8 से 3 बच्चों की ब्लॉक स्तरीय क्विज प्रतियोगिता में प्रतिभागिता सुनिश्चित कराई जाएगी। यदि किसी कक्षा में बच्चों का प्रदर्शन संतोषजनक नहीं है तो ऐसी परिस्थिति में प्रधानाध्यापक द्वारा किन्हीं 2 कक्षाओं से अधिकतम 6 बच्चों का चयन किया जाएगा। विकास खंड स्तर पर खंड शिक्षा अधिकारी के निर्देशन में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन संबंधित ब्लॉक के एआरपी, उच्च प्राथमिक एवं कंपोजिट विद्यालय (कक्षा 6 से 8) के प्रधानाध्यापकों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए कराया जाएगा। बच्चों की कापी जांचने के लिए आवश्यकतानुसार विज्ञान एवं गणित के शिक्षकों को नियोजित किया जाएगा। ब्लॉक स्तर पर क्विज प्रतियोगिता के लिए स्वीकृत कुल धनराशि में से 10 प्रतिशत की धनराशि उन बच्चों को दी जाएगी, जो जनपद स्तर पर विज्ञान प्रदर्शनी में प्रतिभाग करेंगे।

जिला स्तर पर लगाई जाएगी विज्ञान प्रदर्शनी

जनपद स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में कुल 100 बच्चों की प्रतिभागिता सुनिश्चित की जाएगी। विज्ञान पर आधारित समसामयिक विषयों पर मॉडल बनाने के लिए बच्चों को प्रेरित किया जाएगा तथा बच्चों को विज्ञान के शिक्षक, एआरपी द्वारा अपेक्षित सहयोग प्रदान किया जाएगा। जनपद स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में छात्र-छात्राओं द्वारा प्रदर्शित मॉडल्स में से विशेषज्ञों की निर्णायक समिति द्वारा उत्कृष्टता के आधार पर 10 सर्वश्रेष्ठ मॉडल्स का चयन किया जाएगा तथा उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा। इसके लिए जनपद स्तर पर डायट प्राचार्य की अध्यक्षता में समिति का गठन किया जाएगा। जनपद स्तर पर आयोजित की जाने वाली विज्ञान प्रदर्शनी में प्रतिभाग करने वाले सर्वश्रेष्ठ 10 बच्चों को प्रमाण पत्र एवं विज्ञान विषय से संबंधित पुस्तकों का सेट, विज्ञान विषय से संबंधित उपकरण, स्मृति चिन्ह, विज्ञान किट, माइक्रोस्कोप, नगद पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। राज्य स्तरीय एक्सपोजर विजिट के लिए प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों की सूची मुख्य विकास अधिकारी, जिलाधिकारी के अनुमोदन के बाद राज्य परियोजना कार्यालय को प्रेषित की जाएगी।

बच्चों के एक्सपोजर विजिट की भी होगी व्यवस्था

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत खंड शिक्षा अधिकारी के नेतृत्व में प्रति विकास खंड चयनित 100 बच्चों का एक दिवसीय एक्सपोजर विजिट कराया जाएगा। बच्चों को चिन्हित करने में यह ध्यान रखा जाएगा कि बालक-बालिका एवं विभिन्न वर्ग के बच्चों को समान अवसर प्राप्त हो सके। जनपद स्तर पर आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में प्रतिनिधित्व करने वाले बच्चों को एक्सपोजर विजिट में अवश्य सम्मिलित किया जाएगा। एक्सपोजर विजिट में बच्चों के साथ विज्ञान एवं गणित के 2 शिक्षक या प्रधानाध्यापक, संबंधित विकास खंड के विज्ञान एवं गणित के एआरपी तथा संबंधित विकास खंड के खंड शिक्षा अधिकारी द्वारा भ्रमण में प्रतिभागिता सुनिश्चित की जाएगी। एक्सपोजर विजिट में कम से कम दो महिला शिक्षिका अथवा एआरपी को अवश्य सम्मिलित किया जाएगा, ताकि छात्राओं को कोई असुविधा न हो। एक्सपोजर विजिट के लिए जनपद के अंदर अथवा निकट के जनपद, मण्डल में अवस्थित प्रतिष्ठान जैसे चीनी मिल, तारामंडल, न्यूज पेपर प्रिन्टिंग प्रेस,

साहियतकर कवि अवधेश बहादुर सिंह की "स्मृति कलश" कविता संग्रह की चौह और हो रही प्रशंसा, हिंदी अवधी भाषा को मिलेगा बढ़ावा

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ/रायबरेली। देश दुनिया में हिंदी को बढ़ाने में बहुत से साहित्यकार कवियों ने अपने अपने मध्यम से हमेशा हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। आज के दौर में भी बहुत से लोग हिंदी को बढ़ावा दे रहे है उत्तर प्रदेश के जनपद रायबरेली निवासी साहित्यकार कवि अवधेश बहादुर सिंह का हिंदी प्रेम, प्रकृति प्रेम, साहित्य प्रेम के कारण हिंदी को बढ़ावा मिल रहा है। साहित्यकार कवि अवधेश बहादुर सिंह की हिंदी अवधी भाषा में कई काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुकी है। अवधेश बहादुर सिंह की स्मृति कलाशनाम से कविता संग्रह में लिखे कई गीत में उनकी हिंदी प्रेम प्रकृति प्रेम की झलक दिखाई देती है। यही नहीं रायबरेली के आस पास के छात्र छात्राओं को शिक्षित करने में अवधेश बहादुर सिंह का योगदान की जितनी प्रशंसा की जाए शायद कम हो होगी। इनके विद्यालय में आर्थिक रूप से कमजोर छात्र छात्राओं, दिव्यांग बच्चो को निशुल्क शिक्षित करने का काम किया जा रहा है।

रायबरेली के साहित्यकार कवि अवधेश बहादुर सिंह की आज पूरे में एक अलग पहचान बन चुकी है। प्रकृति प्रेमी श्री सिंह का मानना है कि इंसान प्रकृति से प्यार करने लगता है तब ये पेड़ पशु पक्षी आपसे बात करने लगते है। एक ऐसा एहसास जो आपको महसूस होगा उससे आप खुद को गौरवान्वित महसूस करेंगे। साहियतकार अवधेश बहादुर सिंह अपनी कामयाबी के पीछे सबसे बड़ा योगदान अपनी माता पिता को देते है। अपने पिता के नाम से कई विद्यालय बनवाए जिसमे उनके माता पिता के प्रति सम्मान स्नेह की झलक दिखाई देती है यही सम्मान उनकी सभी काव्य संग्रह में दिखाई पड़ती है।

अवधेश बहादुर सिंह रायबरेली जनपद के एक काफी संघर्षरत परिवार महावीर सिंह के यहां हुआ। 1988 में उनकी हत्या कर दी गई उनके पांच बेटे थे सभी छोटे थे पढ़ाई और सभी का परवरिश की जिम्मेदारी उनकी माता के ऊपर आया। जिसे बहुत प्यार दुलार के साथ कड़े संघर्ष करके सभी को पढ़ाया लिखाया संस्कारी बनाया। सभी गरीब की मदद करने का आशीर्वाद दिया। माता के उन दिनों के संघर्ष को यादकर साहितकार की आंख भर आती है लेकिन प्रदर्शित नही होने देते है। लेकिन आज उनकी कामयाबी को देखने वाली वो नही है जिनके संघर्ष से आज इस मुकाम पर पहुंचे। जब किसी चीज को पाने के लिए सब्र करना पड़ता था आज मुंह से निकलते ही सामने होता है उन संघर्ष के दिनो मे माता के संघर्षों को यादकार कहीं न कहीं उनके आज होने का ये सब सुख देखने का एक साहितकर के दिल में एक टीस दबी दबी सी दिखाई देती है।

रायबरेली सहित प्रदेश में पंचवटी आवास राजनीतिक बड़ा घराना बन चुका है। जिले की लगभग सभी राजनीतिक पदो पर बिना इनकी मर्जी के कोई राजनीतिक बड़ा पद नही पा सका इनके सभी भाई कोई न कोई राजनीति प्रतिष्ठित पद पर विराजमान है। बड़ा भाई दिनेश प्रताप सिंह प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार उद्यान विभाग देख रहे है। भाजपा के संभावित लोक सभा प्रत्यासी भी होने ऐसा कयास लगाया जा रहा है। इस महान साहित्यकार कवि अवधेश बहादुर सिंह का राजनीतिक कद भी बड़ा रहा है खुद जिला पंचायत अध्यक्ष रहे और लगातार पंद्रह साल से इस पद पर खुद या इनके परिवार का या शुभ चिंतक ही होता रहा है। आज कई विद्यालय बनवाए जिनमे छात्र छात्राओं को शिक्षित करने का। काम किया जा रहा है। गरीब बच्चो को निशुल्क शिक्षा दी जाती है उनकी कापी किताब ड्रेस तक की व्यवस्था की जाती है। विद्यालय भवन में बड़ा सा गार्डन में विभिन्न प्रकार के दुर्लभ पेड़ो को लगाया गया है उन्हे संरक्षित करने का काम किया जा रहा है इससे एक साहित्यकार का प्रकृति प्रेम की झलक दिखाई देती है। समय समय पर हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कवि सम्मेलन का आयोजन करते रहते है जिसमे उभरते युवा कवियों को भी अवसर प्रदान किया जाता है साहित्यकार कवि अवधेश बहादुर सिंह की कोशिश जिले से निकल कर प्रदेश स्तर पर अपनी डंका बजा रही है।

जिलाधिकारी ने की सड़क सुरक्षा समिति की समीक्षा

बच्चों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता में हो

बलिया। जिलाधिकारी रविंद्र कुमार की अध्यक्षता में शनिवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला विद्यालययान परिवहन सुरक्षा समिति/सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में जिलाधिकारी ने विद्यालय से संचालित वाहनों, विद्यालय में परिवहन सुरक्षा समिति के गठन, सड़कों पर चलने वाले अवैध एवं ओवरलोड वाहनों आदि के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने एआरटीओ को निर्देश दिया कि विद्यालयों से चलने वाले प्रत्येक वाहनों का फिटनेस टेस्ट, उनके चालकों का ड्राइवरी लाइसेंस वेरीफिकेशन और विद्यालयों से चलने वाली वाहनों की सूची की रिपोर्ट सभी विद्यालयों के प्रबंधकों / प्रधानाचार्यों से अपने यहां उपलब्ध कराएं।

संक्षेप

रेलवे खंती में मिले अज्ञात वृद्ध के शव की हुई शिनाख्त

शुक्लागंज, उन्नाव। शनिवार सुबह द्वारिका मोहिनी के सामने रेलवे खंती के पास एक साठ वर्षीय अज्ञात का शव विद्युत पोल के पास पड़ा देखा गया। जिसकी जानकारी गंगाघाट कोतवाली पुलिस को दी गई।जिस पर पश्चिमी चौकी पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर आस पास के लोगों को बुलाकर उसकी शिनाख्त कराने का प्रयास किया लेकिन उसकी पहचान नहीं हो सकी।जिस पर पुलिस ने शव को 36 घंटे के लिये उन्नाव मच्युर्री में रखवाया गया था। रविवार को मृतक की भतीजी ने रामऔतार गुप्ता (60) पुत्र रामशंकर गुप्ता के रूप में पहचान की। उसने बताया कि चाचा अविवाहित थे। जिसके कारण अकेले रहते थे। तीन दिन पहले वह घर से निकले थे।

संदिग्ध परिस्थितियों में वृद्ध ने निगला जहरीला पदार्थ मौत

उन्नाव। संदिग्ध परिस्थितियों में वृद्ध किसान ने जहरीला पदार्थ निगल लिया परिजन उसे सी एच सी ले गए जहां पर मौजूद डॉ ने गंभीर हालत देखते जिला अस्पताल भेज दिया जिला अस्पताल पहुंचते ही वृद्ध ने दम तोड दिया परिजनो की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे कर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया वही वृद्ध के पड़ोसियों ने बताया कि खेत में खड़ी फसल को अन्ना मवेशियों ने बरबाद कर डाली है शायद इसी से आहत होकर वृद्ध ने ये कदम उठाया है थाना दही क्षेत्र के कोईथर खेड़ा मजरा मर्थनखेड़ा निवासी राजकुमार 63 वर्ष पुत्र सरजू दोपहर में अपने खेत पर गया था वहा देखा की खेत पर खड़ी फसल को अन्ना मवेशियों में बरबाद कर डाली घर आकर उसने कोई जहरीला पदार्थ निगल लिया वृद्ध घर पर अकेला था उसकी हालत बिगड़ती देख पड़ोसियों ने उसके पुत्रो को फोन कर सूचना दी मौके पर पहुंचे लड़के उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नवाबगंज ले गए जहां पर मौजूद डॉ ने गंभीर हालत देखते उसे जिला अस्पताल भेज दिया अस्पताल पहुंचते ही वृद्ध ने दम तोड दिया सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे कर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया।

पुलिस ने चार लोगो पर किया शांतिभंग की कार्यवाही

सुमेरपुर, उन्नाव। थाना बारासगवर क्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम लालगंज प्रथम में दो पक्षो में हुई मारपीट में चार लोगों को गिरफ़्तार कर शांतिभंग में चालान कर दिया। लालगंज प्रथम गाँव के गंगा रतन पुत्र स्व0 राज बहादुर उम्र करीब 50 वर्ष, अशोक कुमार पुत्र गंगा रतन उम्र करीब 30 वर्ष, श्रवण कुमार पुत्र अयोध्या प्रसाद उम्र करीब 28 वर्ष, रोहित कुमार पुत्र अयोध्या प्रसाद उम्र करीब 22 वर्ष 04 नफर अभियुक्तगण को आपस मे मेड़ बांधने में कहासुनी व कहासुनी मारपीट में बदल जाने के कारण पुलिस द्वारा अन्तर्गत धारा 151/107/ 116/116(3) सीआरपीसी में गिरफ्तार कर मा० न्यायालय उप जिला मजिस्ट्रेट तहसील बीघापुर (पाटन) भेजा दिया गया।

झोलाछाप डॉक्टर के गलत इंजेक्शन लगने से मरीज के पैर की सूखी नस

अमन लेखनी समाचार

हसनगंज, उन्नाव। क्षेत्र के मुंशीगंज रसूलाबाद मार्ग मेहंदी खेड़ा गांव के प्राइवेट नर्सिंग होम के डाक्टर ने मरीज को गलत इंजेक्शन लगा दिया जिसकी वजह से पीड़ित मरीज चल फिर भी नही पा रहा था पैर की नस सुख जाने की हुई पुष्टि जो लंबे इलाज के बाद भी नही होगी ठीक पीड़ित ने हसनगंज कोतवाली पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर नर्सिंग होम संचालक पर कार्रवाई की मांग की है। भगवंत खेड़ा निवासी साजन वर्मा पुत्र बादशाह ने कोतवाली में प्रार्थना पत्र देकर बताया कि अप्रैल माह में फीवर आने पर मुंशीगंज रसूलाबाद मार्ग मेहंदी खेड़ा गांव के बाहर प्राइवेट नर्सिंग होम संचालक सुंदर ने दवा देने के साथ अधिक रूपए बनाने के चक्कर में बाई कमर पर तीन इंजेक्शन लगा दिए आधे घंटे बाद ही बाया पैर सुन्न पड़ गया परिजनो ने डॉक्टर सुंदर को इसकी जानकारी दी जिसपर डॉक्टर ने अलग से तीन प्रकार की दवा देकर सही हो जाने की बात कह कर मरीज को घर ले जाने को कहा लेकिन एक माह बाद भी मरीज का पैर ठीक नहीं हो पाया जिसपर परिजनो ने मरीज को मेडिकल कॉलेज में जांच कराकर जब डाक्टर को दिखाया तो पता चला गलत इंजेक्शन लग जाने की वजह से बाय पैर की एक नस सूख गई जिससे मरीज का पैर न उठ पाने की पुष्टि हुई। पीड़ित मरीज ने कोतवाली में प्राइवेट नर्सिंग होम संचालक डॉ सुंदर के खिलाफ प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। मामले में झोलाछाप डॉक्टर सुन्दर ने सेटिंग गेटिंग कर इलाज करवाने के नाम पर अपना कांटा तो निकाल लिया पर बात यही नहीं रुकती यदि इन झोलाछाप डॉक्टरों पर स्वास्थ्य विभाग इसी तरह मेहरबान बना रहा तो इसी तरह आए दिन कोई न कोई मरीज इन झोलाछाप डॉक्टरों का शिकार बनता रहेगा जो इस समाज और स्वास्थ्य विभाग के लिए बिल्कुल ठीक नही है। कोतवाली प्रभारी राजेश सिंह ने बताया कि मामला मेरे संज्ञान में नही है अगर मरीज ने प्रार्थना पत्र दिया होगा तो जांच कराकर कार्रवाई की जाएगी

सीएससी अधीक्षक हसनगंज प्रमोद कुमार ने बताया कि इस मामले में हमें कोई जानकारी नहीं है जांच करने के लिए जिले पर नोडल टीम बनाई गई है शिकायत मिलने पर वही टीम आकर जांच करती है और हम भी उसी टीम के सदस्य होते हैं।

बाढ़ पीड़ित ग्रामीणों को दी गई राहत सामग्री

अमन लेखनी समाचार

सफीपुर, उन्नाव। बाढ़ ग्रसित लगभग आधा दर्जन गांवों में क्षेत्रीय विधायक के पुत्र व एस डी एम ने बढ़ पीड़ित ग्रामीणों को उनके शिविरों में जाकर राहत सामग्री का वितरण किया विधायक पुत्र ने बताया कि इस संकट की घड़ी में बाढ़ पीड़ित लोगो की अधिक से अधिक मदद की जाएगी जिससे इन लोगो को कोई भी समस्या न होने पाए तहसील सफीपुर क्षेत्र में इस समय गंगा नदी में पानी का उफान आ गया जिससे आस पास के लगभग सैकड़ों गांव बाढ़ की चपेट मे आ गए उन गांवों के ग्रामीण अपना घर बार छोड़ कर लगाए गए शिविरो में निवास करने को मजबूर है क्षेत्रीय विधायक बम्बालाल दिवाकर के पुत्र अश्वनी दिवाकर व उप जिला अधिकारी रामदेव निषाद ने जमाल नगर गहौली आदि लगभग आधा दर्जन गांवों में राहत सामग्री का वितरण किया इस मौके पर राजू चौहान राम सजीवन विमल आदि लोग मौजूद रहे।

सिटी मजिस्ट्रेट ने अवैध शराब,मादक पदार्थों की रोकथाम के लिए ढाबों पर की जांच

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। आबकारी आयुक्त के आदेशानुसार अवैध शराब के विरुद्ध चलाये जा रहे विशेष प्रवर्तन अभियान के क्रम में जिलाधिकारी अपूर्वा दुबे के निर्देशानुसार नगर मजिस्ट्रेट अरुण मणि तिवारी व जिला आबकारी अधिकारी करुणेन्द्र सिंह के नेतृत्व में आबकारी निरीक्षक कुमार गौरव सिंह हसनगंज मयहमराह द्वारा नवाबगंज टोल प्लाजा स्थित महाराजा ढाबा व कानपुर-लखनऊ मार्ग स्थित सौरभ ढ़ाबा, काशवी ढ़ाबा, मास्टर ढ़ाबा, चंदेल ढ़ाबा की चेकिंग की गई।

परशुराम चेतना मंच द्वारा सपन्न हुआ ब्राह्मण समागम एवं सम्मान समारोह सम्मेलन

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। परशुराम चेतना मंच के आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में रायबरेली के ऊंचाहार विधायक मनोज पांडे ने दीप प्रज्वलित कर महापुरुषों पर माला अर्पण करते हुए कार्यक्रम का संचालन कर रहे संजीव त्रिवेदी का आभार व्यक्त करते हुए जय परशुराम के नारे लगाते हुए कार्यक्रम संचालन किया।कार्यकम के दौरान कई वरिष्ठ ब्राह्मण लोगो का सम्मान करते हुए यह बताया समाज में सबसे ज्यादा ब्राह्मण वर्ग का शोषण किया जा रहा है सबसे बड़ा मुख्य कारण ब्राह्मण का संगठित ना होकर रहना कार्यकम संयोजक वीरेंद्र शुक्ला ने किया सभी का स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया और कहा समाज में ब्राह्मण सदैव सर्वोपरि रहा है और यह समाज में सदैव सम्मान की दृष्टि से पूजनीय है कार्यक्रम में प्रमुख रूप से अधिवक्ता अजेंद अवस्थी, राहुल पाण्डे, प्रमोद मिश्रा, सूर्यम शुक्ला मन्नार शुक्लो किया कार्यकम को सम्बोधित कार्यकम में स्नेहिल पांडे शुभा शुक्ला, गुरु प्रसाद त्रिपाठी का हुआ सम्मान कार्यक्रम में सभी का आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम पर संचालक कर रहे हैं वीरेंद्र शुक्ला ने सभी का आभार व्यक्त किया।

बाढ़ पीड़ित ग्रामीणों की मदद के लिए संस्था के लोगो ने बढ़ाए अपने हाथ

अमन लेखनी समाचार

सफीपुर, उन्नाव। समाधान एक विकल्प संस्था के डायरेक्टर ने सफीपुर बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में लगे शिविरों में रह रहे लोगो की मदद के लिए अपना हाथ बढायासफीपुर विकास खण्ड में गंगा नदी में उफान के चलते क्षेत्र के कई गांव पानी मे डूब गए है जिससे वंहा के निवासी ग्रामीण अपना घर छोड़ कर गांव से बाहर बनाये गए शिविरों में अपना जीवन यापन करने को मजबुर है।बाढ़ से प्रभावित लोगों की मदद के लिए कई जनप्रतिनिधियों व समाजसेवी लोगो ने हाथ बढाये है इसी कड़ी में समाधान एक विकल्प संस्था व आशीष सिंह (डायरेक्टर आयुष्मान हॉस्पिटल) ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में लगे शिविरों में रह रहे लोगो के लिए मदद के हाथ बढाये है।सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सफीपुर की स्वास्थ्य टीम के साथ संस्था के नांन्हा सिंह उमेश सिंह अभिषेक सिंह ने स्वल्पाहार की व्यवस्था व लोगो का स्वास्थ्य परीक्षण कराया और शिविर में रह रहे लोगो को विश्वास दिलाया कि शासन व प्रशासन हर सम्भव मदद कर ही रहा है लेकिन हम सभी लोग भी हर सम्भव मदद करते रहेंगे।इसके पहले भी समाधान एक विकल्प संस्था द्वारा समय समय पर जनहित की मदद के लिए प्रोग्राम किये जाते रहे है।सीएचसी अधीक्षक डाक्टर राजेश कुमार वर्मा की स्वास्थ्य टीम सफीपुर के सदस्यों में राजकुमार वर्मा फार्मासिस्ट, प्रमोद कुमार फार्मासिस्ट, अनुभव सचिन सिंह, व सचिन दीक्षित ने स्वल्पाहार वितरण व स्वास्थ्य परीक्षण में विशेष सहयोग दिया।

लेखपाल का पैसा लेते फोटो हुआ वायरल एसडीएम ने लेखपाल को किया सस्पेंड

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। अचलगंज नगर पंचायत में रिश्वत लेने वाले लेखपाल को एसडीएम ने सस्पेंड कर दिया है। सोशल मीडिया में किसी से रिश्वत लेते हुए वायरल फोटो को संज्ञान में लेकर राजस्व लेखपाल पर निलंबन की कार्रवाई तय की गई है। हालांकि दैनिक अमन लेखनी वायरल फोटो की पुष्टि नहीं करता है। बता दें कि अचलगंज नगर पंचायत में एक सप्ताह पहले राजस्व लेखपाल अनुराग परिहार की नियुक्ति हुई थी। हड़हा समेत नो मजरा नगर पंचायत का हिस्सा है। लेखपाल का पैसे लेते हुए एक स्क्रीन शॉट फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। जिसके बाद सोशल मीडिया पर आरोप लगते रहे कि लेखपाल किसी के काम के बदले रिश्वत ले रहा है। हालांकि पैसे देने वाला कौन और किस काम के पैसे वह संबंधित लेखपाल को दे रहा है। इसका खुलासा वायरल फोटो से नहीं हो रहा है। फोटो में सिर्फ लेखपाल पैसे लेते हुए दिख रहा है। उपजिलाधिकारी नम्रता सिंह ने बताया कि लेखपाल को वायरल फोटो मामले में निलंबित करके सदर तहसील कार्यालय में सम्बद्ध कर दिया गया है। वायरल फोटो की जांच कराई जाएगी। फोटो कब का है, किस मामले में पैसा लिया गया है। यदि इसकी पुष्टि होती है तो आगे की कार्रवाई भी की जाएगी।

भारी मात्रा में अवैध शराब के साथ चार युवक व दो महिलाएं गिरफ्तार

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। आबकारी आयुक्त के आदेशानुसार अवैध शराब के विरुद्ध चलाये जा रहे विशेष प्रवर्तन अभियान के क्रम में जिलाधिकारी अपूर्वा दुबे व पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ शंकर मीना के निदेर्शानुसार व जिला आबकारी अधिकारी करुणेन्द्र सिंह के पर्यवेक्षण में राजेश प्रताप सिंह आबकारी निरीक्षक पुरवा मय हमराह व थाना मौरावा पुलिस के साथ तहसील पुरवा के अंतर्गत ग्राम अहेसा व बरदहा बाजार मे मुखबिर की सूचना पर एकबारगी दबिश देते हुए 200 लीटर अवैध कच्ची शराब समेत कांती पत्नी स्वर्गीय दिनेश मंजू पत्नी कुवारे मुन्नीलाल पुत्र पियारे को गिरफ्तार कियाकुलदीप बहादुर सिंह आबकारी निरीक्षक सदर मय हमराह द्वारा मुखबिर की सूचना पर ग्राम कासिमनगर में दबिश के दौरन 10 लीटर अवैध शराब बरामद कर मौके से राजन पुत्र श्रीराम निवासी मोहल्ला नूरूद्दीन थाना कोतवाली सदर को गिरफ्तार कियाकुमार गौरव सिंह आबकारी निरीक्षक हसनगंज मय हमराह द्वारा मुखबिर की सूचना पर ग्राम आदमपुर बरेठी थाना सोहरामऊ में दबिश के दौरान 20 लीटर अवैध शराब बरामद की पुरषोत्तम प्रसाद टण्डन आबकारी निरीक्षक सफीपुर मय हमराह द्वारा मुखबिर की सूचना पर ग्राम मिजार्पुर में दबिश के दौरान 20 लीटर अवैध शराब बरामद कर रवि पुत्र सन्तू निवासी ग्राम मुरासपुर को गिरफ्तार कियाप्रतिभा सिंह आबकारी निरीक्षक बीघापुर मय हमराह द्वारा ग्राम परसंडा थाना बिहार में दबिश के दौरान 45 लीटर अवैध शराब बरामद की प्रभारी आबकारी निरीक्षक बांगरमऊ मय हमराह द्वारा मुखबिर की सूचना पर ग्राम धुरंधर खेड़ा थाना बेहटा मुजावर में दबिश के दौरान 10 लीटर अवैध शराब बरामद कर विपिन पुत्र बलवंत निवासी ग्राम धुरंधर खेड़ा को गिरफ्तार किया।

लापता किशोर का शव पानी भरे गड्ढे में मिला परिजनो में मची चीख पुकार

अमन लेखनी समाचार

फतेहपुर चौरासी, उन्नाव। स्थानीयथाना क्षेत्र के गाँव बरधाई से शनिवार को लापता हुए किशोर का शव गाँव के पास स्थिति पुलिया के निकट भरे पानी के किनारे खड़े पेड़ों में फसा पाया गया है। परिजनों की सूचना पर पहुँची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।फतेहपुर चौरासी क्षेत्र के अंतर्गतबरधाई गाँव निवासी शिशुपाल का लगभग चौदह वर्षीय पुत्र निखिल उर्फ आनंद शनिवार को दोपहर बाद घर से बिना बताये चला गया था। जब काफी देर नही लौटा तो खोजबीन शुरू हुई। खोजबीन के दौरान निखिल की चप्पले गाँव के पास बनी पुलिया के पास मिली थी। पुलिया के पास पानी भरा था जिससे डूबने की आशंका के चलते खोजबीन की गई लेकिन रात हो जाने के कारण कोई पता नही चल पाया। रविवार को फिर तलाश शुरू की गई। काफी खोजबीन करने पर निखिल का शव पुलिया के निकट खड़े पेड़ों व झाड़ियों में फसा मिला। शव मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया।

दावते इस्लामी इंडिया के समाजसेवी ने बाढ़ पीड़ितों को घर-घर बांटी रहत सामग्री

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। इंडिया के डिपार्टमेंट गरीब नवाज रिलीफ फाउंडेशन (जी एन आर एफ) के वालंटियर्स नें शुक्ला गंज के बाढ़ पीड़ित अलाको में जाकर राहत का कार्य किया तथा बाढ़ पीड़ितों को राशन किट जिसमे आटा दाल चावल सकर कड़वा तेल नमक आलू प्याज वितरित की। इस दौरान जिला उन्नाव के प्रभारी नासिर अत्तारी ने बताया कि जीएनआरएफ संस्था द्वारा शुक्ला गंज के बाढ़ पीड़ित अलाके में राशन किट बाँटी जा रही है जिससे लोगों को खाने पीने की परेशानी न हो, इसी तरह देश भर में आपदा की स्थिति में संस्था द्वारा राहत कार्य की करने की कोशिश की जाती है। परेशान हालों की मदद और जरूरत मंदों की सेवा ही असल मकसद होना चाहिये उन्होंने आम जनता से भी यहाँ मदद करने को अपील की। इस मौके पर मौलाना मुशाहिद मदनी, असलम मदनी, वसीक, नजमुद्दीन कारी अफजल, नूर मोहम्मद, गुफरान आदि लोग मौजूद रहे।

पति-पत्नी के 30 विवादित जोड़े आपसी कलह भुलाकर साथ रहने को हुए राजी

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। सिद्धार्थ शंकर मीना पुलिस अधीक्षक उन्नाव के कुशल निर्देशन में रिजर्व पुलिस लाइन उन्नाव एवं विभिन्न थानों में स्थित महिला हेल्प डेस्क में पति-पत्नी के विवादित जोड़ों को बुलाया गया। परिवार परामर्श केन्द्र, परिवार परामर्शदाताओं एवं महिला हेल्पडेस्क की टीम द्वारा उनकी काउंसलिंग करते हुए उनके बीच उपजे विवाद को खत्म कराया गया तथा परिवार को टूटने से बचाया। तदोपरान्त महिला थाना से 08, परिवार परामर्श केन्द्र 05, थाना हसनगंज से 03, थाना गंगाघाट, थाना दही, थाना अचलगंज, थाना बेहटा मुजावर व रिपोर्टिंग पुलिस चौकी बीघापुर महिला थाना से 02-02, थाना बांगरमऊ, थाना सोहरामऊ, थाना फतेहपुर चौरासी व थाना मांखी से 01-01 जोड़े को बिना विवाद साथ रहने के वादे के साथ विदा किया गया। उपरोक्त पुनीत कार्य में डा0 आशीष श्रीवास्तव प्रभारी परिवार परामर्श समिति एवं सलाहकारों मे यतीन्द्रनाथ मिश्रा, राम सनेही यादव, डा0 एस0के0 पाण्डेय, साबिहा उमर, राजेन्द्र सिंह सेंगर, अबसार अली, डा0 सागीर अहमद, सहयोगी अंकित रघुवंशी व शिवेन्द्र सिंह एवं संबन्धित थानों व परिवार परामर्श केन्द्र टीम से प्रतिसार निरीक्षक अब्दुल रशीद, प्रभारी निरीक्षक महिला थाना अर्चना गौतम, महिला उप निरीक्षक भागीरथी, विजेता चौधरी, महिला उप निरीक्षक मधु श्रीवास्तव, कमलेश कुमारी, मंजू देवी, मिथिलेश वर्मा, अंशू रानी, अंजूला, मीनू, शीलू पाल, पारुल, कु0 चिंतन, पूजा यादव, शिवानी वत्स, माण्डवी सिंह, भावना शर्मा, नक्की चौहान का विशेष योगदान रहा।

अखिल भारतीय पाल महासभा व पाल विकास शिक्षा एवं समाजोत्थान समिति की संयुक्त बैठक हुई

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। रविवार को अखिल भारतीय पाल महासभा व पाल विकास शिक्षा एवं समाजोत्थान समिति की संयुक्त बैठक सांवरिया गेस्ट हाउस निकट सहजनी उन्नाव में संपन्न हुई। बैठक में मुख्य रूप से पाल भवन बनाने व संगठन के बिस्तर पर चर्चा हुई। मुख्य अतिथि के रूप में एडवोकेट रामकिशोर पाल व अध्यक्षता मन्साराम पाल ने एवं संचालन संतोष पाल जिला महामंत्री अखिल भारतीय पाल महासभा ने किया। मुख्य रूप से पाल महासभा के अध्यक्ष राम नारायण पाल समिति के सचिव राम सजीवन पाल, संरक्षक रामनिवास पाल, पुष्पेंद्र पाल, कमलेश पाल, सत्येंद्र पाल, शिक्षक रमेश पाल, दयाराम पाल, अवधेश पाल, आचार्य ओम प्रकाश, देवी रतन, शंभू पाल, शशांक पाल, साजन पाल, गंगा प्रसाद पाल, मसवासी पूर्व प्रधान डॉक्टर प्रकाश पाल, प्रदीप पाल, एडवोकेट विनोद पाल, मनोज मिश्रा, रामचंद्र पाल, गंगाराम पाल, राकेश पाल, अशोक पाल, कृपा शंकर पाल, मुकेश पाल, राधेलाल पाल के साथ ही सैकड़ो की संख्या में सजातीय बंधु उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेले में मरीजों को लैब टेक्नीशियन ने दी दवा

अमन लेखनी समाचार

फतेहपुर चौरासी, उन्नाव। नगर पंचायत में स्थित पी एच सी केंद्र पर लगे मुख्यमंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेले में कोई भी चिकित्सक मौजूद नही रहे दूर दराज से आए मरीजों को लैब टेक्नीशियन संविदा कर्मी ने देख कर दवा दी

विकास खंड फतेहपुर चौरासी क्षेत्र के नगर पंचायत ऊगू में लंबे अर्से से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बना हुआ है पी एच सी केंद्र पर डॉ फरहा अहमद की तैनाती है लेकिन इस समय वो अवकाश पर बताए जा रहे हैं ग्रामीणों ने बताया कि ये अस्पताल सिर्फ ए एन एम के सहारे चल रहा है इस अस्पताल में पीने के पानी तक की कोई भी व्यस्था नही है कुछ वर्ष पूर्व नगर पंचायत की ओर से फ्रीजर लगवाया गया था लेकिन वो भी खराब हो गया वो फ्रीजर शोपीस बन कर रह गया मुख्य मंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया जिसमे चिकित्सक तक नहीं मौजूद थे मेले में मौजूद लैब टेक्नीशियन संविदा कर्मी ही चिकित्सक बन मरीजों की जांच पड़ताल कर दवा दे दी जो एक क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है इस सम्बंध में जब मुख्य चिकित्सा अधिकारी से फोन पर जानकारी करना चाहा लेकिन उनसे संपर्क नही हो पाया।

चिंतन

हालात बदले, अब दूर के नहीं रहे चंदा मामा

दादी-नानी बच्चों को गीत सुनाया करती थी, चंदा मामा दूर के, पोए पकाए पूर के, लेकिन अब चंदा मामा दूर के नहीं रहे। भारत ने चांद की दक्षिण ध्रुव पर अपना दूत चंद्रयान-3 उतारकर इतिहास रच दिया है। चंद्रयान ने 20 मिनट में चंद्रमा की अंतिम कक्षा से 25 किमी का सफर पूरा किया। लैंडर को धीरे-धीरे नीचे उतारा गया। 5 बजकर 30 मिनट पर शुरुआत में रफ लैंडिंग बेहद कामयाब रही। इसके बाद 5 बजकर 44 मिनट पर लैंडर ने वर्टिकल लैंडिग की। तब उसकी चंद्रमा से दूरी 3 किमी रह गई थी। आखिरकार लैंडर ने 6 बजकर 04 मिनट पर चांद पर कदम रखा। इस तरह भारत चांद के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडिंग करने वाला दुनिया का पहला देश बन गया। अब तक कोई दुनिया का कोई भी देश दक्षिण में कदम रखने की हिम्मत नहीं जुटा पाया है। इससे पहले अमेरिका, सोवियत संघ और चीन को ही यह कामयाबी मिली है तो मिली है, लेकिन इनमें कोई भी देश दक्षिण ध्रुव पर नहीं उतरा है। अब तो इंतजार इस बात का है जब विक्रम और प्रज्ञान एक-दूसरे की फोटो खींचेंगे और पृथ्वी पर भेजेंगे। यह काम धूल का गुबार शांत होने के बाद होगा। डस्ट सेटल होने के बाद विक्रम चालू होगा और कम्युनिकेट करेगा। फिर रैंप खुलेगा और प्रज्ञान रोवर रैंप से चांद की सतह पर आएगा। पहिए चांद की मिट्टी पर अशोक स्तंभ और इसरो के लोगो की छाप छोड़ेंगे। इस मिशन के जरिए भारत ने दुनिया को बता दिया है कि उसके पास चांद पर सॉफ्ट लैंडिंग करने और रोवर को वहां चलाने की काबिलियत है। इससे दुनिया का भारत पर भरोसा बढ़ेगा जो कॉमर्शियल बिजनेस बढ़ाने में मदद करेगा। भारत ने अपने हेवी लिफ्ट लॉन्च व्हीकल एलवीएम3-एम4 से चंद्रयान को लॉन्च किया है। इस व्हीकल की काबिलियत भारत पहले ही दुनिया को दिखा चुका है। भारत से पहले रूस चांद के दक्षिणी ध्रुव पर लूना-25 यान उतारने वाला था। 21 अगस्त को यह लैंडिंग होनी थी, लेकिन आखिरी ऑर्बिट बदलते समय रास्ते से भटक गया और चांद की सतह पर क्रैश हो गया। चंद्रयान के सफलतापूर्वक लैंड करने के बाद न केवल दुनिया में भारत की तकनीक का डंका बजा है, बल्कि इसका सीधा लाभ देश की अर्थव्यवस्था को भी होने वाला है। यह न केवल देश को अंतरिक्ष खोज की दौड़ में बढ़त दिलाएगा। अलबत्ता, अर्थव्यवस्था में भी योगदान भी देगा। रोजगार के मौके पैदा करने से लेकर निजी निवेश में बढ़ोतरी और यहां तक कि तकनीकी प्रगति तक में चंद्रयान-3 मिशन भारतीय अर्थव्यवस्था के अलग-अलग पहलुओं को बढ़ावा देगा। चंद्रयान-3 के सफल लॉन्च से निवेशकों का भरोसा बढ़ेगा। वे भारत की स्पेस टेक्नोलाजी में ज्यादा निवेश के लिए आकर्षित होंगे। इससे निजी निवेश को बढ़ावा मिलेगा। गूगल जैसी कंपनियां पहले से ही भारत के स्पेस-टेक स्टार्टअप में निवेश कर रही हैं। चंद्रयान-3 मिशन की सफलता के बाद विदेशी कंपनियों की ओर से निवेश बढ़ना तय है। इसके अलावा निजी क्षेत्र की बढ़ती भागीदारी से नए स्टार्टअप, व्यवसाय और नौकरी के अवसर सामने आ सकते हैं। इससे आर्थिक विकास और इनोवेश को बढ़ावा मिलेगा। वैसे भी भारत के स्पेस-टेक इकोसिस्टम में तेजी से विकास हुआ है। इसने कोरोना महामारी के बाद से पिछले कुछ वर्षों में हजारों नौकरियां पैदा की हैं, लेकिन पहले स्पेस इकनॉमी पर ध्यान न देने के कारण संघर्ष करना पड़ा है। आज इस क्षेत्र में ब्लू-कॉलर और व्हाइट-कॉलर दोनों तरह की लाखों नौकरियां पैदा करने की क्षमता है। केवल निवेश से रोजगार ही नहीं बल्कि चंद्रयान-3 की सफलता से देश की तस्वीर भी बदलने वाली है। कभी सांप और सपेरों का देश कहे जाने वाले भारत ने विश्व गुरु बनने की दिशा में एक कदम और बढ़ा दिया है। दुनिया हमारी स्पेस तकनीक की तरफ उम्मीदों से देख रही है।

चंद्रयान-3 की सफलता

डॉ. पवन सिंह

चांद से मैं भारत बोल रहा हूं

लगभग 41 दिनों की अद्भुत व अविस्मरणीय यात्रा के बाद, 23 अगस्त 2023 का दिन, 140 करोड़ दिलों की धड़कनें और दुनियाभर की नजरें जिस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनने के लिए बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी। आखिरकार वो पल आ ही गया और जब हमारे चंद्रयान-3 ने चांद के साउथ पोल पर सफल लैंडिंग कर विश्वपटल पर एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया। इस शुभ लैंडिंग से पूरा देश उत्साह व ऊर्जा से सराबोर है। हमारे वैज्ञानिकों ने पूरे देश को गौरवान्वित करने का एक ओर मौका दिया है, इस सफलता के लिए इसरो के सभी वैज्ञानिकों, कर्मचारियों के अथक परिश्रम को कोटि-कोटि साधुवाद एवं बधाई। अब से चांद पर भी अशोक स्तंभ के रूप में भारत की शानदार छाप स्थापित हो गई है।

इसरो ने चंद्रयान-3 मिशन के लिए तीन मुख्य उद्देश्य निर्धारित किए थे। पहला लैंडर की चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग कराना। दूसरा चंद्रमा पर रोवर की विचरण क्षमताओं का अवलोकन और प्रदर्शन और तीसरा चंद्रमा की संरचना को बेहतर ढंग से समझने और उसके विज्ञान को अभ्यास में लाने के लिए चंद्रमा की सतह पर उपलब्ध रासायनिक और प्राकृतिक तत्वों, मिट्टी, पानी आदि पर वैज्ञानिक प्रयोग करना। इस पूरी यात्रा में चंद्रयान-3 ने अपने इन तीनों उद्देश्यों को बखूबी पूरा किया है। अब आगे आने वाले समय में शायद चंद्रयान-3 से हमें ऐसी अनेक जानकारियां मिल सकती हैं, जिसके बारे में अभी सोच पाना मुश्किल है।

लगभग 615 करोड़ रुपये की लागत से बने और 14 जुलाई को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से यात्रा शुरू करने वाले चंद्रयान-3 के पूरे सफर ने पहले दिन से प्रत्येक भारतीय को अपने से जोड़े रखा और दुनियाभर से करोड़ों लोग टकटकी लगाए इस यात्रा से लगातार जुड़े रहे। इसरो ने पृथ्वी से दूर कई बार चंद्रयान-3 की कक्षाएं बदली थी। पृथ्वी की अलग-अलग कक्षाओं में परिक्रमा करते हुए एक अगस्त को स्लिंगशाट के बाद पृथ्वी की कक्षा छोड़कर यान चंद्रमा की कक्षा की ओर बढ़ा था। पांच अगस्त को इसने चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश किया। छह अगस्त को पहली बार कक्षा बदली। इसके बाद नौ, चौदह और सोलह अगस्त को कक्षाओं में बदलाव कर यह चंद्रमा के और नजदीक पहुंचा। सत्रह अगस्त को चंद्रयान-3 के प्रोपल्शन मॉड्यूल और लैंडर मॉड्यूल अलग-अलग हो गए और लैंडर मॉड्यूल चंद्रमा की सतह की ओर बढ़ा। 18 और 19 अगस्त को दो बार डीबूस्टिंग (धीमा करने की प्रक्रिया) के बाद लैंडर (विक्रम) और रोवर (प्रज्ञान) से युक्त लैंडर मॉड्यूल चांद की सबसे करीबी कक्षा में पंहुचा और इस असंभव लगने वाली चंद्रयान-3 की यात्रा को आखिरकार हमने चुनौतियों के बावजूद भी पूरा कर लिया। बीच-बीच में कई बार दिलों की धड़कनें तेज भी हुई और डर भी लगा, लेकिन अंत भला तो सब भला। भारत साउथ पोल पर पहुंचने वाला दुनिया का पहला देश बन गया है। साउथ पोल से भारत को ऐसी सब जानकारियां मिल सकती है, जो वहां पर जीवन की

संभावनाओं और अन्य संबंधित क्षेत्रों से जुड़ी संभावनाओं को और अधिक गति प्रदान करेगा। साउथ पोल पर पानी की सम्भावना की तलाश का मतलब होगा एक नई जिंदगी। इसके साथ ही इससे मंगल पर जाने के लिए चंद्रमा पर उतरकर फ्यूल ले सकेंगे। हाइड्रोजन-ऑक्सीजन मिलकर स्वच्छ राकेट फ्यूल बना सकते हैं, इससे पानी को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में तोड़ा जा सकता है।

साउथ पोल पर कीमती धातुओं के रूप में सोना, प्लेटिनम, टाइटेनियम और यूरेनियम होने की संभावना है। वहां पर बड़ी मात्रा में नॉन रेडिओएक्टिव हीलियम गैस और इलेक्ट्रॉनिक्स बनाने में काम आने वाली धातुएं भी मिल सकती है। चंद्रमा पर बर्फ के अणुओं का अध्ययन, चंद्रमा की सतह से अंतरिक्ष के अध्ययन की संभावना तलाशना, मिट्टी व प्राकृतिक संसाधनों का अध्ययन ऐसी अनेक संभावनाओं का भविष्य में पता चल सकता है। स्पेस मार्केट में भारत के लिए संभावनाएं पहले से अधिक बढ़ गई हैं। अंतरिक्ष में भी पूरी दुनिया आज भारत का लोहा मानने लगी है। अब भारत ने स्पेस में अमेरिका सहित कई बड़े देशों का एकाधिकार तोड़ा है। पूरी दुनिया में सैटेलाइट के माध्यम से टेलीविजन प्रसारण, मौसम की भविष्यवाणी और दूरसंचार का क्षेत्र बहुत तेज गति से बढ़ रहा है और चूंकि ये सभी सुविधाएं उपग्रहों के माध्यम से संचालित होती हैं, इसलिए संचार उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित करने की मांग में बढ़ोतरी हो रही है। हालांकि इस क्षेत्र में चीन, रूस, जापान आदि देश प्रतिस्पर्धा में है, लेकिन यह बाजार इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि यह मांग उनके सहारे पूरी नहीं की जा सकती। ऐसे में चंद्रयान-3 की कम बजट में सफल लैंडिंग के बाद व्यावसायिक तौर पर भारत के लिए संभावनाएं पहले से अधिक बढ़ गई हैं। आज कम लागत और सफलता की गारंटी इसरो की सबसे बड़ी ताकत बन गई है। अंतरिक्ष बाजार में भारत की धमक का यह स्पष्ट संकेत है। इसके साथ ही भारत अब 200 अरब डालर के अंतरिक्ष बाजार में एक महत्वपूर्ण देश बनकर उभरा है। चांद और मंगल अभियान सहित इसरो अपने 100 से ज्यादा अंतरिक्ष अभियान पूरे करके पहले ही इतिहास रच चुका है। भविष्य में अंतरिक्ष में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, क्योंकि यह अरबों डालर की मार्केट है। कुछ साल पहले तक फ्रांस की एरियन स्पेस कंपनी की मदद से भारत अपने उपग्रह छोड़ता था पर अब वह ग्राहक के बजाय साझीदार की भूमिका में पहुंच गया है। यदि इसी तरह भारत अंतरिक्ष क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमारे यान अंतरिक्ष यात्रियों को चांद, मंगल या अन्य ग्रहों की सैर करा सकेंगे। इसरो के मून मिशन, मंगल अभियान, स्वदेशी स्पेस शटल की कामयाबी और अब चंद्रयान-3 की सफलता के बाद इसरो के लिए संभावनाओं के नए दरवाजे खुल जाएंगे, जिससे भारत का निश्चित रूप से स्पेस में वर्चस्व पहले से और अधिक बढ़ जाएगा।

जिसका इंतजार था, जिसके लिए करोड़ों-करोड़ों लोगों का दिल बेकरार था, वो पल हम सबने देखा और हम सब उसके साक्षी भी बने। यह अनुभव व सफलता 140 करोड़ भारतीयों के जीवन का स्वर्णिम पल रहेगा। सच में चंद्रयान-3 की सफलता ने 2047 के अमृतकाल की शुरुआत बहुत बेहतरीन तरीके से की है और अब प्रत्येक भारतीय का विश्वास पहले से कई गुणा बढ़ गया है, कि भारत अब किसी भी क्षेत्र में रुकने वाला नहीं है। अब सभी दिलों की केवल एक ही धुन है 'जय भारत, जय-जय भारत।' एक बार पुनः इसरो के सभी वैज्ञानिकों, कर्मचारियों की मेहनत को सलाम व सभी भारतीयों को बधाई, क्योंकि चांद से मैं भारत बोल रहा हूं।

जिसका इंतजार था, जिसके लिए करोड़ों-करोड़ों लोगों का दिल बेकरार था, वो पल हम सबने देखा और हम सब उसके साक्षी भी बने। यह अनुभव व सफलता 140 करोड़ भारतीयों के जीवन का स्वर्णिम पल रहेगा। सच में चंद्रयान-3 की सफलता ने 2047 के अमृतकाल की शुरुआत बहुत बेहतरीन तरीके से की है और अब प्रत्येक भारतीय का विश्वास पहले से कई गुणा बढ़ गया है, कि भारत अब किसी भी क्षेत्र में रुकने वाला नहीं है। अब सभी दिलों की केवल एक ही धुन है 'जय भारत, जय-जय भारत।' एक बार पुनः इसरो के सभी वैज्ञानिकों, कर्मचारियों की मेहनत को सलाम व सभी भारतीयों को बधाई, क्योंकि चांद से मैं भारत बोल रहा हूं।

संकलित

दर्शन

एकनिष्ठ भक्ति

रामकृष्ण परमहंस : अनेक महापुरुष हैं, अनेक देवी-देवता हैं, अनेक मार्ग हैं, किंतु एकनिष्ठता आवश्यक है। इसी कारण इष्ट देवता की अवधारणा है। घर की बहू सास, ससुर, जेठ, जेठानी सबका आदर सम्मान करती है, किसी की अवज्ञा या उपेक्षा नहीं करती। सबकी सेवा करती है, किंतु अपने पति को वह सबसे अधिक चाहती है। इसी तरह तुम भी अपने इष्ट देवता पर दृढ़ एकनिष्ठ भक्ति रखो, जबकि अन्य देवी-देवताओं का सम्मान करो, सबके प्रति श्रद्धा रखो। सभी देव एक ही परमेश्वर के रूप हैं। किंतु किसी एक के प्रति एकनिष्ठ रहो। चौसर के खेल में गोटी सब खानों का चक्कर लगाए बिना लक्ष्य पर नहीं पहुंचती। यदि दो गोटियां जोड़ी बांधकर इकट्ठी चलें तो उन्हें कोई काट नहीं सकता, नहीं तो अकेली गोटी लक्ष्य के पास पहुंचकर पकते-पकते भी कट जा सकती है। इसी प्रकार साधना के मार्ग पर भी यदि गुरु अथवा इष्ट के साथ युक्त होकर आगे बढ़ा जाए तो बाधा विघ्न का भय नहीं रहता, यात्रा निर्विघ्न रूप से सफल हो सकती है। एक बार किसी यात्री ने एक आदमी से कलकत्ता (अब कोलकाता) जाने का रास्ता पूछा। उस आदमी ने कहा, इस रास्ते से चले जाओ। थोड़ी दूर चलकर उसने और एक जन से रास्ता पूछा। उसने दूसरा रास्ता बताया। इस तरह वह थोड़ा सा आगे बढ़कर किसी से रास्ता पूछता तो पहले वाले का रास्ता छोड़ उस पर चल देता। ऐसा करते हुए वह रास्तों पर ही भटकता रहा, कलकत्ता नहीं पहुंच पाया।

संकलित

प्रेरणा

रावण की वजह से बना बैद्यनाथ मंदिर

त्रेता युग की घटना है। रावण शिव जी का परम भक्त था। रावण ने हिमालय क्षेत्र में शिवलिंग बनाकर कठोर तप किया था। इस तप से शिव जी प्रसन्न होकर प्रकट हुए। भगवान ने रावण से वरदान मांगने के लिए कहा। रावण ने शिव जी से कहा कि मैं आपका ये शिवलिंग लंका में स्थापित करना चाहता हूं। शिव जी ने रावण की इच्छा पूरी होने का वरदान दिया, लेकिन साथ में ये भी कहा कि रास्ते में तुम ये शिवलिंग जहां रख दोगे, शिवलिंग वहीं स्थापित हो जाएगा। इसके बाद तुम ये शिवलिंग आगे नहीं ले जा पाओगे। रावण ने शिव जी का बात मान ली और शिवलिंग उठाकर लंका की ओर चल दिया। रास्ते में रावण ने गलती से एक जगह शिवलिंग रख दिया। थोड़ी देर बाद वह शिवलिंग फिर से उठाने लगा, लेकिन शिवलिंग वहीं स्थापित हो गया था। बहुत कोशिश करने के बाद भी रावन शिवलिंग को उठा नहीं सका। अंत में हिम्मत हारकर रावण वहां से चला गया। रावण के जाने के बाद सभी देवी-देवता, ऋषि-मुनि और अन्य लोग इस शिवलिंग के पास पहुंचे और शिव पूजा की। सभी की पूजा से भगवान प्रसन्न हुए और प्रकट हुए। सभी भक्तों ने शिव जी से प्रार्थना की कि अब से वे यहीं निवास करें, ताकि भक्त आसानी से दर्शन-पूजन कर सके और उनका कल्याण हो सके। भक्तों की बात सुनकर शिव जी इसी शिवलिंग में ज्योति स्वरूप में विराजित हो गए। बाद ये ज्योतिर्लिंग बैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

विश्लेषण

डॉ. एन.के. सोमानी

प. अफ्रीका के बिगड़ते हालात

नाइजर में तख्तापलट के बाद स्थिति गंभीर हो गई है। पश्चिमी अफ्रीकी देशों के संगठन इकोनॉमिक कम्यूनिटी ऑफ वेस्ट अफ्रीकन स्टेट अर्थात इकोवास ने नाइजर के खिलाफ सैन्य कार्रवाई का ऐलान किया है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए भारत के विदेश मंत्रालय ने वहां रहने वाले भारतीय नागरिकों को नाइजर छोड़ने की सलाह दी है। हालांकि, तख्तापलट को अंजाम देने वाले सेना के कमांडर जनरल अब्दुर्रहमान ने देश में जल्द चुनाव करवाकर सत्ता हस्तांतरण की बात कही है, लेकिन साथ ही उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय को धमकाते हुए मामले से दूर रहने की हिदायत दी है। नाइजर में हुए तख्तापलट की घटना को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखें तो तीन बड़े सवाल सामने आते हैं। प्रथम, नाइजर में तख्तापलट की घटना क्यों हुई। द्वितीय, जिस तरह से इकोवास ने नाइजर में सैन्य हस्तक्षेप का ऐलान किया है, उसका आधार क्या है और तृतीय, नाइजर में लोकतंत्र की बहाली के लिए पश्चिमी देश किस रणनीति पर आगे बढ़ेंगे। कहीं ऐसा तो नहीं कि बुर्किना फासो और माली की तरह नाइजर में भी पश्चिमी देशों की रणनीति केवल बयानों तक ही सिमट कर रह जाए। नाइजर में तख्तापलट का इतिहास कोई नया नहीं है। साल 1960 में नाइजर को फ्रांस के औपनिवेशिक शासन से आजादी मिली थी। तब से अब तक यहां चार बार तख्तापलट हो चुका है। साल 2021 में बजौम पहली बार लोकतांत्रिक ढंग से हुए सत्ता हस्तांरण में नाइजर के राष्ट्रपति बने थे। नाइजर को विकास के पथ पर आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने अमेरिका और फ्रांस जैसी पश्चिमी ताकतों के साथ मजबूत संबंध बनाए। देश में लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत किया। शासन में सेना के दखल को सीमित किया। लोकतांत्रिक सुधारों की इस प्रकिया से सेना नाखुश थी। देश के भीतर एक के बाद एक हो रही जिहादी घटनाएं बजौम के सुरक्षा तंत्र पर सवाल खड़े कर रही थी। बीते तीन सालों में नाइजर में अल-कायदा और इस्लामिक स्टेट के लड़ाकों ने कई हमले किए हैं। हमलों में नाइजर के कई सैनिक हताहत हुए हैं। महंगाई पर नियंत्रण नहीं लगा पाने के कारण देश की अवाम बजौम सरकार के खिलाफ लामबंद हो रही थी। सेना भला ऐसे माकूल अवसर को कब हाथ से जाने देती। ऐसे में प्रेसिडेशिंयल गार्ड ने 'सुरक्षा की बिगड़ती स्थिति और खराब सामाजिक और आर्थिक प्रबंधन का हवाला देकर राष्ट्रपति बजौम को अपदस्थ कर कब्जा कर लिया। जहां तक इकोवास के सैन्य हस्तक्षेप का सवाल है। तो इकोवास का दावा भी हवा-हवाई साबित होता दिख रहा है। दरअसल, नाइजर क्षेत्र के सात देशों- नाइजीरिया, अल्जीरिया, लीबिया, बुर्किना फासो, माली, बेनिन और चाड के साथ सीमाएं साझा करता है। नाइजीरिया, बेनिन, माली और बुर्किना फासो इकोवास के सदस्य है। इन चार देशों में से माली और बुर्किना फासो में सैन्य जुंटा का शासन है। दोनों देशों ने धमकी दी है कि नाइजर पर किया गया कोई भी बल प्रयोग उन पर किया गया बल प्रयोग होगा। शेष दो देश नाइजीरिया और बेनिन है। नाइजीरिया समूह का सबसे बड़ा देश ओर इकोवास का प्रमुख वित्तपोषक है, लेकिन नाइजीरियाई सीनेटरों ने बल के अलावा अन्य साधनों के उपयोग की बात कहकर राष्ट्रपति बोला टीनूबू को संशय में डाल दिया है। हाल ही में सत्ता में आए टीनूबू के लिए सीनेटरों की राय को नजरअंदाज करना उनके राजनीति भविष्य को मुश्किल में डाल सकता है। बेनिन ने अभी अपने पते नहीं खोले हैं। दूसरी ओर इकोवास के बाहर चाड और अल्जीरिया ने भी सैन्य कार्रवाई के समर्थन से इंकार किया है। कुल मिलाकर तो सैन्य कार्रवाई के नाम पर इकोवास पूरी तरह विभाजित नजर आ रहा है। तो क्या इकोवास पश्चिमी देशों के भरोसे नाइजर को धमकी दे रहा है। रही बात पश्चिमी देशों की रणनीति की तो सबके अपने-अपने हित है। अमेरिका नाइजर का एक अहम सहयोगी है। नाइजर के विकास में अमेरिका का बड़ा योगदान रहा है।

अंतर्मन

आज की पाती

राष्ट्रीय खेल हॉकी का उज्ज्वल भविष्य

देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। आजादी के बाद हमारे देश ने विभिन्न क्षेत्रों में बहुत आयाम स्थापित किए हैं। आज हमारा देश दुनिया के साथ कदमताल मिला रहा है, विकास के मामले में भी हमारा देश निरंतर आगे बढ़ रहा है। खेलों में भी हमारा देश आगे बढ़ रहा है, लेकिन बहुत से लोगों को यह भी शायद पता नहीं होगा कि इस बार एशियन चैंपियंस ट्रॉफी में हमारे देश की पुरुष हॉकी टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए यह ट्राफी अपने नाम कर देश का मान बढ़ाया। इस ट्राफी में हमारे देश की टीम की चौथी बार जीत है। सरकारों को राष्ट्रीय खेल में देश को नम्बर एक बनाने के लिए भरपूर प्रयास करने चाहिए। इस खेल के खिलाड़ियों को विशेष सुविधाएं देनी चाहिए। सरकार की अनदेखी के कारण हमारे देश के बहुत से लोग यह भी नहीं जानते होंगे कि हॉकी हमारे देश का राष्ट्रीय खेल है। - *गुरुचरण सिंह चांवला, राजनांदगांव*

ट्रेंड

मिलकर काम करने को उत्सुक

थाविसिन को थाईलैंड के प्रधान मंत्री के रूप में आपके चुनाव पर हार्दिक बधाई। मैं भारत-थाईलैंड द्विपक्षीय संबंधों को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए आपके साथ मिलकर काम करने को उत्सुक हूं।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

जिम्मेदारी लेनी चाहिए

कोई भी बच्चा तब तक अपनी जान लेने का फैसला नहीं करेगा जब तक कि उस पर असहनीय सामाजिक दबाव न डाला जाए-एक क्रूर वास्तविकता जिसके लिए हमें जिम्मेदारी लेनी चाहिए। शैक्षिक प्रणालियों को बच्चों को पूर्ण मानव बनने के लिए सशक्त बनाना चाहिए।

-सदगुरु, आध्यात्मिक गुरु

साफ नीयत का कमाल

सालों तक एमसीडी में बीजेपी की सरकार ने दिल्ली को कूड़ा कूड़ा किया। जब से एमसीडी में अरविंद केजरीवाल की सरकार बनी है तब से दिल्ली को सुंदर बनाने का काम तेजी से चल रहा है। ये होता है साफ नीयत और ईमानदारी का कमाल।

-राघव चड्ढा, आप सांसद

कोशिश करके देखो

बस एक दिन कोशिश करके देखो, आप कितने जीवन को छू सकते हैं, आप कितने आशीर्वाद गिन सकते हैं, आप कितनी मुस्कान ला सकते हैं। शायद आप इसे एक आदत बना लेंगे।

-हर्ष गोयनका, उद्योगपति

करंट अफेयर

पाक आतंकवाद के सामने घुटने नहीं टेकेगा : पीएम

पाकिस्तान के कार्यवाहक प्रधानमंत्री अनवारुल हक काकड़ ने 'तहरीक ए तालिबान पाकिस्तान' के हमले में छह सैनिकों के मारे जाने के एक दिन बाद बुधवार को कहा कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई जारी रहेगी और देश कट्टरवाद, चरमपंथ तथा असहिष्णुता के सामने घुटने नहीं टेकेगा। डॉन अखबार के अनुसार, काकड़ ने कराची में संबोधित करते हुए कहा, 'जिन लोगों को यह गलतफहमी है कि ऐसे हमले हमें झुका देंगे, उन्हें पता होना चाहिए कि हम अपने शहीदों और उनकी शहादत को कभी नहीं भूलेंगे।' अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में सुरक्षाबलों के एक काफिले पर तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के आतंकवादियों द्वारा कल किए गए

ऑफ बीट

बर्फीले अंटार्कटिक में होने वाले बदलाव परेशान करने वाले

अंटार्कटिका में इस शीत ऋतु की ज्यादातर समुद्री बर्फ गायब है, एक महत्वपूर्ण समुद्री धारा की गति धीमी हो रही है, और ग्लेशियर तथा बर्फ की चट्टानें विघटित हो रही हैं। भूमि पर, नाजुक काई के पारिस्थितिकी तंत्र का तेजी से क्षरण हो रहा है। संभव है कि आने वाले समय में हिम इलाकों के 'सम्राट'' पेंगुइन विलुप्त हो जाएं। कुल मिलाकर अंटार्कटिका में मानव गतिविधि से उत्पन्न प्रदूषण ने एक जहरीली विरासत छोड़ दी है। यह लगभग तय है कि चीज़ें बदतर होंगी। सैकड़ों अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिकों ने उभरते जलवायु संकट के जवाब में दक्षिणी महासागर विज्ञान के तत्काल विस्तार का आह्वान किया। इससे इस वैज्ञानिक दावे को बल मिलता है

संक्षेप

सुल्तानपुर में थाने के चौकीदार ने खोली दरोगा-सिपाही की पोल

विभागीय पत्र बताकर तहरीर पर लिया था हस्ताक्षर, दर्ज करावा दिया मुकदमा

सुलतानपुर, सुल्तानपुर में दरोगा और सिपाही किस तरह से फजीर्वाड़ा करते हैं विभाग के चौकीदार ने इसका पदार्फाश किया है। स्थानीय चौकीदार को विभागीय पत्र बताकर वदीर्धारियों ने हस्ताक्षर कर लिया और माफियाओं के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर दिया। अपना गला फंसा देख चौकीदार ने न्याय की गुहार लगाई है। सोशल मीडिया पर वायरल चौकीदार का ऑडियो खाकी की करतूत की पोल खोल रहा है। कुड़वार थाना अंतर्गत कटमा ग्राम पंचायत में 18 अगस्त को गोमती नदी के पुल पर बर्थडे पार्टी मनाई गई थी। अराजकतत्व द्वारा पुल पर केक काटा गया और असलहे का खुला प्रदर्शन किया गया। इसका वीडियो बनाया गया और सोशल मीडिया पर इसे बाकायदा वायरल किया गया। कुड़वार थाने के तत्कालीन प्रभारी रहे दरोगा विकास गौतम ने सिपाही को अपना सहयोगी बनाया और चौकीदार को विभागीय पत्र बताते हुए प्रार्थना पत्र पर हस्ताक्षर करा लिया। यह प्रार्थना पत्र दरोगा विकास गौतम और सिपाहियों द्वारा बनाए जाने की बात सामने आ रही है। जिस समय दस्तखत कराई गई। चौकीदार को मुकदमा दर्ज होने का प्रार्थना पत्र की बात नहीं बताई गई। बर्थडे पार्टी मनाने के मामले में दिलीप कुमार, धर्मेंद्र निषाद, संदीप निषाद के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत किया गया है।

अयोध्या में झमाझम बारिश, रामपथ पर भरा पानी

सरयू नदी का जलस्तर खतरे के निशान से 11 सेमी ऊपर; बाढ़ का अलर्ट जारी

अयोध्या, अयोध्या में शुक्रवार मूसलाधार बारिश हुई। 62.8 मिमी बारिश से शहर से लेकर गांव तक पानी ही पानी नजर आ रहा है। खेतों और गड्ढे बारिश के पानी से भर गए। राम नगरी के कई कालोनियों के सड़कों और पार्कों में भी बारिश का पानी भर गया है। बारिश से सबसे अधिक किसान खुश नजर आ रहे है। क्योंकि यह सीजन में सबसे अच्छी बारिश है। मौसम विभाग ने आगामी 24 घंटे में तक बारिश का दौर जारी रहेगा। वहीं सरयू नदी का जल स्तर एक बार फिर खतरे के निशान का पार कर गया है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में मानसून पूरी तरह सक्रिय बना हुआ है। गुरुवार देर रात 11 बजे से ही गोंडा, बस्ती, अयोध्या, अंबेडकरनगर समेत कई जनपदों में बूंदाबांदी शुरू हो गई। शुक्रवार सुबह होते ही बूंदाबांदी मूसलाधार बारिश के रूप में तब्दील हो गया। लगातार करीब 5 घंटे की बारिश ने शहर से लेकर गांव तक पानी ही पानी कर दिया। हालांकि खबर लिखे जाने तक बूंदाबांदी जारी है। आचार्य नरेंद्र कृषि प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मौसम विभाग मौसम वैज्ञानिक डॉ सीता राम मिश्र के अनुसार अयोध्या जिले में करीब 62.8 मिमी रिकॉर्ड की गई। जो इस मौसम की सबसे अच्छी बारिश है। आगामी 24 घंटों में जिले में छुटपुट बारिश की संभावना है।

सांसदों के आवास पर घंटी बजाकर अटेवा ने किया ओपीएस बहाली की मांग

पुरानी पेंशन बहाली के लिए अटेवा ने दिया सांसद को ज्ञापन

अमन लेखनी समाचार

बहराइच, बहराइच। पुरानी पेंशन बहाली के लिए लगातार संघर्षरत संगठन अटेवा ने अपने प्रांतीय नेतृत्व के निर्देश पर जनपद बहराइच के सांसद के आवास पर घंटी बजाकर पुरानी पेंशन बहाली की मांग की।अटेवा बहराइच के संयोजक संदीप वर्मा के नेतृत्व में अटेवा के पदाधिकारी एवं जिले के पेंशन विहीन साथियों ने बहराइच लोकसभा के सांसद अक्षयवरलाल गौड़ के बहराइच स्थित आवास पर पुरानी पेंशन बहाली के लिए ज्ञापन सौंपा। सांसद श्री गौड़ ने अटेवा के साथियों को आश्वासन दिया की पुरानी पेंशन बहाली के लिए भारत सरकार को पत्र लिखूंगा और मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश को भी पत्र लिखूंगा। इस मौके पर जिला महामंत्री राकेश कुमार मौर्य ने बताया कि देश के एक करोड़ से अधिक शिक्षक,कर्मचारी व अधिकारी पुरानी पेंशन से वंचित हैं। पेंशन बिहीन अधिकारी - कर्मचारी परिवार सहित पुरानी पेंशन के लिए सड़क से संसद तक मजबूत लड़ाई लड़ते रहेंगे। फार्मासिस्ट विभाग (चिकित्सा) के जिला अध्यक्ष सुमुख पाठक ने बताया कि उनका संगठन पुरानी पेंशन की मांग के लिए अटेवा के साथ मिलकर लगातार संघर्ष करता रहेगा और आगामी 17 सितंबर 2023 को अटेवा के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय कुमार बन्धु के बहराइच आगमन व 1 अक्टूबर को दिल्ली में आयोजित पेंशन शंखनाद रैली में जिले के चिकित्सा विभाग के सभी कर्मचारी प्रतिभा करेंगे जो पेंशन बहाल करेगा वही देश पर राज करेगा। आज के इस कार्यक्रम में चिकित्सा विभाग के अजीत उर रहमान ,अर्जुन सिंह ,राजस्व विभाग के रोहित शुक्ला,सफाई कर्मचारी विभाग के प्रदीप वर्मा शिक्षा विभाग के प्रदीप तिवारी, श्यामानंद यादव,विपिन कुमार साहू,अजय मल्होत्रा,मणिकांत मिश्रा,रघुकुल शिरोमणि, मिथिलेश यादव,बृजेंद्र यादव, ऋषिकेश मिश्रा,जनार्दन गुप्ता, सतविंदर सिंह,राकेश कुमार, देवशरण, अमन वर्मा,राजीव कुमार वर्मा,योगेश गुप्ता, प्रकाश गुप्ता,रखम चौधरी,सोमेश मौर्य, अमन वर्मा मौजूद रहे।

अवैध पटाखा कारोबारी के घर में हुआ विस्फोट, मकान हुआ धराशाई

थाना मोतीपुर के ग्राम पंचायत गायघाट का मामला

अमन लेखनी समाचार/मिथिलेश जायसवाल

मोतीपुर, बहराइच। थाना मोतीपुर के ग्राम पंचायत गायघाट में आबादी के बीच में बने मकान में अवैध पटाखे से रात लगभग 3 बजे के आसपास भीषण विस्फोट हुआ। जिसमें पूरा मकान धराशाई हो गया। ज्ञात हो कि गायघाट निवासी अमीर हसन की मौत काफी पहले हो चुकी है। उनकी दो बेटियां चुमनी बेगम, नसीमुन और उनकी पुत्री रोशनी इस मकान में रहती है। उसी मकान में गोला बारूद बनाने का अवैध कारोबार चल रहा था। 26/27 अगस्त की रात लगभग 3 बजे स्वर्गीय अमीर हसन के घर में अज्ञात कारणों से भीषण विस्फोट होने लगा। आसपास के लोग इस भीषण विस्फोट के कारण घरों से बाहर निकल आए। आसपास के लोगों ने बताया की लगभग 1 घंटे तक विस्फोट होता रहा। जिसके कारण पूरा मकान जमींदोज हो गया। घटनास्थल से महज 500 मीटर की दूरी पर अस्थाई पुलिस चौकी स्थित है लेकिन इसकी भनक पुलिस को भी नहीं लगी। लेकिन ईश्वर की कृपा से जनहानि होने की कोई खबर नहीं है। पास पड़ोस के लोगों ने बताया कि यह लोग अवैध रूप से लम्बे समय से गोला बारूद बनाने का काम करते थे। जबकि घर में रहने वाली महिला नसीबुन का कहना है कि मकान जर्जर हालत में था। घर में पटाका रखा हुआ था। अचानक मकान गिरने की वजह से पटाके में विस्फोट हुआ है। जबकि इन महिलाओं के पास गोला बनाने या बेचने का कोई लाइसेंस नहीं था। जानकारी के अनुसार मुबारक अली के पास गोला बारूद बनाने का लाइसेंस है। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस पूरे मामले की जांच करने में जुटी है। प्रभारी निरीक्षक मोतीपुर श्रीधर पाठक ने बताया कि मकान जर्जर था जिससे धराशाई हो गया। उसमें पटाखे रखे हुए थे जांच की जा रही है। पटाखा लाइसेंस धारक मुबारक पर मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही की जायेगी।

राष्ट्रीय कार्यक्रम में सीएचसी चरदा को प्राप्त हुआ प्रथम स्थान

अमन लेखनी समाचार

बाबागंज, बहराइच। सीमावर्ती विकास खंड नवाबगंज में केंद्र व राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही दर्जनों राष्ट्रीय कार्यक्रम में जनपद बहराइच में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चरदा कों प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। मिली जानकारी के मुताबिक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चरदा में जनपद व राज्य स्तरीय टीम द्वारा निरीक्षण किया गया था जिसमें अस्पताल में रख रखाव, स्वच्छता एवं साफ सफाई, प्रबंधन, संक्रमण नियंत्रण सहित अन्य योजना व व्यवस्था जमीनी धरातल पर चाक-चौबंध मिली। जहां कहीं थोड़ी बहुत कमियां थी उसमें सुधार किया गया ।जिसका परिणाम आज सभी के सामने है। बीते शनिवार जिला मुख्यालय पर हुए सम्मान समारोह में राष्ट्रीय कार्यक्रमो के शतप्रतिशत क्रियान्वयन में स्वास्थ्य केंद्र चरदा को प्रथम स्थान प्राप्त होने पर जिलाधिकारी बहराइच द्वारा अधीक्षक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चरदा डॉ आरएन वर्मा व ब्लाक कार्यक्रम प्रबंधन अबु स्वाले सिद्दीकी को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए सीएचसी अधीक्षक सहित समस्त स्टाफ व विभाग को बधाई दी और भविष्य में इसी तरह के कार्य प्रदर्शन की उम्मीद जताई। इस मौके पर डॉ आरएन वर्मा ने कहा कि यह सम्मान मरीजों के साथ स्टॉफ का सकारात्मक व्यवहारव समस्त स्टाफ के आपसी सहयोग की वजह से प्राप्त हुआ है। सम्मान मिलने से जिम्मेदारियां और बढ़ गई। इस मौके पर स्वास्थ्य पर्यवेक्षक हरीराम आर्या उपस्थिति रहे।

पुलिस ने विभिन्न स्थानों से 13 वारंटियों को किया गिरफ्तार

थाना प्रभारी श्रीधर पाठक की कार्यवाही से क्षेत्र में मचा हड़कंप

अमन लेखनी समाचार

मोतीपुर, बहराइच। पुलिस अधीक्षक द्वारा वांछित व वारन्टी अपराधियो के गिरफ्तारी के संबंध में दिये गये निर्देश के संबंध में प्रभारी निरीक्षक श्रीधर पाठक के कुशल नेतृत्व में गठित टीम द्वारा थाना क्षेत्र से 13 नफर वारन्टी अभियुक्तगणों को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया व गिरफ्तार अभियुक्तों में तेजी पुत्र जीमींदार, कून्नू पुत्र तेजी निवासी गण लालपुर चादांझार,बादू उर्फ बाबू पुत्र मंगरे निवासी कुड़वा, गुड्डू पुत्र कुंवारे,प्यारे पुत्र श्रीपाल,गोले यादव पुत्र रामबली,नेटू पुत्र सुकई निवासी गण पृथ्वीपुरवा झाला, सोनू पुत्र जलील निवासी गायघाट, सालिकराम पुत्र सीताराम निवासी रानीपुर, ऐनुल उर्फ मुस्तकीम पुत्र मस्तान निवासी रानीपुर भट्ठा गायघाट, बांके पुत्र पुसू निवासी सिक्खापुरवा अड़गोडवा, कम्पू पुत्र सियाराम निवासी दौलतपुर। बुधराम पुत्र गोले निवासी बरूही शाहपर खुर्द थाना मोतीपुर जनपद बहराइच शामिल हैं। गिरफ्तारी करने वाली टीम दरोगा विजय कुमार,देवेन्द्र प्रताप यादव,हरिद्वार तिवारी, राघवेन्द्र सिंह, लालप्रताप सिंह ,दिवान रामअशीष वर्मा, कंचन कुमार,उमाशंकर त्रिपाठी, रामानन्द यादव,स्वामीनाथ, सिपाही अंशुमान सिंह रामनिवास यादव, अजय शुक्ला,पवन यादव, महेन्द्र सिंह, जितेन्द्र गुप्ता,गौरव गौड़ रोहित शर्मा, गौरव कुमार अभिषेक चौरसिया शामिल रहे।

मुर्तिहा पुलिस ने 20 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ एक को दबोचा

अमन लेखनी समाचार

मोतीपुर, बहराइच। थाना कोतवाली मुर्तिहा अंतर्गत दिन रविवार को अपराध व वाछिंत अपराधियो के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम मे पुलिस अधीक्षक बहराइच प्रशांत वर्मा ,अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण,क्षेत्राधिकारी नानपारा/ मिहीपुरवा के निर्देशन में थानाध्यक्ष शशि कुमार राणा थाना को0 मुर्तिहा जनपद बहराइच के कुशल नेतृत्व मे मुख्य आरक्षी धीरेन्द्र प्रताप सिंह व आरक्षी देवेन्द्र कुमार द्वारा क्षेत्र भ्रमण के दौरान घटनास्थल बोझिया नहर पुल के पास से अभियुक्त रामप्रसाद पुत्र भगौती उम्र करीब 37 वर्ष निवासी मझावं कालोनी थाना मोतीपुर जनपद बहराइच को एक प्लास्टिक की पिपिया मे 20 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही की गयी।

निकरा परियोजना के अंतर्गत वीसीआरएमसी की बैठक हुई संपन्न

अमन लेखनी समाचार

बहराइच।रविवार को कृषि विज्ञान केंद्र बहराइच प्रथम पर संचालित निकरा परियोजना के अंतर्गत अच्छादित गांव जब्दी विकासखंड तेजवापुर मे वीसीआरएमसी (विलेज लेवल क्लाइमेट रिस्क मैनेजमेंट कमेटी) की की बैठक आयोजित की गई जिसमे आने वाली बाढ़ की आशंकाओं व आकस्मिक योजनाओं पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ के. एम. सिंह, ने बताया कि किसान खरीफ मक्का के स्थान पर रबी मक्का की बुवाई करें, जिससे किसानों को अधिक आय प्राप्त होगी एवं उत्पादन अच्छा मिलेगा। वैज्ञानिक डॉ नीरज सिंह नहीं बताया कि किसानों को अपने खेत उत्पादित हो रहे धान को एल.सी.सी. स्केल से देखकर खेत में यूरिया का प्रयोग करें। व परियोजना में कार्यरत यंग प्रोफेशनल कुशाग्र सिंह के साथ वरि वैज्ञानिक, डॉ नीरज ने कृषको के प्रक्षेत्र का भ्रमण भी किया गया। बैठक में गांव के कृषकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा वरिष्ठ वैज्ञानिक को अपनी समस्याओं से अवगत कराया। बैठक में लालजी, संपता, गुड्डू, रीना देवी, मनीषा, ओमकार, सर्वजीत आदि कृषक उपस्थित थे।

पुलिस ने नौ वारंटी अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

अमन लेखनी समाचार

मोतीपुर, बहराइच। पुलिस अधीक्षक प्रशांत वर्मा के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे हैं अभियान में थाना कोतवाली मुर्तिहा के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में फरार चल रहे नौ वारंटी अभियुक्तों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। गिरफ्तारी के बाद अभियुक्तों को न्यायालय भेजा गया है। गिरफ्तार होने वालों में अभियुक्त गुड्डू पुत्र संतराम उम्र 38 वर्ष नि0 खैरी चुरवा, जाकिर पुत्र साबिर पठान उम्र 55 वर्ष नि0 धमार्पुर दा0 ओरई पुरवा, रामचन्दर पुत्र छत्रपाल उम्र 48 वर्ष नि0 लोनियन पुरवा दा0 मंझरा,लल्लू पुत्र मगनबिहारी उम्र 35 वर्ष नि0 मझरा, रामानन्द पुत्र बुद्धू उम्र 49 वर्ष नि0 राम बचन पुरवा दा0 मझरा, पेशकार पुत्र चुन्नू उम्र 45 वर्ष नि0 पसियन कुट्टी मधवापुर, दत्ता पुत्र मैकू उम्र 48 वर्ष नि0 निबियापुरवा दा0 सेमरी घटही, दन्नू यादव पुत्र गोकरन यादव उम्र 50 वर्ष नि0 प्रतापपुर जंगल मटेरा, दिलीप कुमार पुत्र भोले उम्री 30 वर्ष नि0 प्रतापपुर जंगल मटेरा, सभी अभियुक्त थाना कोतवाली मुर्तिहा क्षेत्र निवासी है। गिरफ्तारी करने वाली टीम में उप निरीक्षक सुशील कुमार सत्यनारायण अनिल यादव शंभू नाथ सिंह अजय सिंह, हेड कांस्टेबल राममिलन यादव आशीष कुमार यादव विनोद कुमार दीपचंद कुलदीप बाबू नंदन,सिपाही प्रेम प्रकाश हेमंत कुमार अरविंद चौरसिया धर्मेंद्र कुमार हरी प्रताप दीपक कुमार राहुल सरोज शामिल रहे।

सितम्बर में प्रस्तावित अपना दल (एस) का जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मलेन

अमन लेखनी समाचार

बाबागंज, बहराइच। आगामी 4 सितम्बर कों अपना दल (एस) के जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मलेन कों भव्य व ऐतिहासिक बनाने हेतु शनिवार कों बहराइच व श्रावस्ती जनपद के सभी पदाधिकारियों ने प्रस्तावित कार्यक्रम की रूप रेखा तय करने हेतु जिलाध्यक्ष गिरीश पटेल की अध्यक्षता में डाक बंगला बहराइच में समीक्षा बैठक की। बैठक में विधायक नानपारा व नेता विधान मंडल अपना दल (एस) राम निवास वर्मा, राष्ट्रीय महासचिव आरवी सिंह, प्रदेश सचिव युवा मंच संजीव सिंह राठौर, विधानसभा अध्यक्ष पेशकार पटेल, जिला सचिव प्रमोद चौधरी, श्रावस्ती जिलाध्यक्ष महेंद्र पटेल, राष्ट्रीय महासचिव बौद्धिक मंच अर्जुन सिंह पटेल, प्रदेश सचिव विधिक मंच संदीप कुमार, ओम प्रकाश पटेल, युवा नेता सौरभ वर्मा सहित अन्य पदाधिकारियों ने प्रस्तावित वन सरिता रिसोर्ट कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया। इस मौके पर विधायक नानपारा श्री वर्मा ने बताया कि अपना दल (एस) का 4 सितम्बर कों जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मलेन में बतौर मुख्यअतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री व राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल व कैबिनेट मंत्री आशीष सिंह पटेल उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्रों में संगठन कों धार देने एवं हर बूथ तक अपनी पकड़ मजबूत करने के उद्देश्य से कार्यक्रम में शामिल होंगे।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में चयनित हुए बहराइच जिले के शिक्षक

चतुर्थ कला, क्राफ्ट व पपेट्री प्रतियोगिता में प्राथमिक व जूनियर वर्ग में बेसिक शिक्षको का हुआ चयन

अमन लेखनी समाचार/संतोष मिश्रा

बहराइच। परिषदीय शिक्षकों में शिक्षण की कला-निपुणता में सतत वृद्धि व उसकी परख के लिए बेसिक शिक्षा विभाग निरंतर प्रयासरत है। गत माह राज्य शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद लखनऊ द्वारा छात्रों में शिक्षा सम्बन्धी परिणाम यानी लर्निंग व आउटकम की सम्प्राप्ति से सम्बंधित शिक्षको की राज्य स्तरीय कला, क्राफ्ट पपेट्री प्रतियोगिता में विज्ञान, गणित तथा भाषा विषय पर शून्य निवेश द्वारा प्रदर्शित मॉडल्स के साथ प्रस्तुतीकरण देने वाले जनपद के 4 शिक्षको का चयन अनंतिम रूप से किया गया है। डायट पयागपुर प्रवक्ता ने इस सम्बंध में बताया कि प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र छात्राओं को टीएलएम की सहायता से पढ़ाने पर अधिगम आसान व अधिक स्थाई हो जाता है। प्रतियोगिता में प्राथमिक स्तर पर भाषा व गणित तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित व विज्ञान विषय के लिए कला, क्राफ्ट वर्क व पपेट द्वारा वेस्ट मेटेरियल व न्यूनतम लागत से निर्मित टीएलएम से छात्रों को सिखाने की कक्षा शिक्षण गतिविधि का प्रस्तुतीकरण किया गया। इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल द्वारा प्रदेश के विभिन्न जनपदों से प्रतिभाग करने वाले 800 से अधिक शिक्षको में से चतुर्थ चरण के लिए अनंतिम रूप से 290 का चयन किया गया। जिसमे जिले से 4 शिक्षको का चयन हुआ है। अब आगामी 12 से 15 सितंबर को लखनऊ में एससीआरटी निशातगंज में ऑफलाइन माध्यम से फाइनल प्रतियोगिता में ये सभी शिक्षक अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। उधर, डायट प्राचार्य उदयराज जी ने उम्मीद जताई कि राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में शिक्षक अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन कर अंतिम रूप से चयनित होकर जिले का नाम रोशन करेंगे। प्रतियोगिता के फाइनल राउंड के लिए प्राथमिक स्तर भाषा विषय - दीपांजलि वर्मा (प्राथमिक विद्यालय बहबोलिया महादा रिसिया), प्राथमिक स्तर गणित विषय- विनोद कुमार (प्राथमिक विद्यालय भकुरहा शिवपुर), उच्च प्राथमिक स्तर विज्ञान विषय- नवल कुमार पाठक (उच्च प्राथमिक विद्यालय परसिया आलम पयागपुर), उच्च प्राथमिक स्तर गणित विषय- प्रेम सिंह (उच्च प्राथमिक विद्यालय नेजाभार विशेश्वरगंज) का चयन हुआ है।

गेरुआ नदी को नमामि गंगे योजना से जोड़कर सफाई की उठी मांग

कतर्नियाघाट फ्रेंड्स क्लब अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री व जिलाधिकारी को लिखा पत्र

अमन लेखनी समाचार

बहराइच। पहाडों पर वनों के कटने और वर्ष 1993 में कतर्नियाघाट वन्य जीव प्रभाग बहराइच सैंक्चुरी घोषित हो जाने के बाद पानी के साथ बहकर आने वाले पत्थरों की निकासी बंद हो जाने के कारण गेरुआ नदी में गाद जमा होती जा रही है, जिस कारण गेरुआ नदी की गहराई कम होती जा रही है और नदी में गाद के बड़े बड़े टीले बनते जा रहे हैं, जिससे गेरुआ नदी का अस्तित्व संकट में पड़ गया है। इस समस्या के समाधान के लिए कतर्नियाघाट फ्रेंड्स क्लब की ओर से उत्तर प्रदेश सरकार को पत्र भेजा गया, पूर्व जिलाधिकारी बहराइच डा० दिनेश चंद्र की अध्यक्षता में हुई जिला गंगा समिति की बैठक में ज्ञापन सौंपा, लेकिन कुछ नहीं हुआ। कतर्नियाघाट फ्रेंड्स क्लब की ओर सें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से माँग है कि गेरुआ नदी को नमामि गंगे योजना से जोड़कर इस समस्या का समाधान किया जाय नहीं तो गेरुआ नदी का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा और इस नदी में जीवन पाने वाले जलीय जीव गैन्जेटिक डाल्फिन, घड़ियाल, उदबिलाव, मगरमच्छ और महाशेर मछली सब खत्म हो जायेंगे। कतर्नियाघाट फ्रेंड्स क्लब बहराइच के अध्यक्ष बी डी लखमानी ने कहा कि क्लब की ओर से इस संबंध में पुनः मुख्य मंत्री को पत्र भेजा गया है।

अंतरराष्ट्रीय खेल सत्र के दौरान एसएसबी कर रही विभिन्न खेलो का आयोजन

अमन लेखनी समाचार/संतोष मिश्रा

बहराइच। 42वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल बहराइच-क के अधीन सभी सीमा चौकीयों में कार्यवाहक कमांडेंट अनिल कुमार यादव के कुशल निर्देशन में अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में खेल सत्र दिनांक 18.08.23 से 29.08.23 के अंतर्गत आयोजन किया जा रहा है जिसमे एसएसबी के जवान तथा सीमावर्ती जनता विभिन्न खेलो में बड़ चढ़ कर प्रतिभाग कर रही है। बीते शनिवार को खेल स्पर्धा को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से सीमा चौकी रूपईडीहा तथा सीमा चौकी मुंशी पुरवा के जवानों के बीच वॉलीबॉल मैच का आयोजन किया गया जिसमें। मैच 25 -25 गेम पॉइंट के साथ शुरूआती समय से बेहतर खेलते हुए सीमा चौकी रूपईडीहा के जवानों ने मुंशी पुरवा की टीम को तीन जीरो से पराजय कर खेल अपने नाम कर लिया। हालांकि उपस्थित ग्रामीण एव जवानों को संबोधित करते हुए मुंशीपुरवा कंपनी कमांडर सहायक कमांडेंट राजुवोई चकेसंग ने बताया कि खेल जीवन के लिए महत्वपूर्ण है तथा विभिन्न खेलों से ही हमारे जीवन में निखार आता है। संघर्ष और सहनशीलता की भावना का संचार होता है। कई बीमारियां जीवनशैली से जुड़ी होती हैं, जिन्हें कुछ शारीरिक गतिविधियों जैसे व्यायाम से दूर किया जा सकता है। इससे दिल का दौरा पड़ने की संभावना कम हो जाती है। यह स्ट्रोक, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, स्तन कैंसर, हड्डी के फ्रैक्चर, पित्ताशय की बीमारी, मोटापा, अवसाद और चिंता की संभावना को कम करता है।

संक्षेप

जहरीला पदार्थ खाने से युवक की मौत

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवां थाना क्षेत्र के ग्राम सभा हासपाटी निवासी युवक मार्कंडेय तिवारी की इलाज के दौरान मेडिकल कॉलेज में रविवार की भोर में मौत हो गई है। वह बीते शनिवार की शाम घर पर जहरीला पदार्थ खा लिया थे। मृतक के पास एक बेटा और बहू है, जो सभी अलग रहते हैं। घर में किसी बात को लेकर कई महीनों से कलह चल रहा था। मेडिकल कॉलेज पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

बागपत के 22 गांव में बनकर तैयार हुए आरआरसी सेंटर

गांव को स्वच्छ रखने के लिए चलाया जा रहा अभियान, कूड़े का होगा सही इस्तेमाल

बागपत, बागपत में स्वच्छता अभियान के दौरान आरआरसी सेंट्रो का निर्माण कराया जा रहा है। जनपद भर में 22 आरआरसी केंद्र बनकर तैयार हो गए हैं, जिनमें गांव का गीली और सूखा कूड़ा एकत्रित किया जा रहा है। जल्द ही जनपद भर के सभी गांव में आरआरसी केंद्र बनकर तैयार हो जाएंगे। उत्तर प्रदेश के बागपत में स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के लिए गांव में आरआरसी केंद्रों का निर्माण कराया जा रहा है। जिले भर के करीब 22 गांव में आरआरसी केंद्र बनकर तैयार हो गए हैं। बागपत जनपद के सभी 242 ग्राम पंचायत में जल्द ही आरआरसी केंद्र बनकर तैयार हो जाएंगे। इनमें गांव का गीला और सूखा कूड़ा एकत्रित किया जा रहा है। गांव के प्रत्येक घर से कूड़ा इकट्ठा कर आरआरसी सेंटर में इकट्ठा किया जाता है। गांव में स्वच्छता अभियान को लेकर यह एक अनोखी पहल है और इकट्ठा हुए कूड़ा करकट का सही इस्तेमाल करने के लिए आरआरसी केंद्र बना दिए गए हैं। डीपीआरओ अमित त्यागी ने बताया कि जनपद भर में आरआरसी केंद्र बनाए जा रहे हैं जिन पर जिला सूखा कूड़ा इकट्ठा होगा और गांव को स्वच्छ रखा जा सकेगा।

मेरठ में पुलिस की गोकशों से हुई मुठभेड़

पैर में गोली लगने से एक हुआ घायल, तीन गिरफ्तार

सरधना, मेरठ के सरधना थाना क्षेत्र में पुलिस की देर रात गोकशों से मुठभेड़ हो गयी। मुठभेड़ में एक गोकश गोली लगने से घायल हो गया। पुलिस ने घायल गोकश सहित तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। वहीं एक गोकश अंधेरे का फायदा उठाकर भागने में सफल रहा। आपको बता दें कि गुरुवार देर रात लगभग ढाई बजे सरधना पुलिस को गश्त के दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि ग्राम नंगला आर्डर के जंगल में कुछ गोकशों ने काटने के लिए एक गाय बांध रखी है। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची तो गोकश गाय को लिटाकर काटने की तैयारी में थे। वहीं पुलिस को देख गोकशों ने फायरिंग शुरू कर दी। गोकशों की फायरिंग में एक गोली उपनिरीक्षक नैपाल सिंह की बुलेट प्रूफ जैकेट में जा लगी।

डॉ० सुधीर गुप्ता ने किया प्रेस वार्ता

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। रविवार को प्रेस वार्ता कर डॉ० सुधीर गुप्ता (भूतपूर्व एसोसिएट प्रोफेसर स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग, बी०आर०डी० मेडिकल कॉलेज गोरखपुर) ने बताया की अपने निजी कारणों से मेडीकल कॉलेज विगत कुछ माह पूर्व त्यागपत्र दे कर छोड़ चुके हैं और अब पूर्ण रूप से अपनी चिकित्सकीय सेवाएं ग्रीनलैण्ड हॉस्पिटल, करीमनगर, चरगावां, गोरखपुर में दे रहें हैं। उनके साथ ग्रीनलैण्ड हॉस्पिटल के निदेशक डॉ० डी०के० गुप्ता (टर सर्जन) व डॉ० विजय रंजन (टऊ मेडसिन) ने करीमनगर रोड पर स्थित एक रेस्टोरेंट में आयोजित पत्रकार वार्ता में कहा कि। हमारा यह शुरू से विचार था कि अपने गोरखपुर शहर में एक ऐसी चिकित्सा व्यवस्था की रचना तैयार की जाए जिसमें एक ही छत के नीचे सारी सुविधाएं मौजूद हों और आम नागरिक पर उसका बहुत आर्थिक भार भी ना पड़े, इस क्रम में आने वाले कुछ ही महीने में गोरखपुर में एक ऐसे अस्पताल की रूपरेखा तैयार हो रही है जिसमें सभी रोगों के विभाग एवं सभी प्रकार की जांचों की सुविधायुक्त अत्याधुनिक तकनीक और मशीनों से युक्त एक मल्टी सुपर स्पेशलिटी अस्पताल तैयार हो रहा है। डॉ० डी०के० गुप्ता ने बताया कि इस अस्पताल के बन जाने से लोगों को अब लखनऊ, दिल्ली और मुंबई जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, बड़े कॉरपोरेट जैसे अस्पतालों की सुविधा, न्यूनतम आर्थिक रूप में अब अपने महानगर गोरखपुर में भी जल्द ही मिलनी शुरू हो जाएगी। खासकर निःसंतान दंपतियों के लिए विषेश प्रकार की (आई वी एफ) सेवा शुरू होगा, जिससे उनका जीवन खुशियों से भर जाएगा और सुनी पड़ी गोद बच्चे की किलकारी से गुलजार हो जाएगा। सुपर एक्सपर्ट डॉक्टर्स, नर्सिंग स्टॉफ और टेक्नीशियन की टीम के साथ यह हॉस्पिटल 24 घंटे इमरजेंसी सर्विस देने के लिए उपलब्ध रहेगा। विशेषकर निर्धन और गरीबों के ईलाज निःशुल्क करेगा। इस हॉस्पिटल से समाज के हर तबके को बहुत लाभ मिलेगा। साथ ही साथ इस अस्पताल के खुलने से, रोजगार पैदा होगा जिससे क्षेत्रीय युवाओं को भी बहुत लाभ मिलेगा की वह अपनें ही गृह जनपद में ही अच्छे वेतन पर कार्य कर सकेंगे। इसी क्रम में डॉ० विजय रंजन ने कहा कि, चिकित्सकीय पेशा एक बहुत ही धैर्य का पेशा होता है, जिसमें सर्व समाज के सुखी होने की अवधारणा सर्वोपरि होती है। हमारे किए कार्य से किसी के जीवन में अगर खुशियां वापस लौट आती हैं तो हम लोगों के लिए इससे बड़ा कोई सुख नहीं होता है। इसी सेवा भाव को ध्यान में रखते हुए इस अस्पताल की रूपरेखा तैयार हुई है।

कूटरचित करेंसी का असली के रूप में प्रयोग करने, प्रतिरूपण द्वारा धोखाधड़ी व गबन के आरोप में चार अभियुक्त गिरफ्तार

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद गोरखपुर द्वारा धोखाधड़ी व टप्पेबाजी के अपराधों पर अंकुश लगाने व अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में, पुलिस अधीक्षक दक्षिणी गोरखपुर के मार्गदर्शन में, क्षेत्राधिकारी खजनी के पर्यवेक्षण में व प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार थाना खजनी, निरीक्षक मधुपनाथ मिश्रा प्रभारी एसओजी के नेतृत्व में प्रभारी स्वाट उ0नि0 सूरज सिंह, सर्विलांस सेल टीम व थाना खजनी पुलिस टीम द्वारा मुखबीर खास की सूचना पर थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0 316/2023 धारा 419,420,406,120बी भादवि से सम्बंधित 01. दीपक कुमार पुत्र देवी प्रसाद हरिजन ग्राम टिकरी बुजुर्ग थाना बांसगांव जनपद गोरखपुर 02. रतन लाल चौहान पुत्र मोतीलाल चौहान निवासी पीड़िया थाना बांसगांव जनपद गोरखपुर 03. संदीप यादव पुत्र दीनानाथ यादव निवासी ग्राम कटवर थाना बांसगांव जनपद गोरखपुर 04. राजेन्द्र यादव पुत्र रामसरन यादव निवासी कठैइचाबिन्दन थाना खजनी जनपद गोरखपुर को 10 लाख 85 हजार रुपया नकद, 01 बण्डल 500 के नोट जिसमें बाहरी छोर पर असली नोट व आगे-पीछे बीच में चिल्ड्रेन बैंक ऑफ इंडिया के नोट, 01 बण्डल 200 के नोट जिसमें बाहरी छोर पर असली नोट व आगे-पीछे बीच में चिल्ड्रेन बैंक ऑफ इंडिया के नोट, दो अदद पीली धातु के सिक्के, 500 रुपए का एक व 100 रुपए के दो नकली नोट, 05 अदद मोबाइल व घटना में प्रयुक्त 03 मोटर साईकिल के साथ गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार मुकदमा उपरोक्त में धारा 411, 489ख, 489ग भादवि की बढोत्तरी की गई। अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में सिखाने और सीखने के तरीके में क्रांति लाने की क्षमता

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद कॉलेज) में रविवार को अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित आईआईटी, बीएचयू के प्रोफेसर (डॉ.) एसके सिंह ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विभिन्न पहलू पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में सिखाने और सीखने के तरीके में क्रांति लाने की क्षमता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रौद्योगिकी का उपयोग करके, शिक्षक प्रत्येक छात्र के लिए निर्देश को निजीकृत कर सकते हैं। तत्काल प्रतिक्रिया प्रदान कर सकते हैं और सीखने की सामग्री को एक विस्तृत विविधता प्रदान कर सकते है। चिकित्सा, शिक्षा सहित सभी क्षेत्रो में इसका इस्तेमाल सजगता से किया जाये तो यह विकास कि प्रक्रिया को शीघ्रता से आगे बढ़ा सकती हैं कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ एनएस एवं सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन आशीष चौधरी ने किया।

प्रधानमंत्री मन की बात का लाइव प्रसारण भाजपा कार्यकर्ताओं ने सुना

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवां तहसील अंतर्गत विकासखंड पाली क्षेत्र स्थित के ग्राम पंचायत बिडार में अपने घर पर ब्लाक प्रमुख शशि प्रताप सिंह और जिला अध्यक्ष युधिष्ठिर सिंह बिहार के मुगलसराय रोड़ भजौर जिला,जमुई, के बिहार में मन की बात कार्यक्रम में104 वा संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने चंद्रयान मिशन की सकुशल लैंडिंग के लिए वैज्ञानिकों एवं देश को बधाई देते हुए इस मिशन से जुड़ी महिला वैज्ञानिकों की कर्मठता को नमन करते किया। वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स में भारतीय खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन की चर्चा करते कहा कि हमारे युवा खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों में कुल रिकार्ड 26 पदक प्राप्त किया। भारत के 60 शहरों में लगातार आयोजित हो रहे जी-20 सम्मेलन की चर्चा करते हुए मोदी जी ने बताया की जिन-जिन शहरों में सम्मेलन आयोजित हो रहे हैं वहां की प्रमुख चीजों को विश्व के सामने लाया जा रहा है, जिसका सार्थक परिणाम दिखाई दे रहा है, कश्मीर में पर्यटकों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। महाराष्ट्र और मेघालय के दो विशिष्ट लोगों द्वारा क्रमशः शिलालेख और गुफाओं से संबंधित जानकारी एवं खोज की चर्चा करते हुए बताया कि किस प्रकार इन लोगों ने अपनी रुचि के आधार पर अपने लक्ष्य निर्धारित किए और एक नई खोज की। आजादी के अमृत काल में चलाए जा रहे हैं मेरी माटी मेरा देश अभियान के बारे में उन्होंने कहा कि सितंबर माह में प्रत्येक घर से मिट्टी एकत्र की जाएगी तथा दिल्ली लाकर देश के लिए बलिदान देने वाले लोगों की स्मृति में अमृत वाटिका का निर्माण कराया जाएगा।गुजरात की बनास डेरी का उदाहरण देकर समझाया किस प्रकार तकनीक का प्रयोग करके वस्तुओं को तेज गति से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचा जा रहा है, साथ ही साथ रक्षाबंधन की अग्रिम बधाई देते हुए प्रधानमंत्री जी ने अपनी बात समाप्त किया। कार्यक्रम अत्यंत ही प्रेरणादायक एवं उपयोगी रहा। मन की बात का कार्यक्रम लखीसराय रोड भजौर जिला- जमुई, बिहार प्रदेश जिला अध्यक्ष युधिष्ठिर सिंह सुना, बूथ नंबर नगर पंचायत अध्यक्ष प्रभाकर दुबे बूथ नंबर 20 पर बिड़ार ब्लॉक प्रमुख शशी प्रताप सिंह, त्र्यंबक उपाध्याय समेत समस्त कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी ने अपने अपने बूथ पर कार्यक्रम को सुना।

देश के सच्चे सपूत थे मेजर ध्यानचंद-प्रधानमंत्री

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवां तहसील अंतर्गत विकासखंड पाली क्षेत्र स्थित के नगर पंचायत घघसरा में मन की बात में रविवार को प्रधानमंत्री ने कहा कि मेजर ध्यानचंद देश के सच्चे सपूत थे। क्योंकि उन्होंने हिटलर के भारी प्रलोभन ठुकरा कर केवल अपनी भारत माता कि तरफ से खेलने को कहा। वह अपनी हाकी टीम के साथ जर्मनी को हरा कर देश नाम दुनिया में ऊंचा किये थे। प्रधानमंत्री ने खेल से लेकर देश के मेधावी छात्रों व वैज्ञानिकों की मेधा शक्ति को सलाम किया और कहा कि आज चंद्रयान श्री की सफलता ने देश का सिर दुनिया में ऊंचा किया है। देश और देश के सपूत वैज्ञानिकों को दुनिया भर से बधाईयां आ रही हैं। नगर पंचायत अध्यक्ष प्रभाकर दुबे की अध्यक्षता में आज भारी संख्या में लोग प्रधानमंत्री के मन की बात सुन रहे थे। कार्यकताओं को संबोधित करते हुए अध्यक्ष ने कहा कि- कामयाबी मिलने पर जो लोग अपने देश की सेवा में जीते है। हमेशा मान बढ़ाने की बात सोचते हैं। वह सच्चे अर्थों में मर कर भी अमर हो जाते हैं। देश उन्हें सदा याद रखता है। उक्त अवसर नगर पंचायत अध्यक्ष के अलावा, बिनोद कुमार पांडेय, रामजनक मौर्य, हरिकेश मौर्य, सोनू दुबे, सूर्य प्रकाश, संतोष पांडेय, राजू जयसवाल, श्रवण कुमार मद्धेशिया, राधेश्याम कसौधन, संतलाल, शिवा शंकर पाण्डेय ऊर्फ मोनू पाण्डेय, शिवम् सिंह, डा. नरेंद्र यादव, राजवंत, विकास सिंह समेत कई लोग मौजूद।

आशिर्वाद सेवा संस्थान की अध्यक्ष सिद्धि किन्नर की अध्यक्षता में निकाला गया कलश यात्रा

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सदर तहसील विकास खण्ड जंगल कौड़िया क्षेत्र स्थित के दोहरिया बाजार के बढनी उर्फ कलानी के आशिर्वाद सेवा संस्थान की अध्यक्ष सिद्धि किन्नर की अध्यक्षता में निकाला गया आज कलश यात्रा आपको बताते चलें कि आए दिन तरह-तरह की कार्यक्रम करती रहती है सिद्धि किन्नर एक आशीर्वाद सेवा संस्थान की अध्यक्ष भी हैं और जनमानस के लिए तरह-तरह के सेवा करती रहती है। सिद्धि किन्नर ने कलश यात्रा का महत्व बताते हुए कहा कि कलश यात्रा सुख-समृद्धि का प्रतीक है। जो लोग कलश यात्रा में चलते हैं सुख-समृद्धि उनका साथ कभी नहीं छोड़ती और परमात्मा की विशेष कृपा के पात्र हो जाते हैं। वही पूर्व ज़िला पंचायत सदस्य विद्या यादव ने जगह जगह जल भी भक्तों को ग्रहण कराया। और उन्होनें बताया की ऐसे अनेक जन कल्याण सेवा करता रहता हु जिससे मेरा मन अति प्रसन्न होता है। कलश यात्रा बढ़नी उर्फ कलानी से डोहरिया बाजार होते हुए डोमिंगगढ़ बसियाडीह समय माता का मंदिर स्थित भोलेनाथ के शिव लिंग पर जल चढ़ाकर मंगल कामना की वही कार्यक्रम में आकाश दीप अजय रामफेर जितेंद्र प्रदीप सूरज प्रमोद सनातन मौजूद थे।

बाढ़ की चपेट में पन्द्रह सौ बीघे से अधिक फसल नष्ट

लगभग चार सौ किसानों की शुरूआती फसल की लागत पानी में डूबी

अमन लेखनी समाचार

औग, फतेहपुर। बाढ़ पीड़ितों के तन पर सिर्फ कपड़े तो देख सकते हैं आप, इनका आशियाना पानी में, खाली पेट में अन्न नहीं और भविष्य बाढ़ की चपेट में। जी हां बाढ़ पीड़ितों का दर्द कम होने का नाम नहीं ले रहा है। कई जगह बनाए गए बाढ़ राहत शिविर में शरण लिए हुए कटरी के लोगों के पेट की आग प्रशासन व स्वयं सेवी संस्थाओं के रहमोकरम पर बुझ तो रही है लेकिन उनकी चिंताएं भविष्य को लेकर उन्हें सोने नहीं दे रही हैं। कटरी की लगभग पन्द्रह सौ बीघे खेत में मिर्ची, भिंडी, गोभी, धान आदि की फसलें जल समाधि ले चुकी है। किसकी प्रारम्भिक लागत करीब 1.48 करोड़ रुपए के नुकसान का अनुमान लगाया जा रहा है।महुआ घाटी में शरण लिए हुए बिन्दकी फार्म के नन्दकिशोर, धनराज, चंद्रिका, छोटेलाल, योगेन्द्र आदि ने बताया है कि तहसील प्रशासन यहां पर दो टाइम का भोजन उपलब्ध करा रहा है, जो सराहनीय है किन्तु यह बताते हुए कटरी के लोगों में एकाएक उदासी छा जाती है। काफी कुरेदने के पश्चात बताते हैं कि सिर्फ खाना मिल जाने से कटरी के लोगों को कुछ राहत जरूर मिल जाती है लेकिन भविष्य की चिन्ता को लेकर प्रशासन से कोई उदारता या आश्वासन नहीं मिला है। थानपुर निवासी सुखराम, दरियापुर के मोतीलाल, बिन्दकी फार्म के राजेश के अनुसार इस प्राकृतिक प्रकोप में लगभग चार सौ किसानों की करीब पन्द्रह सौ बीघे से अधिक खेतों में मिर्ची, भिंडी, गोभी, धान आदि फसलों की जड़ें मजबूत हो चुकी थी जिसे देखकर किसान अपने भविष्य के सपने संजो रहा था। हरी मिर्च की आरंभिक लागत करीब 12 हजार रुपए, भिन्डी की लागत 10 हजार रुपए तथा अन्य फसल की लागत करीब 8 से 11 हजार रुपए प्रति बीघे के हिसाब से कुल 1.48 करोड़ रुपए की लागत डूब जाने का अनुमान है, जिसमें मिर्ची पांच सौ बीघा, भिन्डी तीन सौ बीघा, धान दो सौ बीघा तथा अन्य पांच सौ बीघे फसल बोई होने का ठोस अनुमान है।

थानपुर निवासी बलराज, सुखराम, राजू निषाद रामप्रसाद, संगीता आदि के अनुसार पाण्डु नदी की चपेट में यहां भी करीब 60 बीघे खेत की फसलें जलमग्न हो गई हैं जिसमें हरी मिर्च, भिन्डी आदि की शुरूआती लागत करीब 6 लाख रुपए के नुकसान का अनुमान है। जिसमें बलराज के चार बीघा मिर्ची, एक बीघा भिन्डी का कुल नुकसान करीब 58 हजार रुपए हुआ, इसी तरह अन्य लघु एवम सीमांत किसानों का बाढ़ में भारी नुकसान हुआ है। थानपुर में मिर्च 30 बीघा, भिंडी 20 बीघा तथा धान आदि में 10 बीघे फसल बोई होने के आंकड़े ग्रामीणों के द्वारा बताए गए हैं।

मरीजों से कुचल क्षेम पूछने पहुंचे क्षेत्रीय विधायक

बीजेपी कार्यालय में समर्थकों ने मन की बात कार्यक्रम पर किया ध्यान आकर्षित

अमन लेखनी समाचार

अमौली, फतेहपुर। जनपद के अमौली विकासखंड क्षेत्र के दर्जनों ग्राम पंचायतों में फैले वायरल बुखार संक्रमित बीमारी की रोकथाम हेतु नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अमौली की टीम निरंतर प्रगति पथ पर दिखाई पड़ी वही जानकारी मिलते ही क्षेत्रीय विधायक जहानाबाद राजेंद्र पटेल डिघरुआ ग्राम पंचायत के रुसिया गांव पहुंचे जहां पर फैली संक्रमित बीमारी के मरीजों से मुखातिर होते हुए कुशल क्षेम पूछा वहीं चिकित्सकों को निर्देशित किया कि सभी मरीज को उत्तम इलाज दिया जाए ताकि जल्द से जल्द सभी का स्वास्थ्य अच्छा हो जाए इसी प्रकार अन्य ग्राम पंचायतों का भ्रमण करते हुए क्षेत्रीय विधायक सठिगवां कस्बे के मां वैष्णो हार्डवेयर सैनिटरी हाउस पहुंचे जहां चांदपुर ग्राम प्रधान सुशील तोमर रज्जन लाल त्रिवेदी देवेंद्र कुमार वर्मा अरुण वर्मा सर्वेश कुमार उर्फ लाले शैलेंद्र पटेल कृष्ण कुमार पांडे प्रभु दयाल वर्मा श्यामलाल निषाद रमेश सोनकर जगत नारायण अवस्थी समेत सभी वरिष्ठ नागरिकों ने माल्यार्पण कर पुष्प गुच्छ प्रतीक चिह्न के साथ क्षेत्रीय विधायक को सम्मानित किया प्रधानमंत्री द्वारा संचालित मन की बात कार्यक्रम क्षेत्र के अमौली कस्बे में स्थापित बीजेपी कार्यालय में लाइव प्रसारण के रूप में देखा गया जहां मौजूद मंडल अध्यक्ष संतोष गुप्ता की अगुवाई में सभी समर्थकों एवं कार्यकताओं ने प्रधानमंत्री के कार्यक्रम मन की बात पर ध्यान आकर्षित किया इस मौके पर भारतीय जनता पार्टी के सभी वरिष्ठ कनिष्ठ पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता गण मौजूद रहे

तेज रफ्तार से आ रहे ट्रक ने खड़े ट्रक में मारी टक्कर, चालक गम्भीर

अमन लेखनी समाचार

औग, फतेहपुर। नेशनल हाईवे स्थित ग्राम रामपुर मोड़ के पास बीती रात कानपुर की ओर से प्रयागराज की ओर तीव्र गति से आ रहे ट्रक की खड़े ट्रक में जोरदार टक्कर हो जाने के फलस्वरूप ट्रक के परखच्चे उड़ गए। घटना रात की होने के कारण जब पुलिस गस्त करती हुई निकली तो देखकर आनन फानन पुलिस द्वारा बचाव कार्य किया गया, तथा ट्रक की स्टेरिंग में फंसे चालक को दो घंटे की मशक्कत के बाद निकला गया, जिसकी हालत गम्भीर बताई जा रही है। पुलिस ने गम्भीर अवस्था में उपचार हेतु तुरन्त अस्पताल भेज दिया। जिस गाड़ी का चालक घायल हुआ उसका नम्बर आर जे एटू जीए 1281 है, इस गाड़ी में संगमरमर पत्थर लदा है।

बुलंदशहर में बांग्लादेशी नागरिक गिरफ्तार

- लंबे समय से पहचान छुपा कर रह रहा था, क्लीनिक चलाता था

अमन लेखनी समाचार

खुर्जा, बुलंदशहर सिटी कोतवाली पुलिस ने जिले में लंबे समय से पहचान छुपा कर रह रहे बांग्लादेशी युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी बांग्लादेशी युवक पर विदेशी अधिनियम के तहत दो मुकदमे दर्ज किए गए हैं। पूर्व में उक्त युवक को दो बार डिपोर्ट किया जा चुका है लेकिन दोनों ही बार ही उक्त युवक वापस लौटकर बुलंदशहर आ गया। आरोपी युवक ने बुलंदशहर निवासी महिला से शादी की है। पुलिस ने उसको गिरफ्तार कर डिपोर्ट किए जाने की तैयारी शुरू कर दी है। बुलन्दशहर में सिटी कोतवाली पुलिस ने लंबे समय से पहचान छुपा कर रह रहे एक बांग्लादेशी नागरिक को गिरफ्तार किया है। आरोपी की शिनाख्त मौलाना इदरीश निवासी मुस्तफागढ़ी के रूप में हुई है। मौलाना इदरीश नामक बांग्लादेशी नागरिक ने बुलन्दशहर की महिला से निकाह किया था। वह पिछले लंबे अरसे से बुलन्दशहर में रह रहा था। एसपी देहात ने बताया कि 1990 में वह अवैध तरीके से भारत में दाखिल हुआ था 1995 में पकड़े जाने पर उसको वापस डिपोर्ट कर दिया था। लेकिन वो फिर वापस आ गया। अब डॉक्टर बनकर क्लीनिक चला रहा था। आरोपी युवक ने हाल ही में पासपोर्ट के लिए आवेदन किया था। पुलिस के अनुसार बांग्लादेशी नागरिक ने भारतीय आधार कार्ड, वोटर कार्ड और अन्य दस्तावेज बनवा रखे थे।

खास समाचार

जाब कार्ड में आधार प्रमाणीकरण के लिए मनरेगा डीसी ने की बैठक

जाब कार्ड आधार प्रमाणीकरण बगैर अब नहीं होंगे मनरेगा के भुगतान

अमेठी। रविवार को मनरेगा योजना के तहत जाब कार्ड लाभार्थियों के आधार प्रमाणीकरण के लिए मनरेगा डीसी ए के सिंह व खंड विकास अधिकारी विनय कुमार वर्मा ने रोजगार सेवकों, पंचायत सचिवों तथा तकनीकी सहायकों के साथ बैठक आयोजित की बैठक के दौरान मनरेगा डीसी ए के सिंह ने हर हाल में 30 अगस्त तक विकास खंड के समस्त जाब कार्डों के आधार प्रमाणीकरण के कार्य को पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने बताया कि एक सितम्बर से पूरे देश में सरकार मनरेगा में मजदूरी का भुगतान आधार आधारित भुगतान प्रणाली के माध्यम से करने जा रही है। इसलिए जरूरी है कि इससे पहले सभी जाब कार्डों के आधार प्रमाणीकरण का कार्य पूर्ण कर लिया जाये। केंद्र सरकार ने इस वर्ष जनवरी में ही मनरेगा के तहत रजिस्टर लोगों को मजदूरी का भुगतान करने के लिए आधार-आधारित भुगतान प्रणाली (एबीपीएस) का उपयोग अनिवार्य कर दिया था, लेकिन एबीपीएस को अनिवार्य रूप से अपनाने की समयसीमा पहले एक फरवरी की गई, जिसे बाद में 31 मार्च, फिर 30 जून किया गया, लेकिन तब भी आधार प्रमाणीकरण का कार्य पूर्ण न होने पर सरकार ने 31 अगस्त 2023 की तिथि इस कार्य हेतु निर्धारित कर रखी है और इसके बाद एक सितम्बर से पूरे देश में मनरेगा योजना में आधार आधारित भुगतान प्रणाली लागू कर दी जाएगी।

एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन

अमेठी। सहायक जिला सेवायोजन अधिकारी अनुपम रानी ने बताया कि जिला सेवायोजन कार्यालय द्वारा 29 अगस्त को पूर्वाह्न 10:30 से राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तिलोई में एक दिवसीय निशुल्क रोजगार मेले का आयोजन किया गया है जिसमें निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा प्रतिभाग किया जाएगा। रोजगार मेले में 10वीं, 12वीं, स्नातक तथा आईटीआई उत्तीर्ण एवं अन्य तकनीकी योग्यता धारक अभ्यार्थी रोजगार हेतु प्रतिभाग कर सकते हैं। आवेदक अपने यूजर आईडी के माध्यम से सेवायोजन विभाग के पोर्टल शीद्द८ह्ननंल्ल.४स्त्र.ल्लॅ.ल्ल पर अपनी योग्यता के अनुरूप रोजगार मेला आईडी-8179 पर इच्छुक कंपनी में आवेदन कर सकते हैं। रोजगार मेले में भाग लेने हेतु इच्छुक अभ्यर्थी फोटो तथा बायोडाटा के साथ राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तिलोई में समय से उपस्थित होकर प्रतिभाग कर सकते हैं इस हेतु उन्हें कोई मार्ग व्यय नहीं होगा।

किसानों की समस्याओं को लेकर किसान यूनियन अराजनैतिक टिकैट की बैठक

बैठक में शामिल हुए प्रदेश प्रभारी मंडल अध्यक्ष और उपाध्यक्ष

अमेठी। रविवार को पुलिस लाइन ककवा रोड के पास एक निजी मैरिज लान में भारतीय किसान यूनियन (अराजनैतिक टिकैट) शिकायत करने किसने की समस्याओं को लेकर बैठक आयोजित की गई बैठक में प्रदेश प्रभारी के साथ मंडल अध्यक्ष व उपाध्यक्ष भी शामिल हुए बैठक में किसने की समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई और समस्याओं के निस्तारण के लिए प्रशासन से पुरजोर खुलकर विरोध करने का निर्णय लिया गया। बिजली कटौती के साथ अवारा पशुओं के आतंक को रोकने के लिए किसान यूनियन कमिश्नरी का घेराव करने की तैयारी बनाई है। किसान यूनियन के जिला अध्यक्ष चुन्नू सिंह टिकैत ने कहा कि जिला प्रशासन तहसील प्रशासन और सभी कोतवाली में किसने की समस्याओं का निस्तारण नहीं हो पा रहा है उनकी बातों को कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है किसान काफी परेशान हैं इस समय हमारा पशु के आतंक होने से फसली नष्ट हो रही है। एक भी फसलों को बचा पाना मुश्किल साबित हो रहा है। रात के समय सड़कों पर अवारा पशुओं के कारण सड़क घटनाएं भी बढ़ी हुई है। अघोषित विद्युत कटौती को लेकर भी लोग काफी परेशान है। जिसके कारण हमारा संगठन कमिश्नरी का घेराव करने की तैयारी कर रहा है। अगर प्रशासन हमारी बातों पर ध्यान नहीं दिया गया तो हम लोग पुरजोर विरोध और धरना प्रदर्शन करने को मजबूत होंगे। बैठक में बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे।

पुलिस ने सात वारंटियों को किया गिरफ्तार

गाजीपुर। जनपद के नंदगंज थाना अंतर्गत पुलिस ने 7 वारंटी को गिरफ्तार किया है। पुलिस अधीक्षक द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक नगर के कुशल निर्देशन तथा क्षेत्राधिकार भुड़कुड़ा के मार्गदर्शन में स्थानीय थाना पर एन बी डब्ल्यू /वांछितों की तलाश के क्रम में आज 27 अगस्त को सात वारंटियों को उपनिरीक्षक रवि प्रकाश ने अपने हमराहियों के साथ उनके घर से गिरफ्तार किया। गिरफ्तार वारंटी में ग्राम सौरम निवासी संतोष कुशवाहा पुत्र दुकांति कुशवाहा, राधेश्याम कुशवाहा पुत्र जगन्नाथ कुशवाहा, विनोद पुत्र सत्यनारायण गोड, मैनेजर गोण पुत्र गणेश गोड, ग्राम मूड़कटनी निवासी सुभाष पुत्र हनुमान, हनुमान पुत्र रामकुमार को पुलिस ने गिरफ्तार किया। गिरफ्तार करने वाली टीम में उप निरीक्षक रवि प्रकाश के अतिरिक्त कॉन्स्टेबल अखिलेश सिंह, चंद्रजीत यादव, होमगार्ड रणधीर सिंह उपस्थित रहे।

निकरा परियोजना के अंतर्गत अच्छादित गांव जब्दी में वीसीआरएमसी की बैठक हुई संपन्न

बहराइच। कृषि विज्ञान केंद्र बहराइच प्रथम पर संचालित निकरा परियोजना के अंतर्गत अच्छादित गांव जब्दी विकासखंड तेजवापुर मे वीसीआरएमसी (विलेज लेवल क्लाइमेट रिस्क मैनेजमेंट कमेटी) की की बैठक आयोजित की गई जिसमे आने वाली बाढ़ की आशंकाओं व आकस्मिक योजनाओं पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ के. एम. सिंह, ने बताया कि किसान खरीफ मक्का के स्थान पर रबी मक्का की बुवाई करें, जिससे किसानों को अधिक आय प्राप्त होगी एवं उत्पादन अच्छा मिलेगा। वैज्ञानिक डॉ नीरज सिंह नहीं बताया कि किसानों को अपने खेत उत्पादित हो रहे धान को एल.सी.सी. स्केल से देखकर खेत में यूरिया का प्रयोग करें। व परियोजना में कार्यरत यंग प्रोफेशनल कुशाग्र सिंह के साथ वरि वैज्ञानिक, डॉ नीरज ने कृषको के प्रक्षेत्र का भ्रमण भी किया गया। बैठक में गांव के कृषकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा वरिष्ठ वैज्ञानिक को अपनी समस्याओं से अवगत कराया। बैठक में लालजी, संपता, गुड्डू, रीना देवी, मनीषा, ओमकार, सर्वजीत आदि कृषक उपस्थित थे।

मन की बात कार्यक्रम में उत्साह से शामिल हुए भाजपाई

अमेठी। रविवार को प्रधानमंत्री की मन की बात कार्यक्रम को सुनने के लिए सभी मतदान केन्द्रों पर भाजपा ने कार्यक्रम आयोजित किए। नगर में जिला पंचायत अध्यक्ष राजेश अग्रहरि ने कार्यकताओं के साथ प्रधानमंत्री के विचार सुने। प्रधानमंत्री के मन की बात सुनने के लिए राजेश अग्रहरि के गेस्ट हाउस में विशेष लाइव कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में भाजपा की मंडल इकाई के पदाधिकारियों के साथ बड़ी संख्या में व्यापारी भी शामिल हुए। राजेश अग्रहरि ने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने सबका साथ, सबका विकास सबका विश्वास और सबका प्रयास के सूत्र वाक्य पर काम करते हुए भारत को विश्व के अग्रणी राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा कर दिया है। चंद्र यान -3की सफल लैंडिंग के बाद भारत विश्व गुरु राष्ट्र बन गया है। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष अजय कुमार तिवारी, महामंत्री राकेश कुमार पाण्डेय, फूल चंद कसौंधन, हरिकेश श्रीवास्तव, शिव भानु मौर्य आदि मौजूद रहे।

दुर्घटना पीड़ित परिवारों से मिले विधायक प्रतिनिधि

अमेठी। विधायक प्रतिनिधि और युवा सपा नेता अनुराग प्रजापति ने रविवार को क्षेत्र भ्रमण कर कार्यकताओं का हाल चाल लिया और दुर्घटना पीड़ित परिवारों का दुःख बांटा। भादर ब्लॉक के छीड़ा में सर्प दंश से एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। अनुराग ने कार्यालय की टीम के साथ पीड़ित परिवार से मुलाकात की, कहा कि दुःख की घड़ी में हम आपके साथ हैं, शोक संवेदना जताई और मृतक आश्रित परिवार की मदद की। रामखेलावन प्रजापति और राम बहादुर पाल, बहादुर पुर के परिवार से मुलाकात के बाद अनुराग ने भंडारे में आर्थिक सहयोग किया। इस अवसर पर सपा पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष महावीर कश्यप, अश्विनी कुमार आदि मौजूद रहे।

प्रधान व कोटेदार के घर में हुई चोरी का पुलिस ने किया खुलासा

तीन आरोपियों को 15 हजार नगदी व चोरी के समान के साथ गिरफ्तार

बढ़ रही चोरी की घटनाओं पर पुलिस गंभीर अन्य चोरियो का भी पुलिस करेगी जल्द खुलासा

अमन लेखनी समाचार

शुकुल बाजार, अमेठी। थाना क्षेत्र में बढ़ रही चोरी घटनाओं पर लगाम लगाना पुलिस शुरू कर दिया है। इसी क्रम में स्थानीय थाने पुलिस ने रविवार की दोपहर थाना क्षेत्र के अंतर्गत प्रधान व कोटेदार के घरों में हुई लाखो की चोरी का खुलासा करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के मुताबिक 20अगस्त की रात्रि ग्राम प्रधान लियाकत अली और 22 अगस्त की रात्रि बलापुर के कोटेदार सईद अहमद के अलग अलग दो घरों में चोरी हो गई थी। पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी थी। मामले में टीमों का गठन किया गया था। घटना स्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज खगाले तो कुछ संदिग्ध व्यक्ति दिखाई दिए। जिसके बाद रविवार की सुबह पुलिस ने चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले. सोनू वनमानुष व. शनि कुमार और.निरहु वनमानुष निवासी चमरी का पुरवा मजरे खंडासा थाना खंडासा जनपद अयोध्या को मंगरौली तिराहे पर पान की गुमटी के पास से गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों की निशानदेही पर चांदी की 14 अंगूठी व03 जोडी पायल, सोने की 01 अंगूठी पीली धातु व 15हजार हजार रुपए के साथ गिरफ्तार किया है। थाना अध्यक्ष अवनीश कुमार चौहान ने बताया की थाना क्षेत्र में कई घरों में चोरी हो गई थी। मामले में थाना पुलिस आरोपियों की धरपकड़ में जुटी हुई थी। रविवार की सुबह थाना क्षेत्र के अंतर्गत बलापुर कि कोटेदार व अकरा ग्राम प्रधान के घर चोरी करने वाले तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों को कोर्ट में पेश किया जा रहा है। पुलिस ने बताया कि शेष अन्य चोरियों का भी खुलासा जल्द किया जाएगा। गिरफ्तारी करने वाली टीम में उ0नि0 राम जी सिंह व रामविभू सिहं कांटेवल राजबहादुर सिंह रामनरेश राजभर आदि शामिल रहे। क्षेत्र में बढ़ रही चोरी की घटनाओं पर लगाम अवश्य लगा है। पुलिस की इस धरपकड़ से चोरों में डर अवश्य बना दिया है। पीड़ितों को अपने- अपने घरों में हुई चोरी की घटना के खुलासे की उम्मीद अवश्य जग गई होगी।

दोदरा नाले में डूबकर बालक की मौत, मचा कोहराम

रुपईडीहा, बहराइच। स्थानीय थाना क्षेत्र के अंतर्गत रंजीतबोझ गांव के निकट एक बालक की दोदरा नाले में नहाते समय डूबने से मौत हो गई। रंजीतबोझा के ग्रामीण ने बताया है कि मो0 वसीम राई 12 वर्ष पुत्र मो0 जिब्राइल राई निवासी रंजीतबोझा गांव के कुछ बच्चों के साथ रंजीतबोझा गांव से पश्चिम शिवपुर मोहनिया गांव जाने वाली मार्ग पर स्थित दोदरा नाले के निकट गये थे। वहां पर नहाने के लिए मो0 वसीम दोदरा नाले से नीचे पानी में कूद गया। जब वह डूबने लगा तो साथ के बच्चे वहां से गांव की ओर भाग निकले। साथ में गये बच्चों द्वारा गांव वालों को सूचना दिया। सूचना मिलते ही भारी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंचकर कड़ी मशक्कत के बाद ग्रामीणों ने लगभग 3 घंटे के बाद बच्चे के शव को दोदरा नाले से किसी तरह बाहर निकला गया। यह घटना 26 अगस्त लगभग 3:00 बजे की बतायी जा रही है। घटना की सूचना जब मृतक बच्चे के परिवार वालों को मिली तो परिवार वालों का रो रो कर बुरा हाल है। परिवार जनों में मातम छा गया। घटना की सूचना पुलिस को मिलते ही पुलिस टीम की घटना स्थल पर पहुंच गयी। जब पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए शव मांगा तो ग्रामीणों ने मना कर दिया।

एलपीजी सिलेंडर की तरह पेट्रोल पंप का फिलिंग पाइप भी हो पारदर्शी

काला पाइप होने के कारण कई पेट्रोल पंपों पर हो रही धांधली

जनता जागरुक होने के बाद भी करा रही है शोषण

अमन लेखनी समाचार

फतेहपुर। केंद्र सरकार ने जिस प्रकार घरेलू गैस सिलेंडर में बदलाव करते हुए पारदर्शी सिलेंडर का प्रसार किया है ठीक उसी प्रकार पेट्रोल पंप के फिलिंग पाइप में भी यह प्रक्रिया लागू होना अति आवश्यक है अन्य प्रदेशों समेत उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों में पेट्रोल पंप की कालाबाजारी चरम सीमा पर पहुंच चुकी है ठीक उसी प्रकार फतेहपुर जनपद के भी अनेक क्षेत्रों में खुले पेट्रोल पंप सच्चाई का चोला ओढ़कर उपभोक्ताओं का शोषण कर रहे हैं विश्वस्त सूत्रों द्वारा मिली जानकारी के अनुसार जनपद के खागा धाता मलवा जोनिहा जहानाबाद चौडगरा समेत कई क्षेत्रों पर घटतौली की शिकायत आ रही है

अमौली क्षेत्र की शिकायत सुर्खियों पर

जनपद के अमौली क्षेत्र में खुले एक पेट्रोल पंप में घटतौली तथा मिलावट की समस्या उपभोक्ताओं को निरंतर कई वर्षों से आ रही है उच्च अधिकारियों की रोक लगाने के बाद भी बोतल पीपे तथा अन्य बर्तनों पर निरंतर पेट्रोल डीजल बिक्री की जा रही है अमन लेखनी हिंदी दैनिक समाचार पत्र मीडिया से रूबरू होते हुए स्थानीय ग्रामीणों ने वर्तमान सरकार से अपील की कि घरेलू सिलेंडर में जिस तरह पारदर्शिता दिखाते हुए सिलेंडरों में बदलाव सरकार द्वारा किया जा रहा है ठीक उसी तरह पेट्रोल पंपों के फिलिंग पाइप भी पारदर्शी लगाए जाएं तो घटतौली में रोक लगा सकती है नवयुग में जनता जागरुक होने के बाद भी काले पाइप के अंदर बैठ चोर का शिकार हो रही है जिस पर वर्तमान सरकार ने अभी तक ध्यान नहीं दिया केंद्र एवं प्रदेश सरकार को सभी पेट्रोल पंप संचालकों को निर्देशित करते हुए पारदर्शी फिलिंग पाइप लगाने का आदेश देना चाहिए जिससे अंधविश्वास में शोषण का शिकार हो रही जनता को उपयुक्त मूल्य के अनुसार ईंधन प्राप्त हो

ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन की जिला कार्यकारिणी हुई घोषित

अमन लेखनी समाचार

झाँसी। रविवार को ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन की बैठक जिलाध्यक्ष अभिनन्दन जैन के आवास पर आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष अभिनन्दन जैन ने की। मीटिंग के दौरान उपस्थित पत्रकारों ने संगठन के विस्तार हेतु अपने-अपने विचार रखे। इसके बाद जिलाध्यक्ष अभिनन्दन जैन द्वारा नवनियुक्त जिला कार्यकारिणी के पदाधिकारियों की घोषणा की गई। कार्यक्रम का संचालन राजकुमार मिश्रा ने किया। इस दौरान जिला संरक्षक प्रभारी सुधीर जैन मऊरानीपुर को संरक्षक ज्ञानचंद जैन बबीना, रामकुमार सिंह गुरसराय, अशोक सेन गुरसराय, बालादीन राठौर गरौठा, मृदुल तिवारी बरुआसागर, विजय दुबे बरुआ सागर, राजेंद्र जैन चिरगांव, जगतपाल मिश्रा टहरौली, रामभरोसे तिवारी टोड़ी फतेहपुर, जयसिंह सिसोदिया सकरार, गोविंद यादव बबीना, इसरार खान झांसी, अंसार खान झांसी, मनीराम वर्मा झांसी, सुरेश सोनी टोड़ी फतेहपुर, ओमप्रकाश परिहार झांसी, जगदीश दीक्षित रानीपुर, मनमोहन लिटौरिया रानीपुर को मनोनीत गया। वही जिला कार्यकारिणी (महिला सभा) का जिलाध्यक्ष राजेश्वरी (रचना) झांसी को महानगर अध्यक्ष, ज्योति सिंह झाँसी को, जिला उपाध्यक्ष अंजना यादव मऊरानीपुर, प्रियंका राजपूत गरौठा को, जिला महासचिव नजमा आब्दी चिरगांव, अर्चना श्रीवास तेजपुरा को, जिला सचिव भावना वर्मा बबीना, सवा खान झांसी को मनोनीत किया गया। वही जिला उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी अवध बिहारी टहरौली, अखिलेश तिवारी गुरसराय, मनोज ओझा बंगरा, बिहारी लाल साहू बंगरा, गुरसराय, अरविंद सिंह मारकुआं, राजकुमार मिश्रा गरौठा, श्याम चरण उपाध्याय समथर को दी गई। जिला महासचिव सोनू शिवहरे बबीना, राकेश कुमार सकरार, राजीव परमार गरौठा, नेता तिवारी, प्रदीप शर्मा गरौठा, बृजमोहन नगाइच समथर, अजय झांसी, संदीप श्रीवास्तव को मनोनीत किया गया।

जिला सचिव हेमंत यादव गरौठा, नरेश साहू पिपरा, अनिल शर्मा गरौठा, धर्मेंद्र तिवारी बरुआसागर, रवि रठा मऊरानीपुर, राजीव अडजरिया गुरसराय, सुनील जैन डीकू गुरसराय को मनोनीत किया गया। सह सचिव वेद दुबे गुरसरांय, संदीप रेजा चिरगांव, डां जितेन्द्र सिद्धार्थ बरुआसागर को बनाया गया। कोषाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी समीर जैन गुरसरांय को सौपी गई। जिला मीडिया प्रभारी अमित मिश्रा टहरौली, सुखलाल कुशवाहा झांसी, अनुज श्रोतीय रानीपुर कमलेश दुबे मगरपुर को संघठन महामंत्री नीरज राय बरुआसागर, आशुतोष गोस्वामी गुरसराय, पुष्पेंद्र प्रधान परसा, मोहनलाल भारती सकरार, रनवीर पटेल सिजारा को मनोनीत किया गया। संगठन मंत्री रवि नायक टहरौली, मोहित शर्मा समथर, कमलाकांत तिवारी लखाबती (गरौठा), प्रदीप सिंह गौर मगरवारा, लोकेंद्र यादव निमौनी को बनाया गया। जिला ऑडिटर अतर सिंह परिहार बरुआसागर, कार्यालय प्रभारी नईम खान बबीना, जिला अध्यक्ष प्रतिनिधि प्रतीक सेंमसन झाँसी को बनाया गया। वही जिला कार्यकारिणी सदस्य अवधेश शर्मा टोड़ी फतेहपुर, विजय नायक टहरौली, जगदीश श्रीवास मऊरानीपुर, आनंद साहू बरुआ सागर, जितेंद्र पुरोहित बरुआ सागर, प्रमोद मिश्रा टहरौली, दीपक पटेल बिजना, रणजीत यादव टोड़ी फतेहपुर, मकबूल सिद्दीकी मऊरानीपुर, प्रभाकर यादव टोड़ी फतेहपुर, सुनील शर्मा टोडी फतेहपुर, सीताराम श्रीवास टोड़ी फतेहपुर अजय गुप्ता मऊरानीपुर को मनोनीत किया गया। वही बड़ागाँव नगर अध्यक्ष पद पर संजीव लाल गौतम को मनोनीत किया गया।

कंपोजिट विद्यालय में कक्षा 6 की छात्रा को शिक्षिकाओं ने बेरहमी से पीटा

अमन लेखनी समाचार

बाराबंकी। उत्तर प्रदेश बाराबंकी जिला के हैदरगढ़ क्षेत्र में कक्षा 6 की छात्रा को शिक्षाओं ने बेरहमी से पीटने का मामला सामने आया,

आपको बता दें कि सरकार के आदेशानुसार प्रत्येक विद्यालयों में छात्र-छात्राओं के साथ मारना पीटना व अभद्र भाषाओं का इस्तेमाल करना कानून जुर्म है, फिर भी शिक्षक शिक्षकों के द्वारा छात्र-छात्राओं के सॉन्ग मारपीट व अभद्र भाषा का इस्तेमाल करना अक्सर सोशल मीडिया पर देखा जा रहा है, ऐसी घटना का पुर्नवृत्ति करते हुए फिर सामने आया, विकासखंड हैदरगढ़ क्षेत्र में स्थित कंपोजिट विद्यालय अंसारी में कक्षा 6 की शिवानी नाम की छात्रा के साथ काम पूरा न होने पर दो शिक्षाओं ने जम कर पीटा और जाति सूचक के नाम पर स्कूल से बाहर कर दिया, छात्रा अपने घर गांव कुमेदान का पुरवा मजरे अंसारी पहुंचकर कर आप बीती परिजनों से रो - रो कर बताने लगी, परिजनों ने स्कूल पहुंचे कर शिकायत की तो दोनों शिक्षकाओ ने परिजनों से लड़ने पर आमादा हो कर अभद्र व्यवहार करते हुए कहा कि तुम्हें जहां शिकायत करना हो कर दो मेरा कोई कुछ बिगाड़ नहीं पायेगा, छात्रा के परिजनों ने लिखित शिकायत कोतवाली हैदरगढ़ पुलिस से की, और उपजिलाधिकारी बाराबंकी, पुलिस अधीक्षक बाराबंकी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी बाराबंकी, हैदरगढ़ उपजिलाधिकारी, हैदरगढ़ खंड शिक्षा अधिकारी से की, न्याय की आस में छात्रा के संघ परिजन दर दर भटक रहे हैं, शिक्षकाओ को बचाने में लगे शिक्षा विभाग के आला अधिकारी, अब देखना है कि मासूम दलित छात्रा को न्याय मिलता है कि उक्त घटनाओं को बल मिलेगा।

28 अगस्त को बसपा ने बुलाई बड़ी बैठक

गौरीगंज, अमेठी। 28अगस्त को बहुजन समाज पार्टी ने पार्टी के पिछले चुनाव कार्यालय पर बड़ी कार्यकर्ता बैठक बुलाई गई है। इस बैठक में जिला कमेटी, विधानसभा कमेटी, के पदाधिकारियों के साथ चारों विधानसभाओं के बसपा के सभी सेक्टर अध्यक्ष बुलाए गए हैं। मंडल जोन इंचार्ज दिनेश गौतम ने शनिवार को कार्यकताओं के बीच जनसंपर्क किया।

नगर पंचायत अध्यक्ष ने औशानेश्वर महादेव में विशाल भव्य भंडारे का अयोजन

अमन लेखनी समाचार

हैदरगढ़ बाराबंकी। हैदरगढ़ नगर पंचायत अध्यक्ष आलोक तिवारी ने अपने परिवार व ईस्ट मित्रों सहित शनिवार को रुद्राभिषेक करते हुए रविवार को भव्य विशाल भंडारे का आयोजन किया। जिसमें दूरदराज एवं क्षेत्रीय भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया भंडारा शाम 3:00 बजे से 11:00 बजे रात तक चलता रहा भंडारे में भक्तों के अलावा क्षेत्रीय नेता प्रधान सभासद तथा क्षेत्रीय गणमान्यों ने भंडारे में पहुंचकर प्रसाद ग्रहण किया। नगर पंचायत अध्यक्ष आलोक तिवारी ने सभी का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए सा सेवा की। अरुण शुक्ला पंकज मिश्रा पूर्व विधायक बैजनाथ रावत तथा क्षेत्रीय पत्रकार आदि लोगों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया।

आश्वासन के बाद भारतीय किसान यूनियन का धरना समाप्त

अमन लेखनी समाचार/हेमंत यादव

गरौठा, झाँसी। वन क्षेत्राधिकारी गुरसराय द्वारा फर्जी आंकड़े तैयार कर लाखों रुपए की हेरा फेरी करने की शिकायत के बावजूद उच्चाधिकारियों द्वारा निष्पक्ष जांच न कराने के विरोध में भारतीय किसान यूनियन के पदाधिकारी एवं कृषक अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे थे। भारतीय किसान यूनियन के जिला अध्यक्ष कमलेश लंबरदार का कहना था कि जब तक दोषियों के खिलाफ कार्यवाही नहीं होगी तब तक हमारा धरना प्रदर्शन चलता रहेगा। उप जिलाधिकारी गरौठा द्वारा जो काम 6 दिन में नहीं हो पाया वो काम उप जिलाधिकारी मऊरानीपुर ने एक दिन में कर दिखाया। स्वेता साहू उप जिलाधिकारी गरौठा का 2 दिन के अवकाश लेने की वजह से गोपेश तिवारी उप जिलाधिकारी मऊरानीपुर को उप जिलाधिकारी गरौठा का कार्य प्रभार दिया गया। उप जिलाधिकारी मऊरानीपुर ने किसानों के बीच बैठकर उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुना तथा 15 दिन के अंदर निष्पक्ष जांच करवाकर कार्यवाही का आश्वासन दिया। उप जिलाधिकारी मऊरानीपुर के आश्वासन पर भारतीय किसान यूनियन ने विश्वास करते हुए अपना धरना प्रदर्शन समाप्त कर दिया।

आपको बता दें कि 29 अगस्त को प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ का झांसी कार्यक्रम प्रस्तावित है ऐसे में भारतीय किसान यूनियन का धरना प्रदर्शन प्रशासन के गले की फांस बन सकता था।

रीता सिंह ने कर्नाटक के राज्यपाल थावर चंद गहलोत को पुस्तक वीरांगनाये भेंट की

अमन लेखनी समाचार

बेंगळूरु। 25 अगस्त को रीता सिंह ने कर्नाटक के राज्यपाल माननीय थावर चंद गहलोत जी से मुलाकात की और उनको अपनी पुस्तक ₹वीरांगनाये₹ भेंट की ये पुस्तक देश की उन वीरांगनाओं के जीवन पर लिखी है जिन्होंने देश के लिये अपने प्राणों की परवाह भी नहीं की इस पुस्तक में देश की 28 वीरांगनाओं के जीवन से जुडी उन घटनाओं का जिक्र है जहाँ उन्होंने राष्ट्र की रक्षा के लिये अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी पर अपने राज्य पर आंच नहीं आने दी इन वीरांगनाओं के बारे में हम सभी को जानना चाहिए और सभी को इस पुस्तक को पढ़ने के लिये प्रेरित करना चाहिए राज्यपाल थावर चंद गहलोत ने पुस्तक का कुछ अंश पढ़ा और पुस्तक के लिये लेखिका रीता सिंह को शुभकामनायें दीं

अमन लेखनी
(हिन्दी दैनिक)
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती अखिलेश सिंह द्वारा अवध एक्सप्रेस प्रकाशन, 434, सिविल लाइन, जेल रोड, उन्नाव, उत्तर प्रदेश से मुद्रित और ग्राम व पोस्ट- बनी, थाना- बन्थरा, लखनऊ- 226401 (उ.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक– श्रीमती अखिलेश सिंह
समाचार सम्पादक – रुद्र प्रताप सिंह
समाचार से संबंधित सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र लखनऊ होगा।
मो. – 9838159555, 9935457982
E-mail address amanlekhaninews@gmail.com

भरोसा-स्नेह से बंधा

भाई-बहन का रिश्ता

आवरण कथा / सोनम लवंशी

भाई-बहन के बीच प्यार, स्नेह और समर्पण का पर्व है रक्षाबंधन। यह पर्व भाई-बहन को स्नेह की डोर में बांधने के साथ दायित्वबोध का एहसास भी दिलाता है। इस दिन बहनें अपने भाई के मस्तक पर तिलक लगाकर रक्षा सूत्र बांधती हैं। भाई की तरक्की के लिए भगवान से प्रार्थना करती हैं। भारतीय परंपरा में विश्वास को हर रिश्ते का मूल मानते हैं और रक्षाबंधन इसी विश्वास का प्रतीक पर्व है। यह प्रेम, समर्पण की डोर से हृदय को जोड़ता है। गीता में वर्णित है, 'जब-जब संसार में नैतिक मूल्यों की कमी आती है, तब ज्योतिर्लिंग शिव प्रजापति ब्रह्मा जी के द्वारा पवित्र धागे भेजते हैं। बहनें मंगलकामना करके अपने भाइयों की कलाई पर बांधती हैं और भगवान शिव उनकी रक्षा करते हैं।' आधुनिक दौर में बदलते परिवेश के साथ त्योहार मनाने की परंपरा बदल रही है। साथ ही इनके पीछे की मान्यताओं को भी आधुनिकता की जड़कन ने बांध लिया है, पर आज भी इस त्योहार में प्रेम और समर्पण बरकरार है।

प्राचीन काल से बरकरार है महत्ता

यह त्योहार अपने साथ ऐतिहासिकता और धार्मिक पहलुओं को समाहित किए हुए है। इस पर्व से जुड़ी कई पौराणिक-ऐतिहासिक कहानियां प्रचलित हैं। फिर चाहे कृष्ण-द्रौपदी से जुड़ी कथा हो या फिर हुमायूं और रानी कर्णावती की सत्य कथा। लेकिन केवल भाइयों ने ही अपनी बहन की रक्षा नहीं की, इतिहास में ऐसे कई किस्से मिलते हैं, जिनमें बहनों ने भी अपने भाई या पितृसत्ता की रक्षा के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया। आज के दौर में भी अपने आस-पास ऐसे कई किस्से देखे जा सकते हैं, जहां भाइयों की रक्षा में बहनों ने बड़ी भूमिका निभाई है। फिर वो अंगदान का प्रसंग हो या करियर में मदद करना। बहनों को हर पल और हर जगह भाई का हौसला बढ़ाते हुए देखा जा सकता है। इसी तरह कहीं भाई-बहन मिलकर सफलता की नई परिभाषा रचते हुए भी दिख जाते हैं।

बहन ने दी भाई को नई जिंदगी

जरूरत पड़ने पर बहनें अपने भाई की जीवनरक्षा के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहती हैं। इसकी शानदार मिसाल इसी साल जून महीने में सामने आई, जब लखनऊ की एक राष्ट्रीय स्तर की महिला फुटबॉलर अंशिका ने अपने भाई को लिवर दान देकर

अंशिका

शैलेंद्र

उसके जीवन की रक्षा की। अंशिका ने राष्ट्रीय स्तर पर कई फुटबॉल मैच खेले और जीते हैं। लेकिन जब भाई की जिंदगी बचाने का सवाल खड़ा हुआ तो उन्होंने अपने करियर को दांव पर लगाकर भाई की जिंदगी बचाने को प्राथमिकता दी। अंशिका के भाई शैलेंद्र को लिवर से जुड़ी हुई गंभीर बीमारी 'क्रिप्टोजेनिक सिरोसिस' हो गई थी। उसके लिए लिवर ट्रांसप्लांट ही एकमात्र उपाय था। अंशिका का ब्लड ग्रुप भाई से मैच कर गया। इसके बाद लखनऊ के एक

सचिन को राखी बंधती उनकी बहन सविता

अस्पताल में 22 जून को सफल सर्जरी की गई। अंशिका के मुताबिक, डॉक्टरों ने तीन महीने के आराम के बाद उन्हें फुटबॉल मैदान पर आने की अनुमति दी है। ऐसी ही एक बहन की सच्ची दास्तां इंदौर शहर की है। यहां के रहने वाले सुधाकर पांच बहनों में अकेले भाई हैं। 30 साल की उम्र में उनकी दोनों किडनी फेल होने के बारे में पता चला। 1992 में उनकी बहन सीमा ने उन्हें अपनी किडनी दान देकर नया जीवन प्रदान किया। सुधाकर आज भी अपनी बहन की वजह से स्वस्थ जीवन गुजार रहे हैं।

बहन के सहयोग से भाई ने चूमी कामयाबी

वर्तमान दौर में खेल का जिक्र करें तो सबसे पहले जेहन में क्रिकेट का ही नाम आता है और क्रिकेट की बात हो तो इसके भगवान सचिन तंदुलकर का नाम आता ही है। सचिन के महान क्रिकेटर बनने में भी उनकी बहन सविता का अहम योगदान रहा है, जिसका जिक्र उन्होंने अपने कई इंटरव्यू में भी किया है। सचिन अपने बेहतरीन करियर का श्रेय अपनी बहन को देते हैं। यहां तक कि सचिन ने अपने आखिरी टेस्ट मैच की स्पीच में भी इस बात का खुलासा किया था कि उन्हें सबसे पहला कश्मीरी विलो बैट उनकी बहन ने ही दिया था। सविता अपने भाई के हर मैच के दिन उपवास रखती थीं और उनकी जीत की कामना करती थीं। वहीं महेंद्र सिंह धोनी की सफलता के पीछे भी उनकी बहन जयंती का ही योगदान रहा है। धोनी के पिता नहीं चाहते थे कि वह क्रिकेट खेलें पर उनकी बहन ने उनका पूरा साथ दिया और उनके क्रिकेटर बनने का सपना पूरा किया।

रक्षाबंधन विशेष

जमाना कितना भी बदल गया हो पर भाई-बहन के रिश्ते की गहनता में जरा भी बदलाव नहीं आया है। किसी एक को मुश्किल में देखकर दूसरा हर संभव मदद के लिए आगे आ ही जाता है। फिर वो आर्थिक मदद हो, अंगदान हो या फिर करियर बनाने में भरोसा-साथ देने की बात हो। रक्षाबंधन के अवसर पर बहन-भाइयों के स्नेहिल रिश्ते से जुड़ी कुछ सच्ची कहानियां पढ़कर आपके मन में भी अपने भाई/बहन के लिए स्नेह उमड़ने लगेगा।

स्टार्टअप वर्ल्ड में छाई भाई-बहन की जोड़ी

भाई-बहन के प्यारे रिश्ते में चंचल शरारतें होती हैं तो नोक-झोंक भी। लेकिन उनके रिश्ते को अनोखा बनाती है, भरोसा और आपसी समझ। पुणे के रहने वाले भाई-बहन शिवांग और शिविका की जोड़ी ने आपसी प्यार, भरोसे और समझ के दम पर अपने व्यवसाय को बुलंदियों पर पहुंचा दिया। शिवांग और शिविका सूद ने

शिवांग-शिविका ने किया बिजनेस में कमाल

अपनी मां के हाथों से बनी पारंपरिक खीर को नया स्वाद और कलेवर देकर ना केवल अपनी अलग पहचान बनाई बल्कि आज भाई-बहन की जोड़ी शहर में 6 आउटलेट स्टोर संचालित कर रही है। निःसंदेह इस व्यवसाय की तरक्की के पीछे भाई-बहन का प्यार और समझदारी ही है।

हमारे समाज के ये चंद उदाहरण, भाई-बहन के रिश्तों की अहमियत और आपसी जुड़ाव दर्शाते हैं। *

विशेषः 29 अगस्त, राष्ट्रीय खेल दिवस

तकनीक ने बढ़ाया खेलों का

रियल टाइम रोमांच

खेलों में इंसान की हमेशा से दिलचस्पी रही है। खेल लोगों में उत्साह भरते हैं। लेकिन खेल जितने रोमांचक अब हो गए हैं, पहले कभी नहीं थे। इस जबर्दस्त रोमांच की वजह, खेल तकनीक में हुए अभूतपूर्व बदलाव ही हैं।

टेक्नोइफेक्ट

नरेंद्र कुमार

खेल हमेशा से हमें रोमांचित करते रहे हैं। लेकिन अब तकनीक में हुए बदलावों की वजह से उनके रोमांच में और भी इजाफा हो गया है। तकनीक ने एक तरफ जहां खेलों को रियलटाइम पर दुनिया के कोने-कोने में पहुंचाया है, वहीं इस तकनीक की बदौलत अब खेल इतने सजीव और दर्शनीय हो गए हैं कि हम ऑस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज में हो रहे किसी क्रिकेट टेस्ट मैच को अपने ड्राइंग रूम भरपूर स्पष्टता से देख सकते हैं। इतनी स्पष्टता कि गेंद और बल्ला ही नहीं खिलाड़ी के टपकते पसीने की एक-एक बूंद तक इतनी नजदीक दिखती है कि गीलेपन का एहसास तक होने लगता है। तकनीक के जरिए आज खेल इतने रोमांचक हो गए हैं कि दुनिया के किसी भी कोने में हो रहे हों, लोग अपने ड्राइंगरूम, दफ्तर में दिल थामकर देखते हैं। खेलों का इतना रोमांचक एहसास अब खेल मैदान में भी नहीं होता,

जितना रोमांचक एहसास आज की उच्चस्तरीय प्रसारण गुणवत्ता के कारण घर बैठे खेल देखने में होता है। दुनिया का सबसे बड़ा कारोबार रोमांच है और उसमें जब खेलों के जैसा रोमांच हो तो कहना क्या!

कई बिलियन डॉलर का हो चुका बाजार

आज पूरी दुनिया का सालाना खेल कारोबार इतना बड़ा हो गया है, जितना दुनिया के कई देशों का सालाना बजट भी नहीं होता है। अकेले फुटबॉल का वैश्विक कारोबार 400 बिलियन डॉलर सालाना को क्रॉस कर गया है। अगर वैश्विक खेल बाजार की बात करें तो यह साल 2022 में 3,000 बिलियन डॉलर की सीमा पार कर गई थी और 10 फीसदी वृद्धि की दर से यह लगातार बढ़ रहा है। अकेले भारत का खेल कारोबार ही 6,000 करोड़ रुपए से ऊपर का हो चुका है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि खेलों में कितना बड़ा आर्थिक दांव लगा हुआ है। वास्तव में खेल की दुनिया में इतने बड़े आर्थिक दांव का एक कारण ही खेलों में तकनीकी का बढ़ा प्रयोग है, जिस कारण आज खेल श्रीडी और फोरडी प्रसारण तरीकों से हमारे ड्राइंगरूम और बेडरूम तक पहुंच गए हैं। आज जब पीवी सिंधु जोर का शॉट मारती हैं तो लगता है, शटलसीधे हमारे ड्राइंगरूम में आकर गिरेगी।

साल 2020 में भारत का खेल कारोबार 5,864 करोड़ रुपए तक पहुंच गया, जिसमें डिजिटल, टेलीविजन और प्रिंट मीडिया के विज्ञापनों पर करीब 3,657 करोड़ रुपए तक खर्च हो गए थे।

प्लेयर्स पर बढ़ा दबाव

खेलों की दुनिया में लगातार खेलों के प्रदर्शन में जो चमत्कारिक बेहतरी हो रही है, उसमें तकनीक का बहुत बड़ा योगदान है। खेलों में शामिल हुई तकनीक की वजह से लगातार खिलाड़ियों के बीच उनके खेल की गुणवत्ता बढ़ाने की चुनौती बनी हुई है। यही कारण है कि पिछली सदी में जहां 100 मीटर दौड़ का रिकॉर्ड 10 सेकेंड से नीचे आ ही नहीं रहा था, वहीं पिछले चार दशकों में 100 मीटर की दौड़ में कम से कम 10 बार रिकॉर्ड टूटे हैं और आज धावकों की रफ्तार इतनी तेज है कि कभी कल्पना नहीं की जा सकती थी। प्लेयर्स ही नहीं, एक जमाने में जहां क्रिकेट का खेल अंपायर की आंखों और उसके जमीर के भरोसे रहता था, वहीं आज निर्णयों में तकनीक का इतना बारीक इस्तेमाल शुरू हो गया है कि चाहकर भी अंपायर गलत डिसीजन नहीं दे सकते।

लगातार हो रहा बदलाव

पिछली सदी में तकनीकी ने खेलों की दुनिया को बहुत जोरदार तरीके से बदला है। खेल तकनीक में अब भी लगातार सुधार हो रहा है। देखना दिलचस्प होगा कि आने वाले सालों में खेलों की दुनिया कितनी और बदलती है। *

लघुकथा / अशोक जोशी

वह रात !

पिछले दिनों शहर में हुई सांप्रदायिक हिंसा के बाद वैसे तो माहौल धीरे-धीरे सामान्य होने लगा था, लेकिन अफवाहें अभी फिजा में तैर रही थीं। अधिकांश शहर के साथ-साथ अनुप्रिया के क्षेत्र में भी रात का कर्फ्यू लगा हुआ था। सभी प्रार्थना कर रहे थे, 'हे ईश्वर, ये तनाव भरे दिन किसी तरह से कट जाएं।'

रक्षाबंधन का पर्व नजदीक था। अनुप्रिया की सबसे बड़ी चिंता यही थी, इस साल ना तो वह अपने मायके जाकर अपने भाइयों को राखी बांध पाएगी और ना ही उसके भैया यहां आकर राखी बंधवा पाएंगे। विवशता थी, कुछ किया भी नहीं जा सकता था। रात इसी उधेड़बुन के चलते अनुप्रिया सोने का प्रयास कर रही थी कि तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। वह घबरा गई, 'इतनी रात कौन होगा?' यह सोचकर उसके पसीना आने लगा। दरवाजे पर फिर दस्तक हुई। अनुप्रिया ने हिम्मत करके पूछा, 'कौन है?' 'सिक्योरिटी ऑफिसर रणजीत सिंह!' दरवाजे के उस पार से आवाज आई। हिम्मत कर अनुप्रिया ने दरवाजा खोला तो देखा पगड़ी पहने एक सुरक्षा अधिकारी खड़ा था। यह वही अधिकारी था, जिसने एक सप्ताह पहले उसके क्षेत्र में घर-घर जाकर सुरक्षा संबंधी जांच करके सभी लोगों को सुरक्षा का भरोसा दिलाया था। ऑफिसर सिंह ने नमस्कार कर पूछा, 'बहन जी, आप लोग कैसे हैं? कहीं कोई परेशानी तो नहीं है ना?'

'जी भाई साहब, आपके रहते परेशान कैसी, बस थोड़ा डर लगा रहता है।' अनुप्रिया अभी भी भीतर ही भीतर सहमी हुई थी।

'आप निश्चिंत हो जाएं। शहर तेजी से सामान्य हो रहा है। बस थोड़े दिनों में सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा।' सिक्योरिटी ऑफिसर सिंह ने कहा फिर आगे सकुचाते हुए बोले, 'बहनजी, यदि आपकी इजाजत हो तो एक बात कहूं।'

अनुप्रिया तुरंत बोली, 'जी कहिए..।' 'देखिए बहन जी, इस समय हमारी ड्यूटी ऐसी है कि मैं अपने घर नहीं जा सकता। हर साल मेरी बहन राखी बांधती है। इस साल उसने राखी यहीं भेज दी है। जांच के दौरान मैंने देखा था कि आपका परिवार एक सुसंस्कृत-संभ्रांत परिवार है। इसलिए मैं चाहता हूं कि यह राखी, रक्षाबंधन के दिन आप मुझे बांध देंगी क्या? मैं आ जाऊंगा।' कहते हुए रणजीत सिंह ने एक राखी वाला लिफाफा अनुप्रिया के हाथों में थमा दिया। 'जी... जी... क्यों नहीं। इस बार मैं भी अपने मायके नहीं जा पा रही हूं। आप रक्षाबंधन के दिन जरूर आइएगा, मैं इंतजार करूंगी।' अनुप्रिया आश्चर्य मिश्रित खुशी के साथ बोली। रणजीत सिंह के चेहरे पर भी मुस्कान खिल उठी थी। *

इंडस्ट्री के सबसे महंगे सिंगर थे किशोर दा

बेहतरीन गानों की बात हो या शानदार अभिनय की, इन दोनों ही मामलों में सिंगर किशोर कुमार का कोई तोड़ नहीं था। भले ही वह इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उनके द्वारा गाए गए गानों से वह आज भी लाखों दिलों पर राज करते हैं। बता दें कि आज ही के दिन यानी की 4 अगस्त को किशोर कुमार का जन्म हुआ था।

जन्म

ब्रिटिश इंडिया के खंडवा सेंट्रल प्रोविंस, जो अब मध्य प्रदेश का हिस्सा है। 4 अगस्त 1929 को किशोर कुमार का जन्म हुआ था। बता दें कि उनका असली नाम आभास कुमार गांगुली था। लेकिन फिल्मी दुनिया में कदम रखने के दौरान उन्होंने अपना नाम किशोर कुमार रख लिया था।

ऐसे रखा फिल्मी दुनिया में कदम

बता दें कि अपने जमाने के कई सदाबहार गीत गाने वाले किशोर कुमार सिनेमा की दुनिया में नहीं आना चाहते थे। लेकिन सदाबहार अभिनेता अशोक कुमार, जो रिश्ते में किशोर कुमार के सगे भाई थे। वह चाहते थे कि उनकी तरह किशोर कुमार भी एक्टिंग की दुनिया में अपने पैर जमाएं। लेकिन किशोर कुमार एक्टिंग के लिए गंभीर नहीं थे। इसी वजह से उन्होंने अपने कॅरियर की शुरूआत बतौर सिंगर की।

उन्होंने सबसे पहले फिल्म 'बॉम्बे टॉकीज' के लिए गाना गाया था। इसके अलावा अलावा साल 1946 में किशोर कुमार ने फिल्म 'शिकारी' से अपने एक्टिंग कॅरियर की शुरूआत की थी। इस फिल्म में किशोर कुमार के भाई और अभिनेता अशोक कुमार ने लीड रोल किया था।

फ्री में नहीं गाया कोई गाना

आपको जानकर हैरानी होगी कि किशोर कुमार ने अपने पूरे सिंगिग कॅरियर में कोई भी गाना फ्री में नहीं गाया। उनकी आवाज का जादू न सिर्फ लोगों बल्कि इंडस्ट्री में भी इस कदर कायम था कि वह गाना गाने से पहले ही एडवांस ले लेते थे। हालांकि अपने जमाने के अभिनेता राजेश खन्ना और डैनी डेंजोंगपा की फिल्मों का गाना गाने के दौरान किशोर कुमार इस नियम का पालन नहीं करते थे।

अवॉर्ड

किशोर कुमार ने अपने पूरे कॅरियर में करीब 16 हजार गाने गाए हैं। इस दौरान उनको 8 बार फिल्म फेयर अवॉर्ड से नवाजा गया। साल 1970 से 1987 के बीच वह सबसे महंगे सिंगर के तौर पर जाने जाते थे। बता दें कि उन्होंने अमिताभ बच्चन, राजेश खन्ना, जीतेन्द्र जैसे बड़े-बड़े दिग्गज कलाकारों को आवाज दी थी।

जब अमिताभ से नाराज हुए किशोर

बॉलीवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन के लिए किशोर कुमार ने 131 गाने गाए थे। जिसमें से 115 गाने सुपरहिट साबित हुए। लेकिन साल 1980 के बाद यह जोड़ी टूट गई। इस जोड़ी के टूटने के पीछे का कारण यह था कि किशोर कुमार ने अमिताभ बच्चन से उनकी फिल्म 'ममता की छांव में' गेस्ट अपीयरेंस के लिए कहा था। लेकिन अमिताभ ने ऐसा करने से मना कर दिया। जिसकी वजह से किशोर कुमार नाराज हो गए और फिर उन्होंने दोबारा कभी अमिताभ बच्चन के लिए गाना नहीं गाया।

पर्सनल लाइफ

किशोर कुमार की लव लाइफ किसी फिल्मी कहानी की तरह थी। उन्होंने ने चार शादियां की थीं। सबसे पहले उन्होंने रुमा देवी से शादी की थी। लेकिन अनबन के कारण यह रिश्ता ज्यादा समय तक नहीं चल सका। इसके बाद उन्होंने दूसरी शादी इंडस्ट्री की सबसे खूबसूरत एक्ट्रेस मधुबाला से की। मधुबाला से शादी के लिए किशोर कुमार ने अपना धर्म बदल लिया था। इस दौरान उन्होंने अपना नाम 'अब्दुल करीम' रखा था। लेकिन शादी के कुछ सालों बाद मधुबाला की मौत हो जाने पर किशोर दा ने साल 1976 में अभिनेत्री योगिता बाली से तीसरी शादी की। हालांकि यह शादी भी ज्यादा दिनों तक न चल सकी। दो साल के अंदर ही किशोर कुमार और योगिता बाली ने तलाक ले लिया। इसके बाद साल 1980 में किशोर दा ने खुद से 21 साल छोटी लीना चंद्रावरकर से शादी की।

मौतः इंडस्ट्री को तमाम सुपरहिट गाने देने वाले किशोर कुमार ने 18 अक्टूबर 1987 को सदा के लिए इस दुनिया को अलविदा कह दिया था। किशोर दा को दिल का दौरा पड़ने से उनकी मौत हो गई थी। जिसके बाद उन्हें उनकी मातृभूमि खंडवा में ही दफना दिया गया।

लघुकथा / इंद्रजीत कौशिक

गिफ्ट

हमेशा अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण होने वाला काव्य नौकरी की तलाश में थक कर चूर हो चुका था। हर जगह इंटरव्यू के नाम पर खानापूर्ति होती, क्योंकि सिफारिश के सामने कम योग्यता वाले कैंडिडेट चुन लिए जाते। असफलता का दंश काव्य को इस हद तक चुभा कि उसने तय कर लिया कि अब वह कोई नौकरी नहीं करेगा। कोई छोटा-मोटा बिजनेस शुरू करेगा।

'इस तरह हिम्मत हारने से काम नहीं चलेगा भैया। कम से कम इस बार तो तुम अपनी छोटी बहन के कहने पर इस कंपनी में ट्राई जरूर करो। मेरा मन कहता है कि यहां तुम्हें जॉब जरूर मिल जाएगी।'

काव्य से उसकी छोटी बहन सोनाली ने इस तरह कहा तो वह तुनक कर बोला, 'एक बात बताओ, तुम भविष्यवक्ता कब से हो गई? आखिर तुम्हारे इस यकीन की वजह क्या है?'

'भैया, मैं तुम्हारी इस जॉब के लिए अपने भगवान से विशेष रूप से प्रार्थना करूंगी। कम से कम इस बार तो मेरा मन रख लो।' सोनाली ने एक बार फिर आग्रह किया।

छोटी बहन ने इस तरह जोर देकर कहा तो काव्य ने उसकी बात मान ली।

आज रक्षाबंधन का दिन था। संयोग से इसी दिन काव्य के इंटरव्यू का परिणाम घोषित होना था। काव्य ने सोनाली से वादा किया था कि अगर उसे यह नौकरी मिल गई तो वह उसके लिए बहुत बड़ा गिफ्ट लेकर घर आएगा। सुबह से दोपहर हो गई पर अभी तक काव्य घर वापस नहीं लौटा था। सोनाली के दिल की धड़कनें तेज हो गई थीं, 'कहीं इस बार भी उसके भाई का सेलेक्शन नहीं हुआ तो क्या होगा?'

सोनाली यह सोचकर घबरा रही थी। तभी सामने से काव्य आता दिखाई दिया। उसका उतरा हुआ चेहरा और थकी हुई चाल देखकर सोनाली का कलेजा मुंह में आ गया। उसने आतुर होकर पूछा, 'क्या हुआ भैया?'

'वही हुआ, जैसा हर बार होता आया है। इस बार भी एक सिफारिशी का नाम फाइनल हुआ है।' काव्य नजरें नीची करके बोला। यह सुनकर सोनाली की उम्मीदों पर मानों पानी फिर गया।

एक पल रुक कर काव्य हंसते हुए बोला, 'रो मत पगली, इस बार वह खुशकिस्मत सिफारिशी कैंडिडेट मैं हूं। तुमने अपने भगवान से मेरी सिफारिश की तो भला वह इतनी प्यारी बहन की बात कैसे टालते? बस, मिल गई जॉब मुझे। दो दिन बाद ही ज्वाइन करना है।' यह कहते हुए काव्य ने अपनी बहन को गोद में उठा लिया।

'यू चीट.. माय गॉड! तुमने तो मुझे डरा ही दिया था। जॉब मिल गई तो अपनी बहन से किया वादा भूल गए? हैलो मिस्टर सक्सेसफुल, मेरा गिफ्ट कहां है?' सोनाली ने इठलाते हुए पूछा तो काव्य ने दरवाजे की तरफ इशारा किया, जहां उसका खास दोस्त रवि अपने हाथ में एक बड़ा-सा पैकेट पकड़े हुए खड़ा था।

अपने सहोदर काव्य का प्यार देखकर सोनाली की आंखें खुशी से भर आईं। *